ੴ सतिगुर प्रसादि ॥
गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

फाल्गुन-चेत, संवत् नानकशाही ५४८-४९
वर्ष १० अंक ७ मार्च 2017

संपादक : सतविंदर सिंघ फूलपुर
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ
गुरप्रीत सिंघ भोमा

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन : 0183-2553956-60
एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग 303 संपादकीय विभाग 304
फैक्स : 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

ISSN 2394-8485

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

गुरु सेवउ करि नमसकार ॥ आजु हमारै मंगलचार ॥
आजु हमारै महा अनंद ॥ चिंत लथी भेटे गोबिंद ॥१॥
आजु हमारै ग्रिहि बसंत ॥ गुन गाए प्रभ तुम्ह बेअंत ॥१॥ रहाउ ॥
आजु हमारै बने फाग ॥ प्रभ संगी मिलि खेलन लाग ॥
होली कीनी संत सेव ॥ रंगु लागा अति लाल देव ॥२॥
मनु तनु मउलिओ अति अनूप ॥ सूकै नाही छाव धूप ॥
सगली रूती हरिआ होइ ॥ सद बसंत गुर मिले देव ॥३॥
बिरखु जमिओ है पारजात ॥ फूल लगे फल रतन भांति ॥
त्रिपति अघाने हरि गुणह गाइ ॥ जन नानक हरि हरि हरि धिआइ ॥४॥१॥ *(पन्ना ११८०)*

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी महाराज बसंत राग के इस पावन शबद में मानव-हृदय एवं मन-अंतर तथा आत्मा में प्रभु-नाम का निवास हो जाने और इसके सद्प्रभाव के तौर पर इसमें सच्ची आत्मिक तृप्ति व आनंद का भावभीना व रसमय वर्णन बसंत ऋतु और फाल्गुन मास में खेली जाने वाली होली के प्रतीकों द्वारा करते हैं।

गुरु जी फरमान करते हैं कि मैं प्रभु से मिलाप करवाने वाले गुरु द्वारा मार्गदर्शन किये जाने पर गुरु अथवा परमात्मा को नमन करता हूं। प्रभु की स्तुति-गायन करने से (जबकि हृदय में प्रभु-नाम का निवास हो चुका है) मेरे हृदय, मेरे मन-अंतर में आनंद बन गया है। यह महाआनंद है जिसे मेरी आत्मा महसूस कर रही है। जब सतिगुरु ने प्रभु से मिलाप करवा दिया है तो सारा फिक्र दूर हो गया है।

गुरु जी कथन करते हैं कि आज तो मेरे हृदय रूपी घर में ही बसंत ऋतु बरत रही है। हे प्रभु! आप बेअंत हो। मैं आपके गुण गायन कर रहा हूं।

हे भाई! मुझ में तो आज फाल्गुन मास का उल्लासपूर्ण वातावरण बन गया है। मिलकर प्रभु-नाम जपने वाले साथी मानो होली खेल रहे हों। संत-जनों की सेवा अथवा सच्चे सतिगुरु की आदर्श आत्मिक अगुआई ने होली का माहौल बना दिया है। मन-आत्मा में प्रभु-नाम का गहरा लाल रंग चढ़ गया है। मन और तन दोनों खिल उठे हैं, अत्यंत सुंदर हो गए हैं। सांसारिक सुख और दुख, छाया और धूप दोनों का विकारी प्रभाव अब खत्म हो चुका है। सभी ऋतुओं में अब मन हरा-भरा हो रहा है क्योंकि गुरु ने सदैव रहने वाली बसंत बहार दे दी है।

गुरु जी फरमान करते हैं कि सभी मनोकामनाएं तृप्त करने वाला वृक्ष साकार हो गया है, जिस पर भांति-भांति के फूल और फल दृष्टव्य हो रहे हैं। तृप्ति हो गई है। प्रभु-नाम का गायन करने से अब कोई सांसारिक भूख अथवा इच्छा नहीं रह गई। परमात्मा को स्मरण करने का लाभ उसके जन को मिल जाता है।

संपादकीय

माताएं धार्मिक आदर्शों की पथ-प्रदर्शक बनें

वर्तमान में हम अगर अपने इर्द-गिर्द की तरफ दृष्टि डालें तो आज हमें गुरु साहिबान की आकांक्षाओं वाले आदर्श समाज की अनुपस्थिति ही नज़र आती है। इस सामाजिक निघार (अधोगति) ने मानवता के नैतिक स्तर को बहुत ही निम्न कर दिया है। ऐसी दशा में धर्मी समाज की सृजना ही सभी सामाजिक बुराइयों का सार्थक समाधान हो सकती है। धर्म के प्रचार-पसार के लिए जहां धार्मिक संस्थाएं, प्रचारक, कथावाचक आदि अपना-अपना योगदान डाल रहे हैं, वहीं हमारी माताएं इस कार्य में सबसे अहम भूमिका निभा सकती हैं। यदि हम गुरमति के अनुसार आदर्श धर्मी समाज की सृजना करना चाहते हैं तो सबसे पहले गुरमति की रौशनी में बचपन को संवारना होगा, जिस तरह फसल बोते समय पनीरी (बिहन) का विशेष रूप में पालन-पोषण किया जाता है क्योंकि यदि पनीरी सेहतमंद व आरोग्य होगी तबी बढ़िया फसल की आशा की जा सकती है। इसी तरह बच्चे समाज की पनीरी हैं और यदि गुरबाणी की खुराक व धार्मिक संस्कारों की बाड़ देकर बच्चों की परवरिश की जाए तो भविष्य में धर्मी समाज की सृजना संभव हो सकती है। यह कार्य माताएं ही कर सकती हैं। मां को बच्चे का प्रथम अध्यापक माना जाता है। बच्चे की शख़्सियत माताओं द्वारा बचपन में दिए गए संस्कारों पर निर्भर करती है। मनोविज्ञानी भी यह बात मानते हैं कि बचपन में दिए गए संस्कारों का असर चिरकाल तक रहता है। हम जब पुरातन सिक्खों के ऊंची-सुच्ची आदर्श भूमिका की ओर दृष्टि डालते हैं तो तुलनात्मक स्तर पर आज हमारी भूमिका के मुकाबले भारी अंतर नज़र आता है। अब अगर हम इस अंतर के कारणों को तलाशने का प्रयत्न करें तो इसके पीछे पुरातन माताओं की अपनी गुरसिक्खी जीवन वाली भूमिका तथा अपने बच्चों को दी जाती गुरमति की शिक्षा मुख्य कारण नज़र आएगी।

पुरातन माताएं अमृत बेला उठकर, स्नान कर जब दूध बिलोने, आटा गूंथने लगती थीं तो गुरबाणी का पाठ आरंभ कर लेतीं तथा प्रशादा-पानी तैयार करते समय नित्तनेम सम्पूर्ण कर लेती थीं। इस तरह दही, लस्सी, मक्खन में सुखमनी साहिब की बाणी का अमृत घुल जाता, आटे में जपु बाणी का रस गूंथा जाता। पूरी रसोई अमृतमयी बन जाती थी। ऐसा अमृतमयी भोजन छककर पूरे परिवार की रगों में धर्म की लहर चल पड़ती। ऐसे गुरबाणी के रस से भरपूर परिवारों वाला समाज गुरु साहिबान के आश्यों वाला धर्मी समाज बन जाता है। ऐसे समाज में परिश्रम की किरत (कमाई) को सत्कारा जाता था, पाप की कमाई को गुरबाणी की पंक्ति *"उसु सूअर उसु गाइ"* के अनुसार हराम समझा जाता था। पुरातन माताएं जब अपने बच्चों को गोद में लेकर नाम-बाणी की शिक्षा देतीं तो ऐसी परवरिश पाकर ऊंचे आचरण वाले, नाम रसीए सिक्ख समाज में आदर्श मिसाल बनकर विचरण करते। इन धर्मी माताओं की धर्मी परवरिश के सदका ही धर्म हेतु शीश देने वाले, बंद-बंद कटवाने वाले, खोपड़ियां उतरवाने वाले, चरखड़ियों पर चढ़ने वाले, आरों से चीरे जाने वाले, सिक्खी केशों-स्वासों के संग निभाने वाले धर्मी जांबाज़ सिंघ नित्य की

अरदास में याद किए जाते हैं।

आज यदि गुरु साहिबान के आदर्शों वाला समाज सृजित करना है तो आधुनिक माताओं को बीबी भानी जी वाले उच्च आदर्श की धारणी होकर गुरु साहिबान के वारिसों, अपने पुत्रों को ये आशीषें देनी पड़ेगीं कि हे पुत्र! तुझे मां की यह आशीष है-- तुझे परमात्मा आंख झपकने जिनते समय के लिए भी न भूले, तू जगत के मालिक प्रभु का नाम स्मरण करता रहे। . . . हे पुत्र! सतिगुरु तुम पर दयावान रहे, गुरु के साथ तेरा प्यार बना रहे। . . . हे पुत्र! आत्मिक जीवन देने वाला नाम-जल सदा पीते रहो, सदा के लिए तेरा ऊंचा आत्मिक जीवन बना रहे। अगर बचपन में ही बच्चों के गिर्द ऐसी आशीषों का चौगिर्दा सृजित किया जाए तो यकीनन बच्चे बड़े होकर गुरमति रहणी के धारणी, गुरु-घर के प्रेमी तथा ऊंचे आदर्शों के मालिक बनेंगे।

हमें ज़रूरत है कि सिक्ख माताएं सिक्खी के प्रचार तथा आदर्श समाज की घाड़त (गढ़त) के लिए एक लहर बनकर सामने आएं। खुद माता भागो जी, बीबी भानी जी की वारिस बनकर अपने बच्चों को अपनी अमीर गुरमति विरासत के साथ जोड़ें। जिन बच्चों को माताएं अपनी गोद में लेकर गुरबाणी पढ़ें, ऊंचे आचरण की शिक्षा दें, साहिबज़ादों की शहादतों के साके सुनाएं, भाई मनी सिंघ, भाई तारू सिंघ जी आदि की लासानी शहादतों का इतिहास सुनाएं तो बड़े होकर इन बच्चों के सिरों पर कैंचियां नहीं चल सकतीं। ऐसी परवरिश पाकर ये बच्चे नशा, भ्रूण हत्या दहेज प्रथा, फैशनप्रस्ती आदि जैसी अनेकों अलामतों व सामाजिक बुराइयों से मुक्त आदर्श समाज की सृजना करने के समर्थ हो सकते हैं। आज समाज में प्रचलित अशिष्टता में से निकालकर बच्चों को साहिबज़ादों के वारिस बनाना माताओं के हाथ में है। माताएं ही अपने बच्चें का गुरसिक्खी जीवन बनाने हेतु समर्थ हैं।

जिसु सिमरत सभि किलविख नासहि पितरी होइ उधारो ॥
सो हरि हरि तुम्ह सद ही जापहु जा का अंतु न पारो ॥१॥
पूता माता की आसीस ॥
निमख न बिसरउ तुम्ह कउ हरि हरि सदा भजहु जगदीस ॥१॥ रहाउ ॥
सतिगुरु तुम्ह कउ होइ दइआला संतसंगि तेरी प्रीति ॥
कापड़ु पति परमेसरु राखी भोजनु कीरतनु नीति ॥२॥
अंम्रितु पीवहु सदा चिरु जीवहु हरि सिमरत अनद अनंता ॥
रंग तमासा पूरन आसा कबहि न बिआपै चिंता ॥३॥
भवरु तुम्हारा इहु मनु होवउ हरि चरणा होहु कउला ॥
नानक दासु उन संगि लपटाइओ जिउ बूंदहि चात्रिकु मउला ॥४॥
(पन्ना ४९६)

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जीवन-मुक्त का संकल्प

*-डॉ. परमजीत कौर**

धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष चार पदार्थों का जीवन में बहुत महत्त्व है। श्री गुरु अरजन देव जी का पावन कथन है :

चारि पदारथ जे को मागै ॥
साध जना की सेवा लागै ॥ *(पन्ना २६६)*

किंतु मोक्ष की प्राप्ति को जीवन का लक्ष्य माना गया है। श्री गुरु तेग बहादर साहिब संकेत कर रहे हैं कि मानव-जीवन बार-बार प्राप्त नहीं होता, इस लिए मुक्ति का कोई उपाय करना चाहिए :

मानस देह बहुरि नह पावै कछू उपाउ मुकति का करु रे ॥
नानक कहत गाइ करुना मै भव सागर कै पारि उतरु रे ॥ *(पन्ना २२०)*

मुक्ति या मोक्ष क्या है? भाई कान्ह सिंघ नाभा के मत में-- 'भ्रम मूलक रस्मों तथा अज्ञान काल्पित बंधनों से छुटकारे का नाम मुक्ति है, जिसकी प्राप्ति गुरु के उपदेश के विचार से सत्य ज्ञान होती है।" (गुरमति मार्तण्ड भाग २ पृष्ठ ७७६)

उपनिषदों के अनुसार जन्म-मरण तथा उसके मूल-कर्म बंधनों अविद्या से छुटकारा मोक्ष है। आत्मा का निजी स्वरूप में रहना ही मोक्ष है।

वेदांत के अनुसार जब विद्या रूपी अग्नि से कर्म बीज नष्ट हो जाते हैं तब मोक्ष प्राप्त होता है। महाभारत के अनुसार आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक दुखों से निवृत्ति ही मोक्ष है। मोक्ष के बिना जन्म-मरण के कष्टों से छुटकारा नहीं मिलता।

गुरमति में जीवन मुक्त के संकल्प को दृढ़ करवाया गया है। गुरु साहिबान के अनुसार जिस मनुष्य के मन में परमात्मा का नाम बस जाता है, जो गुरु-शबद के अनुसार जीवन-यापन करता है, गृहस्थ में रहता हुआ भी निर्लिप्त रहता है। आत्मिक स्थिरता में टिककर प्रभु के नाम के साथ जुड़ा रहता है, वह जीवन मुक्त है :

--गहिर गंभीर अंम्रित नामु तेरा ॥
मुकति भइआ जिसु रिदै वसेरा ॥ (पन्ना १०१)
--जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥
(पन्ना २९४)
--सो जनु मुकतु जिसु एक लिव लागी सदा रहै हरि नाले ॥ *(पन्ना ७९६)*

श्री गुरु नानक देव जी समझा रहे हैं कि लोग धर्म-कर्म करके मुक्ति मांगते हैं परंतु मुक्ति देने वाला नाम-पदार्थ गुरु के शबद के द्वारा परमात्मा का गुण-कीर्तन करने से मिलता है :

करम धरम करि मुकति मंगाही ॥
मुकति पदारथु सबदि सलाही ॥
बिनु गुर सबदै मुकति न होई परपंचु करि भरमाई हे ॥ *(पन्ना १०२३)*

जो जीव गुरु-शबद को हृदय में बसाकर अपने आत्मिक जीवन को परखता रहता है उसकी बुद्धि श्रेष्ठ हो जाती है :

आपु पछाणै मनु निरमलु होइ ॥
जीवन मुकति हरि पावै सोइ ॥

**६२०, गली नं. २, छोटी लाइन, संतपुरा, यमुनानगर- १३५००१ (हरियाणा); फोन : ९८१२३-५८१८६*

हरि गुण गावै मति ऊतम होइ ॥
सहजे सहजि समावै सोइ ॥ *(पन्ना १६१)*

अपने अंदर से आपा भाव त्याग देता है :

मुकति दुआरा सोई पाए जि विचहु आपु गवाइ ॥
(पन्ना १२७६)

जीवन मुक्त अपने अंदर से माया के तीन गुणों का प्रभाव मिटाकर पवित्र आत्मा वाला बन जाता है। अपने अंदर से मेर-तेर के भेदभाव को निकाल देता है :

--दासनि दास नित होवहि दासु ॥
ग्रिह कुटंब महि सदा उदासु ॥
जीवन मुकतु गुरमुखि को होई ॥
परम पदारथु पावै सोई ॥ *(पन्ना २३२)*
--जो इसु मारे सु जीवन मुकता ॥
जो इसु मारे तिस की निरमल जुगता ॥
(पन्ना २३८)

ऐसा जीव आत्मिक जीवन जीता हुआ तथा सांसारिक कार्य-व्यवहार करता हुआ भी माया के बंधनों से आज़ाद रहता है :

--जीवन मुकति सो आखीऐ मरि जीवै मरीआ ॥
जन नानक सतिगुरु मेलि हरि जगु दुतरु तरीआ ॥
(पन्ना ४४९)
--नानक सतिगुरि भेटिऐ पूरी होवै जुगति ॥
हसंदिआ खेलंदिआ पैनंदिआ खावंदिआ विचे होवै मुकति ॥ *(पन्ना ५२२)*

जीवन मुक्त अवस्था को प्राप्त मनुष्य का अहंकार नष्ट हो जाता है। अपने अलग अस्तित्व के होने का अभिमान मिट जाता है :

जीवन मुकति गुर सबदु कमाए ॥
हरि सिउ सद ही रहै समाए ॥
गुर किरपा ते मिलै वडिआई हउमै रोगु न ताहा हे ॥ *(पन्ना १०५८)*

श्री गुरु नानक देव जी विस्तारपूर्वक समझा रहे हैं कि ऐसे मनुष्य की सुरति सेवा की ओर लग जाती है। अपने अंदर से हउमै नष्ट करके मानो जप, तप तथा संयम अर्जित कर लेता है। उसकी जीवन विधि ऐसी हो जाती है कि वह माया के कारण भटकता नहीं। माया के प्रभाव से मुक्त होकर प्रभु-प्रेम में टिक कर सिमरन करता हुआ सदा प्रसन्नचित्त रहता है :

--सेवा सुरति सबदि वीचारि ॥
जपु तपु संजमु हउमै मारि ॥
जीवन मुकतु जा सबदु सुणाए ॥
सची रहत सचा सुखु पाए ॥ *(पन्ना १३४३)*
--मुकतो रातउ रंगि रवांतउ ॥
राजन राजि सदा बिगसांतउ ॥ *(पन्ना ३५२)*

मधुर-स्वभाव, संतोष, विनम्रता, आदि गुणों को धारण करने से गृहस्थ में रहते हुए दूसरों के साथ सहनशीलता का व्यवहार करता है। ऐसे जीव विकारों के दुष्प्रभाव से रहित होते हैं। उनको घर-बाहर, पशु, पक्षी, वृक्ष आदि प्रत्येक जीव में प्रत्येक स्थान पर परमात्मा दिखाई देता है :

खिमा गही ब्रतु सील संतोखं ॥
रोगु न बिआपै ना जम दोखं ॥
मुकत भए प्रभ रूप न रेखं ॥१॥
जोगी कउ कैसा डरु होइ ॥
रूखि बिरखि ग्रिहि बाहरि सोइ ॥ *(पन्ना २२३)*

ऐसे मनुष्य अपने अंदर प्रकट हुए ब्रह्म-तेज की अग्नि से मौत के डर को जला देते हैं :

कालु जालु ब्रहम अगनी जारे ॥
जरा मरण गतु गरबु निवारे ॥
आपि तरै पितरी निसतारे ॥ *(पन्ना २२३)*

जीवन मुक्त हर्ष-शोक दोनों भावनाओं से स्वतंत्र होकर विचरण करते हैं। सब के साथ प्रेम का व्यवहार करते हुए भी सबसे अलग

(मोह रहित) दिखाई देते हैं :

हरख सोग दुहहूं ते मुकते ॥
सदा अलिपतु जोग अरु जुगते ॥
दीसहि सभ महि सभ ते रहते ॥
पारब्रहम का ओइ धिआनु धरते ॥ (पन्ना १८१)

प्रभु की रज़ा को मन में मीठी करके मानते हैं। परमात्मा के प्रेम-रंग में रंगे होने के कारण अमृत-विष, दुख-सुख, सोना-मिट्टी, आदर-अनादर, अमीरी-गरीबी, लाभ-हानि उन्हें एक से प्रतीत होते हैं। उनके मन में साधारण जीवों वाले फुरने पैदा नहीं होते। वे अच्छी जीवन-युक्ति वाले बन जाते हैं। श्री गुरु अरजन देव जी का पावन फरमान है :

प्रभ की आगिआ आतम हितावै ॥
जीवन मुकति सोऊ कहावै ॥
तैसा हरखु तैसा उसु सोगु ॥
सदा अनंदु तह नही बिओगु ॥
तैसा सुवरनु तैसी उसु माटी ॥
तैसा अंम्रितु तैसी बिखु खाटी ॥
तैसा मानु तैसा अभिमानु ॥
तैसा रंकु तैसा राजानु ॥
जो वरताए साई जुगति ॥
नानक ओहु पुरखु कहीऐ जीवन मुकति ॥
(पन्ना २७५)

श्री गुरु तेग बहादर साहिब का पावन कथन है :

सुरग नरक अंम्रित बिखु ए सभ तिउ कंचन अरु पैसा ॥
उसतति निंदा ए सम जा कै लोभु मोहु फुनि तैसा ॥
दुखु सुखु ए बाधे जिह नाहनि तिह तुम जानउ गिआनी ॥
नानक मुकति ताहि तुम मानउ इह बिधि को जो प्रानी ॥ (पन्ना २२०)

जीवन मुक्त परमात्मा की रज़ा में चलते हुए प्रभु में इस प्रकार लीन रहते हैं जैसे नदी की लहरें नदी के जल के साथ, हवा हवा के साथ तथा पानी समुद्र के जल के साथ मिलकर एक रूप हो जाता है। जैसे सूर्य के किरणों के संपर्क में आकर बर्फ से पानी बन जाता है। पानी की कठोरता समाप्त हो जाती है वैसे ही नाम की बरकत से जीव के अंदर की कठोरता समाप्त हो जाती है। जीव अपने अंदर परमात्मा की ज्योति को प्रकट कर लेता है, वह परमात्मा का रूप हो जाता है, यही मुक्ति है।

मुक्ति मन की अवस्था है। आत्मिक स्थिरता में रहते हुए विचरण करना ही मुक्ति है। ऐसे जीवों पर पाप-पुण्य का कोई प्रभाव नहीं पड़ता क्योंकि वे अफुर अवस्था में रहते हैं :

अंतरि सुंनं बाहरि सुंनं त्रिभवण सुंन मसुंन ॥
चउथे सुंनै जो नरु जाणै ता कउ पापु न पुंनं ॥
(पन्ना ९४३)

भाई गुरदास जी जीवन मुक्त की अवस्था का वर्णन करते हुए बताते हैं-- जीवन मुक्त उनको कहा जाता है जो माया की तरफ से मरकर प्रभु-प्रेम में जीवित हो गए तथा प्रभु-प्रेम में डूबकर माया में डूबने से बच गए। जिन्होंने गुरु के शबद सुरति की समाधि में मग्न होकर अमृत पान करके अहंकार को मिटा दिया है। अनहद-नाद उनमें प्रविष्ट हो गया है। निरंतर अमृत बाणी का प्रवाह चलता रहता है। फलस्वरूप वे करण कारण समर्थ 'वाहिगुरु' जैसे हो जाते हैं। जो करना चाहें कर सकते हैं परंतु स्वयं कुछ कारण नहीं बनाते, प्रभु के भाणे को मानते हैं। पतितों का उद्धार करते हैं। जिसको कोई शरण न दे सके उनको शरण देकर मुक्त कर देते हैं :

जीवन मुकति वखाणीऐ, मरि मरि जीवणु डुबि

डुबि तरणा ॥
सबदु सुरति लिवलीणु होइ, अपिअ पीअणु तै अउचर चरणा ॥
अनहद नाद अवेस करि, अंम्रितवाणी निझरु झरणा ॥
करण कारण समरथु होइ, कारणु करणु न कारणु करणा ॥
पतित उधारण असरण सरणा ॥ (पउड़ी १८:१८)

जब मनुष्य जीवन-मुक्त की अवस्था पर पहुंचता है तब नाम की बरकत से उसके सारे पाप-पुण्य के फल समाप्त हो जाते हैं। परमात्मा जिनको अपने चरणों के साथ जोड़ता है, उनका पीछे किए हुए कर्मों को लेखा समाप्त हो जाता है। गुरु वाक्य है :

जिन कउ तू हरि मेलहि सुआमी सभु तिन का लेखा छुटकि गइआ ॥
तिन की गणत न करिअहु को भाई जो गुर बचनी हरि मेलि लइआ ॥ (पन्ना ११५)

यहां प्रश्न यह उठता है कि ऐसा मनुष्य किस लिए जीवित रहता है? ऐसा मनुष्य दूसरों का ज़िंदगी का सही रास्ता बताता है तथा उनको मुक्त करवाता है :

--आपि मुकतु संगी तरे कुल कुटंब उधारे ॥
(पन्ना ८१४)

--ओहु धनवंतु कुलवंतु पतिवंतु ॥
जीवन मुकति जिसु रिदै भगवंतु ॥
धंनु धंनु धंनु जनु आइआ ॥
जिसु प्रसादि सभु जगतु तराइआ ॥
जन आवन का इहै सुआउ ॥
जन कै संगि चिति आवै नाउ ॥
आपि मुकतु मुकतु करै संसारु ॥
नानक तिसु जन कउ सदा नमसकारु ॥
(पन्ना २९४)

ऐसे मनुष्यों की संगत करने वाले जन भी पवित्र जीवन वाले हो जाते हैं :

सो मुकता संसारि जि गुरि उपदेसिआ ॥
तिस की गई बलाइ मिटे अंदेसिआ ॥
तिस का दरसनु देखि जगतु निहालु होइ ॥
जन कै संगि निहालु पापा मैलु धोइ ॥
(पन्ना ५१९)

संक्षेप में कह सकते हैं कि नाम की बरकत से जब नौ गोलकें पूर्णत: भर जाती हैं, दसवें द्वार अर्थात् प्रभु-मिलाप की अवस्था में आ जाती हैं। जब मनुष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह एवं अहंकार रूप पांच शत्रुओं को वश में कर लेता है। जब नाम की बरकत से मायिक पदार्थों की दौड़ समाप्त हो जाती है तथा गुरु-शबद के अनुसार जीवन यापन करने का तरीका आ जाता है तब गुरमुखों के अंदर नाम के बिना अन्य कोई विचार पैदा नहीं होता। इस अवस्था में पहुंचे हुए गुरमुख प्रभु को अंग-संग देखते हैं तथा अपने अंदर परमात्मा के अस्तित्व को पहचान लेते हैं। ऐसे मनुष्य ही जीवन-मुक्त कहलाते हैं।



होला महल्ला श्री अनंदपुर साहिब का

*-स. मनजीत सिंघ**

श्री अनंदपुर साहिब का होला अथवा "खालसे का होला महल्ला" शब्द जुबान पर आते, विचारते और कानों में पड़ते ही एक बार वीर-रस का वातावरण अपने आप छा जाता है। कभी श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी महाराज द्वारा उच्चरित वीर-रसी बाणी दिलो-दिमाग पर घर करती हुई कई विलक्षण वीर-योद्धे समक्ष कतार में खड़े कर देती है, जिन्होंने गुरु जी के एक-एक शब्द को कंठ किया बल्कि अपने आप पर अज़माया भी। उनके लिए अपने गुरु का हर वचन एक आदेश था, जिसके लिए उन्होंने सिक्ख धर्म की रक्षा करते हुए अपने आप को न्यौछावर कर दिया। ऐसे वीर योद्धाओं में से बाबा दीप सिंघ, बाबा गुरबख़्श सिंघ, नवाब कपूर सिंघ, स. जस्सा सिंघ आहलूवालिया और भाई जस्सा सिंघ रामगढ़िया के नाम विशेष रूप में वर्णनयोग्य हैं। अकाली फूला सिंघ, सरदार शाम सिंघ अटारी वाले और सरदार हरी सिंघ नलूआ को भी इसी कतार में शामिल किया जा सकता है।

'होला' वास्तव में अरबी भाषा का शब्द है और 'महल्ला' फारसी भाषा का। 'होला' के अर्थ हैं 'हमला' एवं 'महल्ला' के 'जाइ हमला'। 'होली' विशेष रूप में हमारे भारत का मौसमी त्योहार ही है और फाल्गुन के महीने मनाया जाने के कारण इसको 'फाग' भी कहा जाता है। समय के साथ इस मौसमी त्योहार के साथ कई ऐतिहासिक-मिथिहासिक किस्से जुड़ गए, जिसके कारण इस को बहुपक्षीय महत्ता प्रदान हो गई।

पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने बसंत राग में होली के बारे में निम्नलिखित के अनुसार वर्णन किया है :

गुरु सेवउ करि नमसकार ॥
आजु हमारै मंगलचार ॥
आजु हमारै महा अनंद ॥
चिंत लथी भेटे गोबिंद ॥१॥
आजु हमारै ग्रिहि बसंत ॥
गुन गाए प्रभ तुम्ह बेअंत ॥१॥ रहाउ ॥
आजु हमारै बने फाग ॥
प्रभ संगी मिलि खेलन लाग ॥
होली कीनी संत सेव ॥ ॥
रंगु लागा अति लाल देव ॥२॥
मनु तनु मउलिओ अति अनूप ॥
सूकै नाही छाव धूप ॥
सगली रूती हरिआ होइ ॥
सद बसंत गुर मिले देव ॥३॥
बिरखु जमिओ है पारजात ॥
फूल लगे फल रतन भांति ॥
त्रिपति अघाने हरि गुणह गाइ ॥
जन नानक हरि हरि हरि धिआइ ॥४॥

(पन्ना ११८०)

अर्थात् परमात्मा की सिफति-सालाह की बरकत से मेरे अंदर मानो फाल्गुन की होली बनी हुई है। प्रभु के संत-जन साधसंगत में मिलकर यह होली खेलने लग पड़े हैं। हे भाई! यह होली क्या है? मैंने साधसंगत की सेवा को होली बनाया है। साधसंगत की बरकत से मेरे

**५६८२, सेक्टर ३८ वेस्ट, चंडीगढ़।*

अंदर परमात्मा के प्यार का गहन आत्मिक रंग चढ़ गया है।

भक्त नामदेव जी ने भक्त प्रहिलाद द्वारा परमात्मा को रक्षार्थ हेतु की गयी बिनती को अपनी बाणी में ऐसे ब्यान किया है :

बसुधा बसि कीनी सभ राजे बिनती करै पटरानी ॥
पूतु प्रहिलादु कहिआ नही मानै तिनि तउ अउरै ठानी ॥२॥
दुसट सभा मिलि मंतर उपाइआ करसह अउध घनेरी ॥
गिरि तर जलु जुआला भै राखिओ राजा रामि माइआ फेरी ॥३॥
काढि खड़गु कालु भै कोपिओ मोहि बताउ जु तुहि राखै ॥
पीत पीतांबर त्रिभवण धणी थंभ माहि हरि भाखै ॥४॥
हरनाखसु जिनि नखह बिदारिओ सुरि नर कीए सनाथा ॥
कहि नामदेउ हम नरहरि धिआवह रामु अभै पद दाता ॥५॥ *(पन्ना १४६५)*

श्री गुरु अमरदास जी ने भी इसी घटना के बारे में इस प्रकार फरमान किया है :

दुसट सभा महि मंत्रु पकाइआ ॥
प्रहलाद का राखा होइ रघुराइआ ॥३॥
हाथि खड़गु करि धाइआ अति अहंकारि ॥
हरि तेरा कहा तुझु लए उबारि ॥
खिन महि भैआन रूपु निकसिआ थंम्ह उपाड़ि ॥
हरणाखसु नखी बिदारिआ प्रहलादु लीआ उबारि ॥४॥
संत जना के हरि जीउ कारज सवारे ॥
प्रहलाद जन के इकीह कुल उधारे ॥
गुर कै सबदि हउमै बिखु मारे ॥
नानक राम नामि संत निसतारे ॥५॥
(पन्ना ११३३)

प्रत्येक वर्ष चेत वदी एक को दुनिया भर में गुरु के सिंघों का श्री अनंदपुर साहिब की तरफ सिक्ख जत्थों के विलक्षण और आलौकिक दृश्य इसकी धीमी हुई गति को फिर गतीशील रूप में ले आते हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने होली को होला बनाकर नई ऋतु आने का पैगाम दबी-कुचली जनमानस को दिया, जिनको सदियों को पंडित-पुजारियों ने शूद्र बनाकर बराबर नहीं खड़ा होने दिया था। इस वर्ण-भेद पर गहरी चोट मारने के लिए गुरु साहिब ने होले को एक हथियारों को चलाने का दिन ऐलान किया। जब कि होली का दिन एक गंद-मंद फेंकने से ऊपर नहीं उठ सका।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने होले की महत्ता कायम रखने के लिए जनमानस को यकीन दिलाया कि आज भी परमात्मा उसी तरह राखी कर सकता है जैसे होली के दिन भक्त प्रहिलाद की की थी, सिर्फ सच्चे मन से पुकारने की ज़रूरत है। लोगों को सब से पहले यही दर्शाने की ज़रूरत थी कि हमला किस समय और किस जगह करना है। यदि किसी को इसकी समझ आ जाए तो आधी जंग जीती गई समझो। होला 'हूल' से बना कहा जाता है। हूल के अर्थ तलवार की नोक भी हैं। भले काम के लिए जूझना, कृपाण की नोंक (धार) पर चलना ही है। संत एवं सिपाही दोनों ही कृपाण की धार पर चलते हैं। होला भट्ठी में पक गए को भी कहते हैं। होला भट्ठी में डालकर लोगों को दृढ़ चित्त करके पकाना ही था।

होले के दिन गुरु जी फौजों की दो टुकड़ियां (दल) बनाकर जंग-अभ्यास करवाते और तलवारबाज़ों एवं जंगबाज़ों के कर्त्तव्य फौजों को दिखाते हैं। जीतने वाली फौजी-टुकड़ी के सिंघों को सिरोपाउ देते। होला-महल्ला नौजवानों

द्वारा जवानियां भेंट करने का दिन भी बन गया। होले महल्ले का मुख्य लक्ष्य था श्रद्धालुयों को फौजी सिखलाई करवानी।

महान कोश के कर्त्ता भाई कान्ह सिंघ नाभा के मुताबिक :

"होला महल्ला हमला और जाय हमला, हल्ला और हल्ले की जगह, श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के खालसे को शस्त्र और युद्ध-विद्या में निपुण करने के लिए यह रीति चलाई थी कि दो दल बनाकर मुख्य सिंघों के नेतृत्व में एक खास जगह पर कब्ज़ा करने हेतु हमला करना। कलगीधर पिता जी इस मसनूई (बनावटी) युद्ध का नज़ारा देखते और दोनों दलों को शुभ शिक्षा देते थे और जो दल कामयाब होता उसको दीवान में सिरोपाउ बख़्शिश करते।"

शूरवीरता, निडरता तथा चढ़दी कला के इस प्रवाह को सदीवता प्रदान करने के लिए खालसे की सृजना से केवल एक वर्ष बाद दसमेश पिता जी ने होलगढ़ नामक किला बनाकर संवत् १७५७ चेत वदी एक को होला महल्ला खेलने की रीति आरंभ कर दी। 'होले महल्ले' के जलूस को महल्ला निकालना अथवा महल्ला चढ़ना भी कहा जाता है।

रिवायत के अनुसार पहले तीन दिन श्री कीरतपुर साहिब दीवान लगते हैं तथा गुरुद्वारा साहिबान की यात्रा की जाती है। उसके बाद संगत श्री अनंदपुर साहिब एकत्र होती है और दो दिन दीवानों में कथा-कीर्तन तथा व्याख्यान का आनंद लेती हैं। गुरुद्वारा प्रबंध द्वारा लाखों यात्रियों की रिहायश एवं लंगर का प्रबंध अच्छे ढंग के किया जाता है। आने-जाने, पानी, बिजली, सफाई और डाक्टरी सुविधाओं का बहुत अच्छा प्रबंध होता है।

अंतिम दिन बाद दोपहर पांच प्यारे साहिबान तख़्त श्री केसगढ़ साहिब 'महल्ले' का अरदासा कर संगत सहित किला अनंदगढ़ साहिब पहुंचते हैं और वहां निहंग सिंघों के सभी जत्थे नीले और पीले वस्त्रों में पूरी तरह शस्त्रों से लैस हो हाथी और घोड़ों पर सवार होकर जैकारे गुंजाते एक अद्वितीय उत्साह से नगाड़े की चोटें लगाते हुए वीर-रस में मार्च निकालते हैं। खालसई शान और आलौकिक नज़ारे दर्शाते और संगत में नया जोश और जागरूकता भरता यह जलूस किला लोहगढ़ एवं माता जीतो जी के देहुरे की यात्रा करता हुआ चरण गंगा के खुले रेतले मैदान में पहुंच जाता है। इस मैदान में घोड़-दौड़, नेजाबाज़ी, गतका और शस्त्र-विद्या के कई विलक्षण कर्त्तव्य दिखाए जाते हैं। शाम को गुरु के महिल, गुरुद्वारा भोरा साहिब, थड़ा साहिब, गुरुद्वारा दमदमा साहिब और गुरुद्वारा शीश गंज साहिब की यात्रा करते हुए तख़्त श्री केसगढ़ साहिब पहुंच कर होले-महल्ले की समाप्ति का अरदासा किया जाता है।

इस तरह खालसे का होला-महल्ला बीर-रसी रिवायतों का प्रतीक है और हमें हर वर्ष दृढ़-विश्वासी, प्रभु-भक्ति और ऊंचे-शुद्ध मानवीय आदर्शों के लिए जुल्म, ज़ब्र, नासतिकता व भ्रष्टाचार के विरुध जूझने के लिए नया जोश व जागरूकता प्रदान करता है। एक सिंघ को अपने आदर्श याद रखने और दूसरों को याद करवाने का मौका भी देता है। यह निहंग सिंघों का त्योहार है जिसके लिए प्रचार की ज़रूरत है। वाहिगुरु करे प्रत्येक सिक्ख इससे प्रभावित होकर अपनी पुरातन चली आ रही रीति पर कायम हो जाए एवं सभी संसार में विलक्षण पहचान कायम रखते हुए अद्वितीय मिसाल पैदा कर सके।

भाई मरदाना जी

-डॉ. रूप सिंघ*

भाई साहिब भाई मरदाना जी का जन्म, जगत गुरु, श्री गुरु नानक देव जी के प्रकट स्थान तलवंडी राइ भोइ में संवत् १५१६ बिक्रमी में हुआ। भाई साहिब गुरु नानक साहिब का अगमी स्पर्श प्राप्त करते, जन्म-मृत्यु से मुक्त हुए। भाई साहिब जी ने अंतिम सांस श्री गुरु नानक देव जी के पावन हाथों में १३ मार्गशीर्ष, संवत् १५९१ मुताबिक ११ नवंबर, १५३४ ई. अफ़गानिस्तान के कुरम नगर में लिए। अंतिम संस्कार आदि-गुरु श्री गुरु नानक देव जी ने अपने हाथों से किया। हम यहां भाई साहिब के सांसारिक जीवन के बारे कम और प्रभु-रूप, श्री गुरु नानक साहिब के साथ बिताए जीवन की बात अधिक करेंगे।

श्री गुरु नानक देव जी तथा भाई मरदाना जी बाल सखा मित्रता को अंतिम सांस तक निभाते, सदैवकालीन सज्जनता स्थापित करते हुए नए कीर्तिमान की सृजना करते हैं। ऐसी मित्रता, स्नेह, प्यार, मुहब्बत की मिसाल दुलर्भ होगी। विकट रास्ते के पथिक, जगत-सुधारक श्री गुरु नानक देव जी के प्रति भाई मरदाना जी की विनम्रता, समर्पण भावना, इच्छा शक्ति, दृढ़ता, उदारता, त्याग, सब्र, संतोष, संजम, सहज, सद्भावना तथा सांझ-मुहब्बत से प्रत्यक्ष है, मुहब्बत का सफर। मरदाना जी मुहब्बत के इस सफर के दौरान 'भाई' बन गया-- जगत-गुरु श्री गुरु नानक देव जी तथा समूची सिक्ख कौम का। सफर के आरंभ के बाद फिर कभी पीछे की ओर मुड़कर नहीं देखा, बल्कि भाई मरदाना जी ने फर्श से अर्श तक का सफर सहजता से सफलतापूर्वक संपूर्ण किया।

हमारे बहुत-से अज्ञानी प्रचारकों ने भाई साहिब भाई मरदाना जी के बारे न पढ़ा और न ही विलक्षण सफर के रूहानी साथियों की मुहब्बत को महसूस किया। चाहे इनके हंसी-मज़ाक से भाई मरदाना जी की लासानी शख़्सियत को कोई फर्क नहीं पड़ता। गुरमति संगीत पद्धति (प्रणाली) तथा परंपरा का निकास, विकास तथा विगास भाई मरदाना जी की रबाब से आरंभ होता है। रब्बी-रबाबी तथा गुरु-घर के मूल कीतर्निए को जितना मान-सम्मान दें, उतना ही कम है।

जलती-तपती जनमानस की चिंता के बारे में श्री गुरु नानक साहिब हर वक्त गहरे चिंतन में लीन रहते। दुखियों-दर्दमंदों की सार लेने हेतु श्री गुरु नानक देव जी तथा भाई मरदाना जी की करतारी जोड़ी खुद कष्ट सहन कर, जन साधारण के कष्ट निवारण करने हेतु निरंतर तत्पर रही, साखीकारों के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी के इस सदैवकालीन साथी के चरण परस तथा इलाही दीदार करके लोग खुश तथा निहाल होते थे।

सुलतानपुर के मोदी श्री गुरु नानक साहिब जब संसार के मोदी बनकर विचरण करने लगे तो निरंतर साथ निभाया भाई मरदाना जी ने। देश-देशांतर में विचरण करके जनमानस के दर्द को समीप से देखा और निवृत्त किया श्री गुरु नानक देव जी ने। एक परमात्मा की इबादत के संदेश, सुकृत करने तथा मानवता की भलाई हेतु बांटकर छकने की रीति चलाई, बाबा नानक जी ने। जातों-पातों, वहमों-भ्रमों, छूत-छात का भ्रम दूर करने के

*सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६

लिए बतौर रबाबी भाई मरदाना जी को सफर का साथी बनाया गुरु नानक साहिब ने।

श्री गुरु नानक देव जी के अनन्य सिक्ख थे भाई मरदाना जी, इस श्रद्धा-प्रेम के कारण ही सबसे पहले 'भाई' की पदवी के अधिकारी बने। मरदाने का अर्थ 'सूरमा' (शूरवीर) भी गुरबाणी में आया है। जैसे *"सोई मरदु मरदु मरदाना ॥"* वास्तव में भाई मरदाना जी शूरवीर वचन के बलि थे, जो श्री गुरु नानक देव जी के साथ मर्दों की तरह किए वचन आखिर तक निभा गए। भाई मरदाना जी जो ऐसी महान शख़्सियत थे, जो अपने आप को मज़ाक का पात्र बनाकर भी गुरमति के गहन भेदों, रहस्यों को प्रत्यक्ष करते हैं। गुरमति विचारधारा, परंपरा से सम्बंधित बहुत सारे रहस्य भाई मरदाना जी द्वारा ही प्रकट हुए हैं। भाई गुरदास जी ने अपनी वारों में 'मरदाना' शब्द बहुत ही सत्कार सहित अंकित किया है :

भला रबाब वजाइंदा मजलस मरदाना मीरासी।
(वार ११:१३)

धुर की रब्बी बाणी को रबाब से गायन करने के सदका ही भाई मरदाना जी गुरु-घर के रबाबी तथा रबाबी परंपरा के प्रवर्त्तक कहलाए।

विश्व का सबसे ज्यादा खुशकिस्मत मानव थे भाई मरदाना जी। भाई मरदाना जी बड़े तकदीर वाले, खुशकिस्मत थे; जिनको जगत-गुरु, श्री गुरु नानक देव जी का प्यार, मुहब्बत, दोसती प्राप्त हुई। श्री गुरु नानक देव जी ब्रह्मांडी शख़्सियत थे, जो समय-स्थान की सीमाओं से स्वतंत्र थे। भाई मरदाना जी भी साथी के रूप में रहकर जाति, धर्म, क्षेत्र, रंग, नसल की दीवारों को तोड़ते हुए सागर रूप हो गए। बेईं प्रवेश के उपरांत जगत-गुरु श्री गुरु नानक देव जी ने जो सांकेतिक-संक्षिप्त उद्देश्य तथा संदेश 'ना कोई हिंदू न मुसलमान' मानवता को दिया था, का ही अमली प्रकटाव भाई मरदाना जी ने भी गुरु जी का संग-साथ निभाते हुए किया।

भाई मरदाना जी ने घर-परिवार, बच्चों, सगे-सम्बंधियों का बिछोड़ा झेला, श्री गुरु नानक देव जी का साथ निभाने की खातिर, जिसके दौरान पत्थर-दिल मोम बनते, चोर-ठग व राक्षस, साध, प्रचारक व देवते बनते देखे। भाई मरदाना जी ने बाबर के आक्रमण के समय भारतीय लोगों की हुई दुर्दशा को आखों से देखा। श्री गुरु नानक देव जी द्वारा दिए सच के संदेश को कानों से सुना। तलवंडी राइ भोइ, सुलतानपुर लोधी, ऐमनाबाद, चारों खण्डों के भ्रमण के समय गुरु जी के साथ की गर्माहट का आनंद लिया, तंगी आदि को अपने तन पर झेला, विकट रास्ते तय किए तथा अंत *"तूं साहिबु हउ सांगी तेरा प्रणवै नानकु जाति कैसी ॥"* मुताबिक जीवन यात्रा सफल कर गए। जंगलों, पहाड़ों मरुस्थलों, बस्तियों, शहरों, अलग-अलग राज्यों, देशों, दरियाओं, झीलों, झरनों, उजाड़ों, बीआबानों, बागों-बहारों, हुमसों, तपशों, गर्मियों, सर्दियों, भूख-प्यास, चोरों, ठगों, राक्षसों, दैंतों, देवताओं, राजाओं, गरीबों, कृत्तियों आदि अनेकों लोगों के साथ अलग-अलग समय तथा परिस्थितियों में मेल-मिलाप हुआ किंतु भाई मरदाना जी गुरु-कृपा सदका हर समय सहज, सति, सब्र, संतोष, धैर्य के धारक बने रहे। दहाकों के सफर के दौरान कहीं भी कोई मित्रता में दूरी नहीं आती :

जनम मरण दुहहू महि नाही जन परउपकारी आए ॥ *(पन्ना ७४९)*

के पावन वाक्य अनुसार भाई मरदाना जी जीवन-मुक्त हो गए। करतार-करतार करते हुए भाई मरदाना जी करतार में अभेद हो गए। बूंद सागर में मिलकर सागर रूप हो गयी। जब जहां भी श्री गुरु नानक साहिब के बारे विचार-चर्चा होगी, वहां भाई मरदाना जी भी साथ खड़े मिलेंगे। महसूस होता है कि लंबे सफर की संगत के सदका भाई मरदाना जी की जुबान पर केवल दो शब्द ही होंगे-- 'सति बचन' तथा 'सति करतार'

इक बाबा अकाल रूपु दूजा रबाबी मरदाना

*-डॉ. अमृत कौर**

मृदु मंद-मंद शीतल मदमस्त हवा चल रही है। लहरों ने पवन की मधुरिम तान पर संगीत छेड़ रखा है। विस्मादी मौसम है। भाई मरदाना जी का सिर बाबे नानक की गोद में है। उसकी अंतर दृष्टि बाबे नानक की कृपा और निरंतर साथ के द्वारा खुल चुकी है। उसने एहसास कर लिया है कि उसके जीवन का अंतिम क्षण आ गया है ओर वह जा रहा है सदा-सदा के लिए अपने प्रियतम प्यारे गुरु को छोड़ कर। बाबा नानक प्यार से भाई मरदाना जी के सिर को सहला रहे हैं, हाथ फेर रहे हैं। प्यार और नाम की खुमारी में वह मदहोश हैं। उसके नेत्र अर्ध निमिलित हैं। दोनों मौन और शांत हैं। दोनों के मन में बिछुड़ने का दुख है, वैराग्य है, मोह है। परंतु यह सब तो कुदरत का खेल है। "मरदानिया मेरे भाई, एक बार जाती बार अपनी रबाब की मधुर तान तो सुना जा।" भाई मरदाना बाबे के प्यार में डूबा कीर्तन करता है। उसकी उंगलियां साज पर थिरक रही हैं। लगता है रबाब की रसीली तान पर नदी की लहरें भी थिरक रही हैं। ताल दे रही हैं, नाच रही हैं बाबे ने शबद गायन किया *"हम घरि साजन आए ॥ साचै मेलि मिलाए ॥" (पन्ना ७६४)* कीर्तन ने समय बांध दिया। संपूर्ण वन इस दैवी कीर्तन से झूम उठा। "कह मरदानिया सति करतार, सति करतार" लगा जैसे संपूर्ण वातावरण में सति करतार की रागनी छिड़ गई हो। गुरु जी को याद आ रहा था जब भाई मरदाना जी से प्रथम मिलन हुआ और उस समय वह युवा थे। घर में सिमरन में मस्त थे जब उन्होंने अपने घर के बाहर मधुर स्वर में किसी को गाते हुए सुना। रस भीने स्वर में कोई गा रहा था और साज बजा रहा था। कोई ऐसा जादू था; उस संगीतमयी आवाज़ में। ऐसी मधुर झंकार थी उसके साज़ में कि उनके कदम स्वयंमेव अपने घर के मुख्य द्वार की ओर बढ़ गए और उन्होंने भाई मरदाना जी को रबाब बजाते हुए और गाते हुए देखा। वह मंत्रमुग्ध हो गए। उन्हें लगा यही तो वह ताल थी जिसकी वह खोज में थे जो उनकी बाणी को ताल दे सके। शबद के साथ जब नाद का सुमेल हो जाएगा तो कीर्तन का प्रवाह चल पड़ेगा। धुर की बाणी के साथ संगीत का अलौकिक रस उत्पन्न कर लिव प्रभु चरणों में जोड़ने में समर्थ होगी और उन्होंने उल्लास से झूमते हुए भाई मरदाना जी से पूछा "तुम रबाब तो बहुत सुंदर बजाते हो" भाई मरदाना जी ने उत्तर दिया, "यह हमारा पुश्तैनी व्यवसाय जो ठहरा" मैं वाहिगुरु का ढाडी हूं, तू मेरा ढाडी बन जा।" मैंने सुना है आप सारा दिन नाम खुमारी में डूबे रहते हैं। आपका निर्वाह तो बिना काम के हो जाएगा, परंतु मेरा क्या बनेगा? मेरा घर परिवार बाल-बच्चे हैं। मैं निम्न कुल का आपका और मेरा क्या साथ। "ऊंच-नीच के अंतर तो समाज ने डाले हैं। ऊंच-नीच का कोई अंतर प्रभु की दृष्टि में नहीं है।"

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीच ॥
नानकु तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ

***१५४, ट्रिब्यून कॉलोनी, बलटाना, जीरकपुर-१४०६०४ (पंजाब)*

रीस ॥ (पन्ना १५)

"सब में उस परम पिता की ज्योति का निवास है। कोई छोटा या बड़ा नहीं। सब बराबर हैं। मेरे साथ रहो मरदानिया। आओ चलें दोनों देश-देशांतरों के भ्रमण को। लोगों के दुख-दर्द मुझे पुकार रहे हैं। ये मुझे टिक के नहीं बैठने देंगे। मुझे वाहिगुरु की आज्ञा हुई है। मुझे सहमी हुई लोकाई की मानसिक और आत्मिक परतंत्रता की बेड़ियों को तोड़ना होगा। प्रभु की स्तुति में गाए इन शब्दों को रबाब का सुर दो।"

"यदि मैं आपके साथ रह कर शबद ही गाता रहा तो मेरे घर-परिवार का क्या बनेगा? उनका पालन-पोषण कौन करेगा?"

"तू मांगना छोड़ दे। मांगना अच्छा काम नहीं।"

गुरु पीरु सदाए मंगण जाइ ॥
ता कै मूलि न लगीऐ पाइ ॥ (पन्ना १२४५)

"वाहिगुरु ने तुम्हें सुर और संगीत का वरदान दिया है। इसको उसकी सेवा में लगाओ। वह प्रभु स्वयं तुम्हारे परिवार के पोषण की चिंता करेगा।"

और गुरु नानक साहिब ने साधिकार उसका हाथ पकड़ लिया था, उसके हाथों को अपने हाथों में लेकर सहला दिया। इस प्रेम-स्पर्श को पाकर भाई मरदाना जी को समझ नहीं आ रही थी कि वह क्या उत्तर दें। कोई अनजाना रिश्ता उसे अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। पुकार रहा था। उस प्रेम दृष्टि ने, प्रेम-स्पर्श ने अपनत्व ने उसे रोमांचित कर दिया। पता नहीं, क्या था उस स्नेहिल दृष्टि में, मधुर स्पर्श में, उसका रोम-रोम महक उठा। अकथनीय प्यार की लहर से आहलादित और आनंदित हो गया। उस प्यार-अधिकार के सम्मुख वह निशस्त्र हो गया। उसकी मूक वाणी ने सहमति प्रदान कर दी और वह दिन गया और यह दिन आया, भाई मरदाना जी पूरे के पूरे श्री गुरु नानक देव जी के बन कर रह गए। तलवंडी में सुबह-शाम कीर्तन होने लगा। मरदानिया, रबाब वजा बाणी आई है। बाबे की बाणी और भाई मरदाने की रबाब शांत आनंदमयी समम का सृजन कर देते। कीर्तन का प्रवाह चल पड़ा और उसे याद आया श्री गुरु नानक देव जी के विवाह का शुभ अवसर।

भाई मरदाना की रबाब की सुर ने सब को आनंदित कर दिया। श्री गुरु नानक देव जी ने प्रसन्न हो अपनी शादी का जोड़ा भाई मरदाने को भेंट कर दिया। यह एक बहुत बड़ा सम्मान था।

वह घर-परिवार छोड़कर सुलतानपुर में भी उनके साथ रहे। बहन नानकी जी उसे देख खुशी से फूली न समाती। उन्होंने उसे अपने भाई की बाणी को सुर देने के लिए बढ़िया रबाब खरीद कर दी। वह कीर्तन के समय रबाब बजाते। भाई मरदाना जी अत्याधिक प्रसन्न था। उसे अब द्वार-द्वार मांगना नहीं पड़ता था। वह अब निम्न वर्ग का नहीं बाबे नानक के परिवार का अंग था। 'मुझे नीच से उच्च बनाया।' मेरा मांगना छुड़वाया। वह तो बिना मांगे ही इतना कुछ दे देता है कि मेरा मांगना ही छूट गया। कोई भूख-तृष्णा नहीं रही।

और उसे याद आया उदासियों पर जाते समय बहन नानकी जी को आग्रह, "मरदानिया तू नानक के साथ जा। नाम खुमारी में डूबा यह तो प्रभु का भक्त है। सिमरन में इसकी समाधि लग जाती है तो इसे होश ही नहीं रहती। अपनी भूख-प्यास की दुहाई देकर इसे खिला-पिला देना, थके-मांदे को आराम करने के लिए प्रेरित करना। अकेले मनुष्य का तो मन

ही नहीं लगता। तू खुशमिजाज़ और ज़िंदादिल है। अपनी हंसी-मज़ाक से इनका मन लगाए रखना' और भाई जैराम जी ने उसे अपने गले से लगा लिया। उन्हें एक नया कुर्त्ता भेंट किया। बहन नानकी जी ने बीस रुपए उसके हाथों में रख दिए।

जब भी वह उदासियों के बाद गुरु नानक साहिब के साथ वापिस आते तो माता त्रिपता जी सदैव भाग कर उसे अपनी ममता से निवाजतीं और कहतीं, "मरदानिया! हमारे से तो तू ही भाग्यशाली है जो नानक के सदीवी साथ का आनंद उठा रहा है। तुम ने दीन दुनिया, घर-परिवार सब कुछ छोड़ दिया है, त्याग दिया है। उसकी सांस के साथ सांस लेता है। बल्कि तुम्हारी सांसें तो उसमें बसी हैं।"

बाबे नानक ने उदासियों पर जाने के लिए जब तैयारी की। भाई मरदाना जी तैयार हो गए। किंतु उन्होंने एक समस्या बताई। उनकी बेटी जवान थी। प्रदेश जाने से पहले उसकी शादी करनी होगी। गुरु जी के दो श्रद्धालुओं भाई भागीरथ और मनसुख की सहायता से उसकी लड़की की शादी बड़ी धूमधाम से की। महिता कालू जी, राय बुलार जी, बीबी नानकी जी ने उनका घर भर दिया। चलते समय बाबा नानक जी ने उससे पूछा, कहां चलें? "मैं क्या जानूं। आगे तुम पीछे मैं। जहां आपकी इच्छा होगी वहीं मेरी मंज़िल होगी।"

इस प्रकार भाई मरदाना जी बाबा नानक जी के साथ वर्षों घूमते रहे देश-देशांतर, नदी, पर्वत, वन कोई भी बाबे के रास्ते की बाधा न बने। इससे उनके ज्ञान का घेरा बढ़ा। अनेक तरह के लोगों से मिले। बाबे का अंतरंग साथी बन कर बाबे के साथ का आनंद उठाया। बड़े-बड़े पंडितों, विद्वानों के साथ गुरु जी की ज्ञान चर्चा सुनी और कई बार वे अश्चर्यचकित हो जाते कि यह कैसा परम मनुष्य है, जो प्राण हथेली पर लिए घूमता है। कोई स्वार्थ नहीं, कोई लालच नहीं। मानवता की पीड़ा और दर्द को समझता है। कैसे खतरे मोल लेता है। निर्भय और निरवैर इतना कि पाप की बारात लेकर भारत रूपी वधू को ब्याहने आए बाबर से टक्कर ले लेता है। उसे चुनौती देकर ललकारता है। निर्दोष मानवता पर ढ़ाए जाते अत्याचारों, यातनाओं को देखकर प्रभु को भी उलाहना दिया। आदमखोर कौडे राक्षस से भी नहीं डरा। कौडा राक्षस की मानसिकता को बदल दिया। नूरशाह ने उन्हें लेला ही बना दिया था, अपने जादू से। किंतु वाह बाबा नानक जी का जादू। उसने तो उस जादूगरनी का जादू तोड़ उसे प्रभु की भक्ति के मार्ग पर चला दिया। उनके एक बार आग्रह करने पर कि उन्होंने मक्के और मदीने का हज करना है, वे चल पड़े थे उनकी इच्छा पूरी करने।

कई बार तो भाई मरदाना जी गुरु जी के अद्‌भुत अंदाज़ से चकित हो जाते जब वह सज्जन व्यक्तियों को उजड़ जाने का वर देते हैं और दुष्टों को बसे रहने का। उनसे रहा न जाता और वे बार-बार प्रश्न पूछ-पूछकर इसके बारे में जानते। उनका उत्तर था। "सज्जन व्यक्ति उजड़ कर चारों और अपने गुणों की खुशबु फैलाएंगे और दुष्ट बसते रहें नहीं तो वे अपने अवगुणों की बदबू से बाकी वातावरण को भी दूषित कर देंगे।" और इस तरह भाई जी की अंतर मन की आंखें खुलती गईं। उन्हें अपने निजत्व की अनुभूति होती गई। वे स्वयं को पहचानने लगे। उनकी रबाब के सुर और मधुर और अधिक रसीले होते गए। उनमें एक दैवी सुर समा गया। उनका आत्मविश्वास जागृत हुआ। वे बाबे के साथ अनेक बार मित्रों जैसी बराबरी करते। बच्चों

की तरह हठ करते और गुरु जी उन्हें प्यार से पूरी करते। उनके अमृत बरसाते नयन भाई जी को अनन्य शांति और आनंद प्रदान करते। वे कितने भाग्यशाली थे जिनके दर्शनों को सारा जग भी तरसता था, उनकी सौभाग्यशाली गोद में उनके प्राण निकल रहे हैं और भाई मरदाना जी ने बाबा नानक का हाथ ज़ोर से पकड़ लिया।

बाबा नानक जी को उसके प्यार की अनुभूति हुई। अश्रुधारा उनके नयनों से बहने लगी। आज उनका भाई, उनके जीवन भर के दुख-सुख का साथी, लंबी-लंबी यात्राओं का साथी और उनसे सदा-सदा के लिए बिछुड़ रहा था। वर्षों वह निरंतर उनके साथ घूमते रहे थे। साए की तरह। कोई पर्वत, वन, नदी-नाले उसका रास्ता रोक नहीं पाए थे। कितना प्यार करता था उन्हें उनका यह दोस्त मित्र और साथी। भाई जी ने तो अपना संपूर्ण जीवन ही उनके लिए समर्पित कर दिया था और सचमुच ही वह उनका साया बन कर रह गए थे। उनके प्यार, सेवा, त्याग, आत्मसर्मपण को शब्दों में अभिवयक्त करना कठिन है। कठिन निर्जन राहों को वह अपने हंसमुख स्वभाव से रंगीन बना देते। उनकी ज़िंदादिली और मज़ाकिया स्वभाव सोने पर सुहागा था। अपनी भूख की दुहाई देकर वह याद दिलाते थे कि शरीर को भी भोजन की आवश्यकता है। केवल आध्यात्मिक भोजन ही प्रर्याप्त नहीं और उनका संबंध संसार से जोड़ देते। उनकी रबाब की मधुर सुरें उनकी बाणी के प्रभाव को और भी बढ़ा देती थी। जिनके द्वारा वह सज्जन ठग, भूमिए और कौडे राक्षस जैसे पत्थर हृदय व्यक्तियों को मोम की तरह नरम बना उचित मार्ग दर्शन कर सके थे। भाई मरदाना जी की रबाब के ताल के साथ शबद कीर्तन सभी को द्रवित कर देता था, कई बार तो जब वह भाई मरदाना जी को भूख और प्यास से बेहाल देखते, वनों, पर्वतों में अपने साथ यात्रा करते थके हुए देखते तो कहते "मरदानिया तुम्हें वर्षों हो गए हैं मेरे साथ घूमते। अपने घर जाओ और अपने बीबी बच्चों के साथ सुख का जीवन व्यतीत करो।" परंतु उनका उत्तर होता "जहां बाबा वहां मरदाना जहां आप वहां मैं। बहन नानकी जी की दी रबाब तो केवल आप की बाणी के साथ ही बजती है। आपके शबदों के बिना तो मेरी रबाब मूक हो जाएगी।" और उन्हें याद आई वली कंधारी वाली घटना की। जब प्यास से व्याकुल को उसने एक घूंट पानी पिलाने से इन्कार कर दिया था। उनसे प्यास से व्याकुल भाई मरदाना जी की दशा देखी न गई और उन्होंने कहा था भाई मरदाना जी को एक स्थान से पत्थर हटाने के लिए यहां से पत्थर उठाते ही पानी का चश्मा फूट पड़ा। यह चश्मा पानी का चश्मा न होकर गुरु जी का भाई मरदाने के लिए असीम प्यार था जो चश्मे की लहर के रूप में फूट पड़ा था और जो निरंतर आज तक बहता चला आ रहा है। यह जात-पात धर्म की सीमाओं से ऊपर उठकर मनुष्य का मनुष्य के लिए सच्चे प्रेम का प्रतीक बन गया है।

कई बार वह भूख-प्यास के हाथों निढाल होकर हठ भी कर बैठते थे। एक बार तो ज़िद ही कर बैठे। "गुरु जी मुझे वापिस जाने दो। आपको तो भूख-प्यास नहीं लगती परंतु मुझे तो भूख सताती है।" कृपा एवं अशीषें की वर्षा करते हुए अब तुम्हारी और मेरी दोस्ती कैसे निभेगी?" "आप आहार करते ही नहीं परंतु मुझे आहार चाहिए, वह भोजन मुझे भी खिलाओ जो आप करते हो। जिसके सहारे आप बिना खाए संतुष्ट रहते हो। मेरा भी वही भोजन बने नहीं तो मुझे छुट्टी दे दो।" "अच्छा मरदानिया अब

से तुम्हें भूख-प्यास तंग नहीं करेगी। अब तुम्हें दिव्य भोजन प्राप्त होगा। करतार की तुम पर कृपा हुई है तुम्हारा हृदय आकाश की तरह निर्मल और स्वच्छ हो गया है। सिमरन और सेवा द्वारा तुम ने उच्च आध्यात्मिक अवस्था प्राप्त कर ली है।"

भाई मरदाना जी अंतिम सांसें ले रहे हैं। गुरु जी ने उससे पूछा "मरदानिया तुम्हारी अन्य कोई इच्छा मन अंतर में हो तो बता दो।" भाई मरदाना जी ने कहा, "हे जगत गुरु आपका साथ पाकर मैंने सब कुछ पा लिया। मुझे सब कुछ मिल गया। मैंने लंबा समय आपके साथ व्यतीत किया और अब मैं आपके हाथों में यह नश्वर शरीर छोड़ रहा हूं। मैं पूर्णत्यः संतुष्ट हूं। गुरु जी ने कृपा एवं आशीषों की वर्षा करते हुए कहा।"

"मरदानिया तुम ब्रह्मज्ञानी हुए। तुम ने ब्रह्म को पहचाना है।" भाई मरदाना जी शांत और मौन थे। मस्ती में डूबे हुए। वह बाबे के दैवी स्पर्श का आनंद ले रहे थे। उसे निजत्व की अनुभूति हो गई थी। वह बाबे नानक से बिछुड़ कहां रहे थे। उसका नाम तो सदा के लिए बाबे के नाम के साथ जुड़ गया था। उनके अंतर चक्षु खुल गए थे। वे बाबा नानक जी में समा गए थे। 'सति करतार, सति करतार।' कहती भाई मरदाने की रबाब सदा के लिए मौन हो गई थी। परंतु वह मौन कहां हुई थी। उसकी रबाब की तारों की झंकार तो आज भी निरंतर गूंज रही है।

इकु बाबा अकाल रूपु दूजा रबाबी मरदाना।
(वार भाई गुरदास १:३५)

फार्म-४, नियम-८

१.	*प्रकाशित करने का स्थान*	:	*कार्यलिय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर*
२.	*प्रकाशित करने का समय*	:	*प्रत्येक माह की पहली तारीख*
३.	*मुद्रक का नाम*	:	*स. दिलजीत सिंघ*
	राष्ट्रीयता	:	*भारतीय*
	पता	:	*अतिरिक्त सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर*
४.	*प्रकाशक का नाम*	:	*स. दिलजीत सिंघ*
	राष्ट्रीयता	:	*भारतीय*
	पता	:	*अतिरिक्त सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर*
५.	*संपादक का नाम*	:	*स. सतविंदर सिंघ*
	राष्ट्रीयता	:	*भारतीय*
	पता	:	*संपादक, गुरमति ज्ञान, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर*
६.	*मालिक*	:	*शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर*

मैं सतविंदर सिंघ घोषणा करता हूं कि उपरोक्त विवरण मेरी जानकारी अनुसार पूर्णतः सही है।

तारीख -०१/०३/१७ *हस्ताक्षर/-*

(सतविंदर सिंघ)

संपादक, गुरमति ज्ञान।

शूरवीर बचन का बली : अकाली फूला सिंघ

*-प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर**

परिवर्तन प्रकृति का अटल नियम है। प्रकृति की रची प्रत्येक चीज़ में समय-समय पर परिवर्तन आता रहता है जो मनुष्य की ज़िंदगी को हर पक्ष से प्रभावित करता रहता है। देशों और कौमों की ज़िंदगियों में, कौमी तथा राष्ट्रीय लहरों में भी परिवर्तन आता रहता है। पुराने विचार पीछे रहते जाते हैं और नयी विचारधाराएं पैदा होती रहती हैं, जिनके कारण मानवीय ज़िंदगी, स्वभाव, सभ्याचार, रहन-सहन में परिवर्तन आता रहता है। इस वरतारे के दौरान जो अच्छा या बुरा इतिहास रचा जाता है, वह भविष्य में मानवीय ज़िंदगी को प्रभावित करता रहता है। इसी कानून-ए-कुदरत के अनुसार सोने की चिड़िया मानी जाती महाबली शूरवीरों, ऋषियों, मुनियों, फकीरों की धरती भारत की ज़िंदगी में एक ऐसा समय आया जब यहां के लोग सांस-सत्य विहीन तथा बेगैरत, स्वाभिमान से विहीन, अपने महान सिद्धांतों से कोरे, अज्ञानता, वहमों-भ्रमों में मस्त हुए होने के कारण गुलामी को ही कबूल कर बैठे। राजाओं, अहलकारों, नौकरशाही, धार्मिक क्षेत्र में विचरण करने वालों ने अपना धर्म तथा फर्ज़ छोड़ दिया, अपनी बोली, अपना सभ्याचार त्याग दिया। इस स्थिति को श्री गुरु नानक देव जी ने इस तरह ब्यान किया है,

सरमु धरमु दुइ छपि खलोए कूड़ु फिरै परधानु वे लालो ॥ *(पन्ना ७२२)*

ऐसे समय में गुरु नानक पातशाह का इस घोर अंधेरे में प्रकाश हुआ तथा उन्होंने भारत की सारी स्थिति को देखकर एक विचारधारक, सभ्याचारक तथा सदाचारक इन्कलाब की नींव रखी थी, जिस लिए जीवन-युक्ति तथा फलसफा पूरी तरह क्रांतिकारी कर दिया और भारतीय सभ्यता की पुनः सुरजीती का अमल शुरू कर दिया जिसके अनुसार बड़ों को नीचा करना नहीं था बल्कि नीचों का उत्थान करके उनको ऊंचे करना तथा सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा धार्मिक समानता लाना था, जैसे भक्त रविदास जी का फरमान है :

नीचह ऊच करै मेरा गोबिंदु काहू ते न डरै ॥ *(पन्ना ११०६)*

ऐसी क्रांति लाने के लिए सदगुण भरपूर मनुष्य तथा संत-सिपाही पैदा करने की आवश्यकता थी। यह सिद्धांत जर्मन फिलासफर बरनार्ड शाह के Man-Superman के फलसफे तथा नीतशे के Survival of the Fittest के सिद्धांत से बिल्कुल भिन्न था। गुरु नानक पातशाह ने निमानों, नितानों, निआसरों तथा निओटों का उत्थान करने का बीड़ा उठाया तथा अपने आपको विचारधारक रूप में उनके साथ खड़ा किया और फरमान किया :

नीचा अंदरि नीच जाति नीची हू अति नीचु ॥
नानक तिन कै संगि साथि वडिआ सिउ किआ रीस ॥ *(पन्ना १५)*

अमलीय रूप में तथाकथित नीच जाति के भाई मरदाना जी को अपना साथी, अपना भाई

*अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर।

बनाया। भाई लालो के साथ भाईचारा स्थापित किया। चार उदासियां कीं, लोगों को अपने विचारों, गुरबाणी तथा गोष्टियां द्वारा इस फलसफे से सहमत किया। श्री गुरु अरजन देव जी ने भारत में प्रथम शहीदी देकर लोगों के मनों में से मृत्यु का भय दूर किया। श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब ने मीरी व पीरी के सुमेल को दुनिया में प्रकट करते हुए सांस-विहीन भारतीय लोगों के हाथों में कृपाण पकड़ाकर बिल्लियों से डरने वालों के हाथों से शेर मरवा दिए। इस सम्बंध में एक दोहरा प्रचलित है, जिसने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के इस सारे निशाने को इस तरह स्पष्ट किया:

जिन की जाति और कुल मांही। सरदारी नहि भई कदाहीं। . .

इन ही को सरदार बनावों। तबै गुबिंद सिंघ नाम सदावो ॥७॥

मनुष्य का अस्तित्व-हस्ती का एहसास करवाने हेतु पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने इस तरह फरमान किया। :

अवर जोनि तेरी पनिहारी ॥

इसु धरती महि तेरी सिकदारी ॥ (पन्ना ३७४)

धर्म एवं मानवीय अधिकारों की रक्षा करने का रास्ता श्री गुरु तेग बहादर साहिब ने दिल्ली के चांदनी चौंक में शहीदी देकर दिखाया तथा *'धरम सिर दित्तिआं बाझ नहीं रहिणा'* को प्रत्यक्ष रूप में दिया। संत-सिपाही की घाड़त (आकृति), संपूर्णता तथा नमूना १६९९ ई. को श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर दुनिया के समक्ष पेश कर दिया। यह धार्मिक व सामाजिक रूप में एक सम्पूर्ण इन्कलाब था। इस सम्पूर्ण क्रांति को शिखर तक पहुंचाने हेतु श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने अपना सरवंश ही कुर्बान कर दिया। लिहाज़ा सिक्ख कौम का इतिहास हर पक्ष से विश्व के इतिहास से बेजोड़, विलक्षण, अद्वितीय एवं लामिसाल है।

इन्कलाबी, क्रांतिकारी विचारधारा ने सिक्ख कौम में अनेकों महान योद्धा, शूरवीर, महाबली तथा मरद-ए-मैदान पैदा किए, जिन्होंने देश की काया कल्प कर दी तथा आश्चर्यजनक इतिहास सृजित किया। अजेय समझे जाते मुगलों, अफगानों को धूल चटवाकर उनको जालिम, जाबिर व जुल्मी हाकिमों से सिक्ख कौम के गुलाम बनाकर दिखा दिया। इस लेख में ऐसे ही महान योद्धा, मरदे-ए-मैदान, शूरवीर, वचन के बली, संत-सिपाही, घोड़े के शाह सवार, तेग के धनी, अति नम्र परंतु पूर्ण रूप में दृढ़ संकल्प मनुष्य जत्थेदार अकाली फूला सिंघ के जीवन पर संक्षिप्त दृष्टि डालने का तुच्छ प्रयत्न कर रहे हैं।

अकाली फूला सिंघ एक सच्चा-सुच्चा गुरु का सिक्ख, मरजीवड़ा, परोपकारी, नेक, त्यागी, पुण्य का पक्का, फौजों का जरनैल, गुरु-घर का अनन्य सेवक, आत्मिक रूप में स्वतंत्र, निर्भय व निरवैर योद्धा तथा अपना धर्म-फर्ज़ पालने वाला, अरदास पर साबित-कदमी होकर पहरा देने वाला था। अकाली फूला सिंघ जी ने अपने कौतुकों तथा कारनामों द्वारा ऐसा इतिहास सृजित किया जो सदा-सदा के लिए अलग-अलग क्षेत्रों में विचरण करने वाले सिक्ख राजतंत्र तथा धार्मिक नेताओं और समाज सेवकों के लिए प्रकाश-स्तंभ का कार्य करता रहेगा।

अकाली फूला सिंघ का जन्म १८१८ बिक्रमी (सन् १७६१ ई) में हुआ माना जाता है। आपके पिता स. ईशर सिंघ निशानां वाली मिसल से सम्बंधित योद्धे थे। यह लहिरागागा तथा मूणक के मध्य लेहल कलां के पास एक छोटे-से गांव शीहां के रहने वाले थे। उनकी अर्द्धांगिनी

(अकाली फूला सिंघ जी की माता) भी सिक्खी सिदक वाली व पंथक सेवा में तत्पर रहने वाली थी, जिनकी कोख से अकाली फूला सिंघ का जन्म हुआ। अभी एक वर्ष ही गुज़रा था कि बिक्रमी १८१९ (सन् १७६२ ई.) में अहमद शाह अब्दाली ने भारत पर आठवां आक्रमण कर दिया। यह हमला उसने विशेषत: सिक्ख शक्ति को कुचलने हेतु ही किया था। सिंघों के सारे जत्थे उस समय मलेरकोटले के पास कुप्प रूहीड़े में एकत्र हुए थे जो राजस्थान को वहीर (दल) के रूप में जाते समय रास्ते में विश्राम के लिए रुके थे। यहां अब्दाली सूबा सरहिंद मलेरकोटला, रायकोट तथा लुधियाना के नवाबों की फौजों की सांझी भारी कुमक ने सिक्खों को आ घेरा। रक्त रंजित लड़ाई हुई, जिसमें लगभग ३० हज़ार सिंघ, सिंघणियां तथा बच्चे शहीद हो गए। सिक्ख इतिहास में इसको 'बड़ा घल्लूघारा' के नाम से जाना जाता है। इसी जंग में अकाली फूला सिंघ के पिता जत्थेदार ईशर सिंघ बुरी तरह जख़्मी हो गए। समय सिर इलाज न होने के कारण वह कुछ दिनों बाद अकाल चलाना कर गए परंतु अपनी हालत को भांपते हुए उन्होंने शरीर छोड़ने से पूर्व ही अकाली फूला सिंघ की सांभ-संभाल दायित्व अपने एक साथी भाई नरैण सिंघ को सौंप दिया।

भाई नरैण सिंघ ने बालक फूला सिंघ को बचपन में धार्मिक विद्या देनी आरंभ कर दी। वह विलक्षण एवं तीक्षण बुद्धि वाला बालक था। १० वर्ष की उम्र में ही उसने नित्तनेम की बाणियां, सवैये व अकाल उसतति आदि बाणियां कंठ कर ली थी। जितना भी समय उसको मिलता था वह गुरबाणी का पाठ करने में ही व्यतीत करता था।

श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब के समय से सिक्खों को शस्त्र व शास्त्र के धनी बनाने की परंपरा कायम हो गयी थी। प्रत्येक सिक्ख बच्चे के लिए धार्मिक विद्या के साथ-साथ शस्त्र विद्या भी ज़रूरी थी। इस परंपरा के अनुसार जब अकाली फूला सिंघ किशोर अवस्था में दाख़िल हुए तो बाबा नरैण सिंघ ने उसको शस्त्रों का अभ्यास करवाना भी आरंभ कर दिया। जवान होने तक अकाली फूला सिंघ गुरमति व शस्त्र विद्या में प्रवीण तथा घुड़सवारी में पूरी तरह निपुण हो गया। इसके अतिरिक्त जंगी पैतरों में मुहारत हासिल होने के कारण युद्ध-विद्या का भी उसको पूरा ज्ञान था। दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा श्री अनंदपुर साहिब की धरती पर आरंभ की गयी युद्ध अभ्यास करवाने की परंपरा के अनुसार बाबा नरैण सिंघ अपने सारे विद्यार्थियों को दो हिस्सों में बांटकर जंगी अभ्यास भी करवाते थे।

अकाली फूला सिंघ ने अभी जवानी में पांव ही रखा था कि उसकी वृद्ध माता सीढ़ी से गिरकर अकाल चलाना कर गयी। माता ने अंतिम समय अपने पुत्र का हाथ पकड़कर उसको सिक्खी में परिपक्व रहने की तथा तन-मन-धन से पंथ की सेवा में लगे रहने की ताकीद की। आज खालसा पंथ में ऐसी कम ही माताएं हैं। अकाली फूला सिंघ ने अपनी पूजनीक माता के अंतिम संस्कार से मुक्त होकर अपना जीवन पंथ की सेवा में लगाने का फैसला कर लिया। उन्होंने सबसे पहले बाबा नरैण सिंघ के डेरे पर जाकर अकाली शस्त्र-वस्त्र पहन लिए व सिंघ सजकर तैयार-बर-तैयार हो गए। इस संप्रदाय की मर्यादा के अनुसार उन्होंने अपना घर-बार व ज़मीन-जायदाद गांव वालों के हवाले कर दी और पंथ की सेवा हेतु सब झंझटों के मुक्त हो गए। उनके आगे यह सिद्धांत स्पष्ट था कि सिर

दिए बिना धर्म को बचाया नहीं जा सकता। यह परंपरा श्री गुरु अरजन देव जी तथा श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी से ही आरंभ हुई थी। बाबा नरैण सिंघ के जत्थे से मिलकर आप श्री अनंदपुर साहिब आ विराजमान हुए। बाबा नरैण सिंघ का जत्था शहीदों की मिसल का अंश था, इसलिए अकाली सिंघ भी शहीदों की मिसल में शामिल हो गए थे। इस मिसल में रहते हुए आप को कई बार जौहर दिखाने का समय मिला। अकाली फूला सिंघ की सियानप, दृढ़ता, दिलेरी व सिक्खी सिदक के कारण बाबा नरैण सिंघ के बाद अकाली फूला सिंघ उनके जत्थे के जत्थेदार स्थापित किए गए। तब इसकी आयु लगभग ३० वर्ष की होगी। यह वह समय था जब मिसलों ने पंजाब के भिन्न-भिन्न हिस्सों में अपना अधिकार जमाना आरंभ कर दिया था। शहीदों की मिसल के कब्ज़े में शाहजादपुर, माजरी, केसरी आदि के क्षेत्र थे। इस मिसल का सरदार भाई करम सिंघ था। १८५१ बिक्रमी में उसकी मृत्यु के बाद उसका पुत्र स. गुलाब सिंघ मिसलदार बना। १७९९ ई. में महाराजा रणजीत सिंघ ने लाहौर पर कब्ज़ा करके सिक्ख राज्य की बुनियाद रखी। शहीदों की मिसल का सरदार गुलाब सिंघ अच्छा सूझवान प्रबंधक नहीं थी। अकाली फूला सिंघ अपने आप को समूचे पंथ के सेवादार समझते थे, इसलिए १८५७ बिक्रमी अर्थात् १८०० ई. में वह अपने जत्थे सहित श्री अमृतसर की सेवा में पहुंच गए। १८५८ बिक्रमी अर्थात् १८०१ ई. को जब महाराजा रणजीत सिंघ ने श्री अमृतसर पर चढ़ाई की तो अकाली फूला सिंघ दोनों दलों में मध्य खड़े हो गए। सिक्खों को सिक्ख के साथ लड़ने से रोका व मिसल के सरदारों के साथ महाराजा रणजीत सिंघ की सुलह करवा दी। महाराजा साहिब ने जहां भंगी सरदारों को बहुत-सी जागीर दे दी वहां अकाली जत्थे के नाम भी जागीर लगाई। १८६४ बिक्रमी अर्थात् १८०७ ई. में अकाली फूला सिंघ ने अपने जत्थे सहित कसूर की जंग में महाराजा साहिब की सहायता की। अकाली फूला सिंघ की अगुवाही में निहंग सिंघों ने कसूर की जंग में जो जौहर दिखाए उससे महाराजा साहिब के मन पर अकाली सिंघों की बहादुरी का सिक्का बैठ गया। उन्होंने अकाली जत्थे के लंगर की सेवा के लिए जागीर और बढ़ा दी। इस लिए उन्होंने जत्थे की संख्या में दिन-बदिन बढ़ौतरी होने लगी। अब यह मिसल एक मज़बूत बाहूबल वाली तथा शक्तिशाली फौज बन गयी थी। जिससे सारे भय खाने लग गए थे।

सतलुज के दक्षिण की तरफ फूलकीआं सिक्ख रियासतों ने महाराजा रणजीत सिंघ की शक्ति को बढ़ते देखकर अंग्रेज सरकार की शरण ली। अंग्रेज सरकार महाराजा रणजीत सिंघ को दक्षिणी सीमा सतलुज तक ही सीमित रखना चाहती थी। इस मंतव्य के लिए महाराजा से बातचीत करने हेतु मिस्टर मिटकाफ़ को भेजा गया। ११ सितंबर, १८०८ ई. को मिस्टर मिटकाफ़ महाराजा साहिब को कसूर में मिला। महाराजा रणजीत सिंघ सतलुज पार पूरब-दक्षिण की तरह दरिया यमुना को सिक्ख राज्य की हद बनाना चाहते थे। इसलिए वो काफी देर तक मिस्टर मिटकाफ़ से कोई धक्का, समझौता करने से आनाकानी करते रहे। उन्होंने सतलुज से पार हमला करके कई क्षेत्र भी अपने कब्ज़े में कर लिए थे। उधर यूनानी शक्तिशाली जरनैल नेपोलियन की नित्य बढ़ती शक्ति से भी अंग्रेज भयभीत थे, इस लिए कूटनीति अधीन अंग्रेज वक्ती तौर पर महाराजा रणजीत सिंघ से संधि करके उसको आगे बढ़ने से रोकने तथा

उनका सहयोग प्राप्त करके नेपोलियन का मुकाबला करने हेतु योजनाबंदी कर रहे थे। अचानक नेपोलियन के मरने के पश्चात अंग्रेजों के हौंसले बढ़ गए। उधर पूरबी रियासतें (फूलकीआं) अपने भाइयों से मिलकर राज्य करने की बजाय अंग्रेजों की गुलामी कबूल कर बैठी थीं, जिसके फलस्वरूप महाराजा रणजीत सिंघ को अपना इरादा बदलना पड़ा और वह सतलुज पार करके श्री अमृतसर पहुंच गए यहां ही मिस्टर मिटकाफ़ उनको फिर आकर मिला। ये मुसलमानों के ताजिआ के दिन थे। मिटकाफ़ के सिपाहियों में एक पलाटून शीआ मुसलमानों की भी थी। उन्होंने धूमधाम से श्री अमृतसर में ताजिआ निकाला। जब वह श्री दरबार साहिब के पास आए तो श्री दरबार साहिब के प्रबंधकों-सेवादारों ने उनको शोर मचाने से रोका क्योंकि उस समय श्री अकाल तख़्त पर धार्मिक स्मागम चल रहा था। ताजिआ के शोर के कारण इसमें विघ्न पड़ रहा था। इस पर सिक्खों से उनका झगड़ा हो गया। अकाली फूला सिंघ को जब ख़बर मिली तो वो भी कुछ अकालियों को साथ लेकर पहुंच गए। दोनों तरफ तलवारे व गोलियां चलने लगीं। महाराजा रणजीत सिंघ को इस घटना की सूचना दी गई तो उन्होंने खुद आकर लड़ाई बंद करवाई तथा मिस्टर मिटकाफ़ को सिक्खों की धार्मिक भावना से अवगत करवाकर शांत किया। उस समय सतलुज पार की फूलकीआं रियासतों अगर अंग्रेजों की अधीनगी कबूलने की जगह अपने भाइयों से मिलकर आज़ादी का आनंद लेती तो पंजाब का ही नहीं बल्कि भारत का इतिहास कुछ और ही होना था।

अंग्रेजों से महाराजा रणजीत सिंघ की संधि के बाद अकाली फूला सिंघ १८०९ ई में दमदमा साहिब आ गए। इस क्षेत्र में कैप्टन वाईट हदबंदी कायम करने के लिए तैयारी कर रहा था लोगों में अफवाह फैल गई थी कि अंग्रेज पंजाब का नक़शा तैयार कर रहे हैं। वे थोड़े समय में ही पंजाब पर कब्ज़ा कर लेंगे। इसकी जांच करने के लिए अकाली जी अपने जत्थे सहित चल पड़े। गांव चाउंके के पास उन्होंने कैप्टन वाईट का कैंप लगा देखा तो इस पर हमला कर दिया। इसमें कई अंग्रेज मारे गए। श्री दमदमा साहिब रहते हुए उन्होंने मालवा के गांवों का दौरा शुरू कर दिया तथा लोगों से जत्थे की ज़रूरत के लिए वो रसद-पानी की उगराही करते। अंग्रेजों को उनका इस तरह अपने क्षेत्र में चलना-फिरना अच्छा नहीं था लगता। उन्होंने महाराजा रणजीत सिंघ पर ज़ोर डाला कि अकाली फूला सिंघ को उनके हवाले किया जाए। महाराजा ने उनकी मांग पूरी करने की बजाय अकाली जी को विनती की कि वह सिक्ख राज्य के क्षेत्र में ही रहें और इस राज्य की मज़बूती के लिए शक्ति केंद्रित की जाए। उनकी ज़रूरतों की पूर्ति सरकार करेगी। इस पर अकाली फूला सिंघ श्री अमृतसर जा विराजे। महाराजा रणजीत सिंघ ने उनको अकाली सिंघों का मुखी मान लिया और श्री अमृतसर साहिब का सारा प्रबंध उनको सौंप दिया। इसके बावजूद भी अकाली फूला सिंघ ने महाराजा साहिब की अधीनगी कबूल नहीं की। वह अपने आपको पंथ का स्वतंत्र सेवक ही समझते थे। डोगरों को ओहदे देने के कारण तथा मोरां के साथ सम्बंध रखने के कारण अकाली फूला सिंघ ने महाराजा रणजीत सिंघ को श्री अकाल तख़्त पर तल्ब किया और ताड़ना की। एक बादशाह जिससे सारा पंजाब भय खाता था उसको एक जत्थेदार का श्री

अकाल तख़्त साहिब पर तल्ब करना आत्मिक उच्चता की अद्वितीय मिसल थी। दूसरी तरफ महाराजा रणजीत सिंघ ने एक बादशाह होते हुए भी उनके हुक्म को सिर आंखों से माना और अपने आप को एक निमाने सिक्ख के रूप में गुरु साहिब के तख़्त के समक्ष पेश किया। ये दोनों रूप सिक्खी आदर्श की उत्तम उदाहरणें हैं।

मुलतान पर कब्ज़ा करने के बाद महाराजा रणजीत सिंघ पेशावर, कश्मीर को अपने राज्य में मिलाना चाहते थे। ये दोनों क्षेत्र अफगानों के कब्ज़े तले काबुल के हाकिम शाह महिमूद के अधीन थे। १८१८ ई. में काबुल की हकूमत में भारी हलचल मची। शहजादा कॉमरान ने काबुल के बहुत ही लायक वज़ीर फ़तहि ख़ान को अंधा करके मार दिया। कश्मीर का गवर्नर अज़ीम ख़ान फ़तहि ख़ान का भाई था। उसने अपने भाई का बदला लेने हेतु काबुल पर चढ़ाई कर दी। शाह महिमूद को हार हुई और अज़ीम ख़ान ने काबुल की हकूमत अयूब ख़ान को सौंप दी। महाराजा रणजीत सिंघ ने इस मौके को पेशावर पर कब्ज़ा करने हेतु योग्य समझा।

पेशावर के क्षेत्र के पूरब की तरफ सिंध दरिया बहता है तथा दक्षिण की तरफ लुंडा दरिया पश्चिम से पूरब की तरफ बहता है। नवंबर, १८१८ ई. में महाराजा रणजीत सिंघ ने पेशावर पर चढ़ाई कर दी। अटक दरिया पर बेड़ियों का पुल बनाया गया। हमले की ख़बर सुनकर पठानों ने खैराबाद की पहाड़ियों पर मोर्चे लगा लिए थे। महाराजा साहिब ने पहले अकाली फूला सिंघ व सरदार महिताब सिंघ नाखेरिया का जत्था अटक के पार भेजा। उनके आगे पठान टिक न सके और ईन मान ली। इसके बाद उन्होंने चमकाणिआं के स्थान पर रास्ता रोकने का प्रयत्न किया। अकाली फूला सिंघ ने रात में उन पर धावा बोल दिया और वो डरते मारे इधर-उधर भाग गए। अब अन्य सिक्ख फौजें अटक से पार होकर खैराबाद तथा जहांगीर के किलों पर कब्ज़ा करके पेशावर की तरफ बढ़ने लगीं। पेशावर का गवर्नर यार मुहम्मद ख़ान जो कि फ़तहि ख़ान का भाई था, खालसे के पहुंचने से पूर्व ही शहर खाली करके दौड़ गया। २० दिसंबर, १८१८ ई. को खालसा फौज ने पेशावर पर कब्ज़ा कर लिया। अगले दिन महाराजा रणजीत सिंघ वहां पहुंचे तथा कई दिन वहीं ठहरकर दरबार लगाते रहे और लोगों को मिलते रहे। पेशावर में ही यार मुहम्मद ख़ान के भाई दोस्त मुहम्मद ख़ान ने अपने वकीलों द्वारा ५०,००० रुपए, काबुली मेवे तथा १०० पहाड़ी घोड़े महाराजा साहिब को नज़राना भेजा और तीन लाख रुपए वार्षिक मालिया देने का इकरार करके पेशावर की हकूमत बख़्शने के लिए विनती पत्र भेजा। महाराजा साहिब ने उनकी यह मांग मान ली और फौजों सहित लाहौर वापिस आ गए।

इसके अगले वर्ष १८१९ ई. में महाराजा रणजीत सिंघ ने कश्मीर पर हमले की योजना बनाई। एक जत्था दीवान चंद की अगुवाही तले आगे भेजा गया और दूसरा जत्था शहज़ादा खड़क सिंघ व अकाली फूला सिंघ की कमान तले भेजा गया। राजौरी के हाकिम ने तो लड़ाई के बिना ही खालसे की ईन मान ली। पुंछ के हाकिम ज़ब्रदस्त ख़ान ने तरी के क्षेत्र में फौज इकट्ठी कर ली और सिक्खों का मुकाबला किया। अकाली फूला सिंघ के जत्थे ने किले को घेर लिया तथा बारूद से एक बाही उड़ाकर ज़ब्रदस्त ख़ान तथा उसके साथियों को गिरफ्तार कर लिया। फौजें जब पीर पंजाल की चोटी की

ओर जाने लगीं तो पठानों को ख़बर हो गयी। उन्होंने दोनों तरफ से पहाड़ियों पर चढ़कर सिक्खों पर गोलियां चलानी शुरू कर दी। कोई बस न चलता देखकर अकाली फूला सिंघ ने अपने जत्थे को पहाड़ियों की चोटियों पर चढ़कर मोर्चे छुड़ाने का हुक्म दिया। तीसरे पहर तक यह जत्था पहाड़ियों के ऊपर पहुंचा और हाथों-हाथ की लड़ाई में मोर्चे छुड़ाए। बहुत-से पठान मारे गए तथा अन्य दौड़ गए। अकालियों ने इन सारे लकड़ी के बने मोर्चों को आग लगाकर जला दिया। इस तरह जहां भी कोई ख़तरे वाली जगह होती थी वहां निहंग सिंघों का जत्था ही आगे होकर वार झेलता था। नाम चाहे इतिहास में जरनैलों का ही हो परंतु असल में जीत उन योद्धाओं की ही होती है, जो मरने से नहीं डरते और आगे होकर वैरी से लोहा लेते हैं। मुलतान की जंग के समय भी इतिहासकारों के अनुसार एक अकाली सिंघ दीवार की सेंध में से सबसे पहले अंदर गया था। कईयों ने इसका नाम साधू सिंघ लिखा है, किसी ने जस्सा सिंघ तथा किसी ने माला सिंघ नाम चाहे कोई भी हो परंतु इसमें कोई शक नहीं कि वह अकाली फूला सिंघ के जत्थे का ही एक सिंघ था। गुरबाणी का महावाक्य है :

आगाहा कू त्राघि पिछा फेरि न मुहडड़ा ॥
नानक सिझि इवेहा वार बहुड़ि न होवी जनमड़ा ॥
(पन्ना १०९६)

पेशावर के गवर्नर यार मुहम्मद ख़ान ने लाहौर को नज़राना देना आरंभ कर दिया था। काबुल के हाकिम मुहम्मद अज़ीम ख़ान को यह बात अच्छी न लगी, इसलिए उसने १८२३ ई. में पेशावर पर हमला कर दिया। हमले की ख़बर सुनकर उसका भाई यार मुहम्मद ख़ान पेशावर छोड़कर यूसफजई के पहाड़ों में जा छिपा। मुहम्मद अज़ीम ख़ान ने बिना किसी मुकाबले के पेशावर पर कब्ज़ा कर लिया और सारे क्षेत्र में जेहाद का ऐलान कर दिया। मौलवियों द्वारा प्रेरित किए हुए सारे सरहदी पठान सिक्खों के विरुद्ध जंग में शामिल होने के लिए तैयार हो गए। मुहम्मद अज़ीम ख़ान अटक तक का क्षेत्र सिक्ख राज्य से आज़ाद करवा लेना चाहता था। उसने नौशहरा तथा हिशत में यह संख्या २५००० तक पहंच गई। दूसरी तरफ उसने अपने भतीजे ज़मान ख़ान तथा समुंद ख़ान की अगुवाही में अफरीदियों तथा खटकों का एक बड़ा लश्कर जहांगीरे के किले पर कब्ज़ा करने को भेज दिया। इस लश्कर के एक हिस्से ने जाकर किले को घेरा डाल लिया तथा बहुत-से गाज़ियों ने अटक दरिया के पार खैराबाद की पहाड़ियों में मोर्चे लगा लिए ताकि अटक को पार करने का रास्ता बंद करके इस क्षेत्र को अपने कब्ज़े में कर लिया जाए। उनकी मंशा थी कि सिक्ख फौजों को अटक से पार ही रोका जाए।

महाराजा रणजीत सिंघ को जब इस हलचल का पता चला तो उन्होंने दो हज़ार घुड़सवार शहज़ादा शेर सिंघ, स. हरी सिंघ नलवा तथा दीवान किरपा राम की अगुवाही में जहांगीरे के किले को गाज़ियों से मुक्त करवाने हेतु भेज दिए। दूसरे दिन आप खुद अकाली फूला सिंघ, स. देसा सिंघ मजीठिया, स. फ़तहि सिंघ आहलूवालिया आदि सरदारों सहित भारी फौज लेकर अटक की तरफ कूच कर दिया। दो-दो, तीन-तीन मंज़िलें तय करते हुए पांचवें दिन अटक के किनारे पहुंच गए। उनके पहुंचने से पहले ही शहज़ादा शेर सिंघ तथा स. हरी सिंघ दरिया पार करके खैराबाद की तरफ बढ़ने लगे। पहाड़ियों में बनाए मोर्चों से पठानों ने

गोलियां बरसानी शुरू कर दीं। सिक्ख फौजों ने भी कड़ा जवाब दिया। इसके दौरान ज़मान ख़ान ने कुछ जवान भेज कर बेड़ियों का पुल कटवा दिया ताकि अन्य सिक्ख फौज अटक पार न कर सके।

महाराजा रणजीत सिंघ के अटक दरिया पर पहुंचने से पहले बेड़ियों का पुल बह चुका था। नया पुल शाम से पहले नहीं बन सकता था। दूसरी तरफ से गोलियों की आवाज़ आ रही थी। इतने समय एक गुप्तचर ने आकर सूचना दी कि सिक्ख फौजें अटक के पार बुरी तरह से घिर गई हैं। अकाली फूला सिंघ की रगों में खून खौलने लगा। उन्होंने महाराजा साहिब को उसी समय अटक पार करके अपने भाइयों की मदद हेतु जाने की सलाह दी। महाराजा साहिब तथा अन्य सरदारों ने इसके साथ सहमति प्रकट की तथा घोड़ों पर बैठकर अटक दरिया में ठिल गए। इस कार्यवाई में कुछ जाने अटक दरिया में भेंट भी हो गईं परंतु महाराजा रणजीत सिंघ, अकाली फूला सिंघ तथा सारे सिक्ख सरदार फौज सहित दरिया से पार हो गए। पंजाब के इतिहास में यह एक यादगारी गौरवशाली घटना घटित हुई, जिसकी मिसाल आज प्रत्येक योद्धा देता है। यह सिक्खों की दृढ़ता, निर्भैयता व अद्वितीय दिलेरी की निशानी थी।

सिक्ख फौजों के दरिया पार करने की ख़बर सुनकर ही खटकों के पांव हिल गए अकाली फूला सिंघ के जत्थे ने आगे बढ़कर हमला किया। गाज़ी भाग खड़े हुए, इतने में स. हरी सिंघ नलवा ने हल्ला बोलकर जहांगीरे के किले पर कब्ज़ा कर लिया। यहां से भाग कर सारे गाज़ी नौशहरे के लश्कर में शामिल हो गए। वहां सिक्खों के खिलाफ़ जंग की तैयारियां होने लगीं। जहांगीरे तथा खैराबाद के किलों में अपनी कुछ नफ़री छोड़कर सिक्ख फौजें नौशहरे की तरफ बढ़ने लगीं। अकौड़े के मैदान में इकट्ठे होकर सिक्ख फौजों ने डेरा लगा लिया। रसद-पानी का प्रबंध किया जाने लगा। कई गुप्तचर नौशहरे की ख़बर लेने हेतु भेजे गए। रात को आकर गुप्तचर ने ख़बर दी कि गाज़ियों की संख्या बहुत ज्यादा है तथा उन्होंने लुंडे दरिया के पार तरकई की पहाड़ियों में मोर्चे कायम कर लिए हैं।

दूसरे दिन सुबह श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में खालसा फौज के सरदारों ने अरदासा सोधा तथा दीर्घ विचार करने के उपरांत गुरमता पास किया कि गाजियों पर शीघ्र हमले करने चाहिए नहीं तो उनके हौसले बढ़ जाएंगे। दूसरा, यदि मुहम्मद अज़ीम अपनी तोपें लेकर पहुंच गया तो इसमें सिक्खों के लिए नुकसान का डर ज्यादा है और आगे बढ़ना मुश्किल हो जाएगा। इस लिए गुरमते के अनुसार अरदासा सोधकर फौजों को तीन हिस्सों में बांटकर चढ़ाई का हुक्म दे दिया गया। अभी फौजों ने कूच ही करना था कि एक अन्य गुप्तचर ने आकर महाराजा साहिब को ख़बर दी कि मुहम्मद अज़ीम ख़ान तरकई की पहाड़ियों तथा गाज़ियों के साथ मिलने के लिए लुंडे दरिया से फौजें तथा तोपखाना पार कर रहा है। लुंडा दरिया काबुल दरिया को कहा जाता है। यह दरिया काबुल से चलकर पेशावर में से बहता हुआ अटक के पास दरिया सिंध में मिल जाता है। दुश्मन की बढ़ती ताकत को देखकर महाराजा रणजीत सिंघ जंग के हालात के बारे में सोचने लगे। उनका तोपखाना अभी पीछे आ रहा था। महाराजा साहिब का विचार बन गया कि एक दिन अभी और हमला नहीं करना चाहिए

तोपखाने के पहुंचने पर ही हमला करना योग्य होगा। इसलिए उन्होंने फौजों को कूच करने से रोक दिया।

अकाली फूला सिंघ को जब इस बात का पता चला कि महाराजा रणजीत सिंघ गुरमते में तबदीली करना चाहते हैं तो वह बड़े जोश में आ गए। अब बारी भी उनके जत्थे के कूच करने की थी। उन्होंने कहा कि गुरमते के उल्ट फैसला करना तथा अरदास करके चढ़ाई न करना सिक्खी उसूलों के विरुद्ध है। उन्होंने कूच करने की तैयारी कर ली। महाराजा रणजीत सिंघ घोड़े पर चढ़कर खुद अकाली फूला सिंघ के कैंप में गए तथा उन्होंने सारी स्थिति बताकर रुक जाने के लिए कहा किंतु अकाली फूला सिंघ का सिक्खी सिदक तथा जोश उबाले खा रहा था। महाराजा साहिब ने जब इस बात पर ज्यादा ज़ोर दिया तो बड़ी दृढ़ता तथा सिक्खी जज़्बे से अकाली फूला सिंघ ने जवाब दिया कि आप राजे हो, जैसे मर्ज़ी करें। आपको अपने तोपखाने पर भरोसा है किंतु मुझे अपने गुरु पर अटूट भरोसा है। अरदासा सोधने के उपरांत गुरसिक्ख का रुकना गुरु की शान के खिलाफ़ है, गुरु का अपमान है तथा खालसई सिद्धांत के उल्ट है, इसलिए मैं एक पल भी नहीं रुक सकता। यह कहकर अकाली फूला सिंघ जत्थे सहित जैकारे गुंजाते हुए रण-भूमि की तरफ चल दिए। घोड़ों की मदद से लुंडे दरिया को पार करके तरकई की पहाड़ियों पर चढ़कर आगे बढ़ने लगे। सामने ३० हज़ार गाज़ी मोर्चे बांधे बैठे थे। उन्होंने जब गिनती में थोड़े-से अकाली सिंघों को आते देखा तो ऊपर से गोलियों की वर्षा कर दी। *"जब आव की अउध निदान बनै अति ही रन मैं तब जूझ मरों ॥"* अकालियों का जत्था आगे ही आगे बढ़ता जा रहा था। उनको बंदूकों-तोपखानों से बढ़कर अपने गुरु पर भरोसा था जैसा कि बाबा निहाल सिंघ ने लिखा है :

काहूं को भरोसो है ज़मीन को ज़माने बीच
काहूं को भरोसो ज़ोर चाकरी जहाज़ पै।
काहूं को भरोसे चारु चातुरी चलाकी चोख
मोको तो भरोसो एक ग्रंथ महाराज पै।

अकालियों का कामयाब होने का राज़ ही यह था कि बंदूकों आदि की जगह वैरी के मोर्चों पर सीधा हमला करके उसको हाथों-हाथ की लड़ाई में खत्म कर देते थे या भगा देते थे। आज का हमला भी इसी प्रकार का था परंतु आज एक तो फासला बहुत था और दूसरा दुश्मन की गिनती कहीं ज्यादा थी। इसलिए मोर्चों तक पहुंचने में देरी हो रही थी। महाराजा रणजीत सिंघ को जब ख़बर मिली तो उन्होंने सारी फौजों को ही कूच करने का हुक्म दे दिया।

अकाली फूला सिंघ अपने घोड़े पर बैठकर सबसे आगे होकर जूझ रहे थे कि अचानक एक गोली उनके घोड़े के पेट में लगी। घोड़ा वहीं लेट गया। अकाली फूला सिंघ एक हाथी मंगवा कर उस पर चढ़कर बैठ गए तथा दुश्मन की तरफ बढ़ने लगे। मोर्चों के पास जाकर अकालियों ने घोड़े छोड़ दिए तथा नीचे उतरकर जहादियों पर टूट पड़े। दोनों तरफ से तेगें चलने लगीं। (खालसे की कृपाण की ताब न झेलते हुए गाज़ी मैदान में भागने लगें परंतु जोश में आए निहंग सिंघों ने लश्कर को आगे से घेर लिया और फिर लड़ाई होने लगी। अकाली फूला सिंघ भी हाथी पर बैठकर इस मारकाट में आ गए। इस तरह से किला फ़तहि हो गया।) खालसा फौज की विजय हुई। भागे जाते एक पठान ने चट्टान के पीछे बैठकर अकाली फूला सिंघ पर ४ गोलियां दाग दीं, तीन गोलियां महावत को लगीं,

एक अकाली फूला सिंघ की छाती में लगी। इसका जख़्म गहरा नहीं था, संजोअ के कारण बचाव हो गया था। अब गाजी घबरा गए और इधर-उधर भागने लगे। एक और भागे जाते पठान ने अकाली जी के हाथी के पास ही अपनी बंदूक में से फायर किया यह गोलियां अकाली जी को लगीं जिससे वो बुरी तरह जख़्मी हो गए तथा हाथी के हौदे में पीठ लगाकर बैठ गए। अकाली जी के हाथी को एक तरफ ले जाकर बैठाया गया तो देखा कि अकाली फूला सिंघ जी शहादत प्राप्त कर चुके थे। उन्होंने पंथ के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी परंतु कदम पीछे नहीं हटाया। गुरबाणी का महावाक्य है :

जउ तउ प्रेम खेलण का चाउ ॥
सिरु धरि तली गली मेरी आउ ॥
इतु मारगि पैरु धरीजै ॥
सिरु दीजै काणि न कीजै ॥ *(पन्ना १४१२)*

नौशहरे की जंग जीती जा चुकी थी और जहांगीरे के किले पर खालसा फौजों का कब्ज़ा हो गया था। अकाली फूला सिंघ की अगुवाही में अजेय समझे जाते गाजियों-पठानों को नानी याद दिला दी थी। सिंघ की अरदास प्रवान चढ़ी *"बिरथी कदे न होवई जन की अरदासि ॥"* अकाली फूला सिंघ ने सिक्खी सिद्धांतों पर पहरा देते हुए महान इतिहास सृजित कर सिंघ परंपरा को चार चांद लगा दिए। अकाली फूला सिंघ ने अपना सिक्खी सिदक केशों-स्वासों संग निभा दिया। अकाली जी के शहीदी पा जाने पर जब महाराजा रणजीत सिंघ उनके मृत शरीर के पास आए तो महाबली महाराजा अपने आसूं न रोक पाए और फूट-फूटकर रोने लगे। वास्तव में स. हरी सिंघ नलवा व अकाली फूला सिंघ का सदीवी बिछोड़ा तथा घाटा ही महाराजा रणजीत सिंघ के जल्दी कालवस होने का कारण बने। ढेर सारी जिम्मेवारियां पड़ जाने के कारण तथा मानसिक तनाव के कारण पहले महाराजा साहिब को अधरंग का दौरा पड़ा जो बाद में उनकी मृत्यु का कारण बना।

दूसरे दिन सुबह अकाली फूला सिंघ का अंतिम संस्कार लुंडे दरिया के किनारे बहुत भारी फौजी धूमधाम से किया गया। इसमें महाराजा रणजीत सिंघ खुद तथा कुल फौज के सारे सरदार शामिल थे। अकाली फूला सिंघ की यह यादगार अभी भी नौशहरे शहर में लुंडे दरिया के किनारे कायम है। अंग्रेजों के राज्य के समय सिक्ख फौजें इस यादगार पर अपनी श्रद्धा के फूल भेंट करने के लिए जाया करती थी।

आज जब वह महान क्रांति, वचित्र इन्कलाब उल्टे पांव मुड़ रहा है, पदार्थवाद की दौड़, धन-दौलत की दौड़, निजप्रस्ती, अमुक तृष्णाएं तथा लालसाएं भारी हो रही हैं। हमें अपने महान फलसफे, गौरवमयी इतिहास, शानदार परंपराओं तथा मज़बूत रिवायतों को शिद्दत से याद करने की तरफ चलना चाहिए, सिक्खी सिद्धांत तथा अद्वितीय विरासत तथा विश्वास को मुड़ कायम करना चाहिए। फौजी सिक्ख पंथक लहर को मुड़ बढ़ावा देना चाहिए। कौम का स्वाभिमान, गौरव तथा गैरत को पुनः सुरजीत करने हेतु हमें अकाली फूला सिंघ तथा अन्य अनेकों सिक्ख योद्धाओं, सिक्ख शूरवीरों, अति भयानक हालात में भी अडिग व अडोल रहे सिंघों के जीवन से दिशा व सबक लेना बनता है। उनकी ज़िंदगियां सदा-सर्वदा के लिए सिक्ख कौम के लिए प्रकाश स्तंभ का कार्य करती रहेंगी। आवश्यकता है उन महान ज़िंदगियों के बारे में जानकारी हासिल करके उनके द्वारा दर्शाए विलक्षण रास्तों के पांधी (पथिक) बनने की।

उच्चकोटि के जरनैल और शूरवीर योद्धा : अकाली फूला सिंघ जी

*-डॉ. कशमीर सिंघ 'नूर'**

खालसा की हकूमत के वक्त जो उच्चकोटि के जरनैल, शूरवीर योद्धा और महान् सिक्ख व्यक्ति केवल देश-प्रेम से वशीभूत होकर तथा पंथक जज़्बे के साथ सेवा (युद्ध) के मैदान में आए और फिर शहादत का जाम पी गए, उनमें अकाली फूला सिंघ जी का नाम अति सम्मान के साथ लिया जाता है। स. हरी सिंघ नलवा की भांति वे भी खालसा फौज के बाकायदा मुलाज़िम रहने की बजाए उस समय के जननायक की हैसियत में युद्धों में शामिल होते रहे। अकाली फूला सिंघ जी का लोगों में बहुत नाम एवं सम्मान था। एक ओर तो वे श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार थे, तो दूसरी ओर निडर योद्धा, न्यायप्रिय, प्रमुख, दूरदर्शी व रहम दिल आगू भी थे। तभी तो महाराजा रणजीत सिंघ जी को दंडित करने हेतु समर्थ थे। सिक्ख इतिहास में उनकी जो लामिसाल शहादत दर्ज है, वह एक सच्चे सिक्ख के आचरण की दृढ़ता, परिपक्वता और उस द्वारा की जाती 'अरदास' (प्रार्थना) की महान्ता को दर्शाती है कि एक सच्चा सिक्ख वाहिगुरु के समक्ष की गई अपनी अरदास पर कायम रहने हेतु अपनी जान तक कुर्बान कर देता है। इसी भावना को ही सही मायनों में 'प्राण जाए पर वचन न जाए' कहा जाता है।

बांगड़ क्षेत्र के ज़िला संगरूर के एक छोटे से गांव शीहां में स. ईशर सिंघ जी के गृह में माता हरि कौर जी की कोख में से सन् १७६१ ई. को अकाली फूला सिंघ जी का जन्म माना जाता है। उनके पिता स. ईशर सिंघ जी 'निशानां वाली मिसल' में शामिल होकर कई राष्ट्रीय युद्धों में लड़े। उन दिनों क्रूर व ज़ालिम मुगल शासक अहमद शाह अब्दाली आक्रमण पर आक्रमण कर रहा था। बड़ा घल्लूघारा में निशानों वाली मिसल की ओर से लड़ते हुए स. ईशर सिंघ जी गंभीर रूप में घायल हो गए और घर आकर अकाल चलाना करने से पूर्व अकाली फूला सिंघ जी को अपने प्रिय मित्र स. नरैण सिंघ जी के सुपुर्द करते हुए कहा, "इन्हें भी पंथक सेवा के मैदान में भेज देना।" स. नरैण सिंघ जी स्वयं 'मिसल शहीदां' में शामिल थे।

पिता स. ईशर सिंघ जी के अकाल चलाना कर जाने के बाद अकाली फूला सिंघ ने स. नरैण सिंघ जी की आगवानी में गुरबाणी पढ़ी और कंठस्थ की। फिर शस्त्र विद्या प्राप्त की। घुड़सवारी एवं तेग चलाने आदि में तो उनका मुकाबला करना मुश्किल था। फिर उनकी माता जी भी प्रभु-चरणों में जा विराजमान हुए। अब अकाली फूला सिंघ ने अकाली बाणा (निहंगों वाला पहनावा) धारण कर लिया और बाबा नरैण सिंघ जी से अमृतपान कर शहीदों की मिसल में शामिल हो गए। तब उनकी आयु लगभग १४ वर्ष की थी। इतने बड़े दानी व दयालु थे कि अपनी समस्त ज़मीन व जायदाद गांव वालों को दे

**बी-एक्स १२५, मोहल्ला संतोखपुरा, होशियारपुर रोड, जलंधर-१४४००४, फोन : ९८७२२-५४९९०*

दी। तदोपरांत श्री अनंदपुर साहिब चले गए और गुरुद्वारा साहिबान की सेवा-संभाल में जुट गए।

मिसल शहीदों में बाबा नरैण सिंघ जी जत्थेदार थे, जोकि उनके अकाल चलाना (देहावसान) के बाद अकाली फूला सिंघ जी को बनाया गया। वे युद्धों में शामिल हुए और वीरतापूर्वक लड़े। खालसा पंथ में उनका सम्मान व प्रभाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता चला गया। बाद में अकाली फूला सिंघ श्री अनंदपुर साहिब से श्री अमृतसर साहिब चले आए। यहां पर गुरुद्वारा-प्रबंध में पैदा हो चुकी त्रुटियों को दूर करने में जुट गए। उन्होंने पवित्र सरोवर की सेवा करवाई और श्री अकाल तख़्त साहिब का प्रबंध स्वयं संभाल लिया।

इतिहास साक्षी है कि १८०१ ई. में महाराजा रणजीत सिंघ जी ने श्री अमृतसर को खालसा राज्य में शामिल करने हेतु इस शहर पर चढ़ाई कर दी। यहां पर बहुत-से छोटे-छोटे सरदार काबिज़ थे। जोकि भंगी मिसल में से थे। अकाली फूला सिंघ जी ने बीच-बचाव करते हुए लड़ाई न होने दी और समझौता करवाकर मामला निपटा दिया। दोनों तरफ से सिक्ख शक्ति का नाश होने से बचाव किया। महाराजा रणजीत सिंघ जी ने अकाली जत्थे के लंगर के लिए बहुत-सी जागीर दे दी।

सन् १८०७ ई. में सिक्खों की कसूर (अब पाकिस्तान में) पर चढ़ाई हुई। कसूर का पठान हाकिम कुतुबुद्दीन काफी तैयारियों के साथ मुकाबला करने को डट गया। महाराजा रणजीत सिंघ जी ने अकाली फूला सिंघ जी के दल को मदद हेतु बुला लिया। इस लड़ाई में अकाली फूला सिंघ जी की वीरता देखकर सभी जरनैल 'वाह-वाह' करने लगे। इसके पश्चात् अकाली फूला सिंघ कुछ समय के लिए श्री दमदमा साहिब में रहे और फिर पुनः श्री अनंदपुर साहिब चले आए। जब सिंघों ने मुलतान और बहावलपुर (पाकिस्तान) पर आक्रमण किए, तब अकाली फूला सिंघ ने जोश व जज़्बे के साथ हिस्सा लिया। मुलतान का अंतिम युद्ध, जो कि सन् १८१७-१८१८ में जारी रहा, उसे ख़त्म करने का और मुलतान का प्रसिद्ध किला फ़तहि करने का श्रेय अकाली फूला सिंघ जी को मिला।

मुलतान के किले पर विजय प्राप्त करने हेतु पहले उसकी एक दीवार को तोपों के गोले बरसाकर गिराया गया। तत्पश्चात जैकारे गुंजाते व तेगें लहराते हुए अकाली सिंघ ही सबसे पहले अकाली फूला सिंघ जी के नेतृत्व में किले में दाख़िल हुए। हाथों-हाथ लड़ाई में नवाब मुज़फ्फर ख़ान को मार डाला। इससे एक साल बाद कश्मीर पर विजय (फ़तहि) प्राप्त करने के मौके पर पहाड़ियों पर चढ़ने तथा ऊंचे मोर्चों पर बैठे दुश्मनों को मारने का काम भी अकाली फूला सिंघ जी और उनके बहादुर दल (जत्थे) ने किया। बेशक संपूर्ण खालसा फौज ही अति बेहादुर, निर्भत्रय और दक्ष थी। किंतु अकाली फूला सिंघ जी के दल की दृढ़ता, सीधा मुकाबला करने का हिम्मत को कोई सानी नहीं था।

कश्मीर की विजय के बाद अकाली फूला सिंघ जी स. हरी सिंघ नलवा जी के साथ सूबा सरहिंद की ओर चल पड़े और उस तरफ के अन्यायी व क्रूर हाकिमों को अच्छा सबक सिखाया। मोहम्मद अज़ीम ख़ान काबुल का हाकिम था। उसने सन् १८२३ ई. में बहुत-सी सेना इकट्ठी की तथा सूबा सरहद पर हल्ला बोल दिया। उसने पेशावर पर कब्ज़ा कर

लिया और खालसा राज्य के विरुद्ध जेहाद छेड़ दिया। महाराजा रणजीत सिंघ जी ने उसे टक्कर देने के लिए एक दिन पहले दो हज़ार घुड़सवार सैनिक कुंवर शेर सिंघ के नेतृत्व में भेजे और फिर दूसरे दिन अकाली फूला सिंघ जी, स. देसा सिंघ मजीठिया, स. फ़तहि सिंघ आहलूवालिया आदि सहित बहुत-सी सेना ले स्वयं चल पड़े। मोहम्मद अज़ीम ख़ान ने नौशहरा के युद्ध-मैदान में लश्कर ला खड़ा किया। उस लश्कर पर स. शेर सिंघ व स. हरी सिंघ नलवा जी ने हमला कर दिया। दुश्मनों ने अटक दरिया का पुल तोड़ दिया। परंतु महाराजा रणजीत सिंघ जी एवं अकाली फूला सिंघ जी ने उफ़नते दरिया की परवाह न की और दरिया पर कर युद्ध के मैदान में पहुंच गए। दुश्मन छोटी-सी झड़प के बाद ही भाग खड़े हुए। सिंघों ने खैराबाद व जहांगीरों के दुर्गों पर कब्ज़ा जमा लिया।

गुप्तचरों द्वारा सूचनाएं दी गईं कि अज़ीम ख़ान के पास और ज्यादा लश्कर पहुंच रहा है और दुश्मन बड़े स्तर पर युद्ध की तैयारी कर रहे हैं। महाराजा रणजीत सिंघ जी ने अपने सेनापतियों (जरनैलों) की बैठक आयोजित की और श्री गुरु ग्रंथ साहिब की हजूरी में खालसा फौज के सरदारों ने अरदासा सोधा तथा दीर्घ विचार करने के उपरांत गुरमता पास किया गया कि गाजिओं पर शीघ्र हमला करना ही ठीक होगा। फिर समाचार मिला कि शत्रु का बड़ा तोपखाना भी आ गया है। इसलिए योजना में बदलाव कर अपना तोपखाना पहुंचने की प्रतीक्षा कर ली जाए। किंतु दृढ़ निश्चयी तथा अटल स्वभाव के अकाली फूला सिंघ जी ने कहा, "एक बार निर्णय लेकर 'अरदासा' सोध चुके हैं। इसलिए अब रुका नहीं जा सकता और आक्रमण अभी तुरंत किया जाएगा।"

खालसा फौज उनका कहना मानकर उनके पीछे चल पड़ी। इतिहास साक्षी है कि नौशहरा के मैदाने-जंग में घमासान युद्ध हुआ। अकाली फूला सिंघ घोड़े पर बैठकर दुश्मनों को चने चबा रहे थे। घोड़े पर गोली लगने के कारण हाथी पर चढ़कर मुकाबला करने लगे। और अपनी जान खालसा पंथ की आन, बान, शान के लिए कुर्बान कर गए। इतिहास के पन्नों में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखवा गए।

सिक्ख विद्वान व चिंतक बाबा प्रेम सिंघ होती ने अकाली फूला सिंघ जी के बारे में यूं बयान किया है, "अकाली फूला सिंघ जी की अद्वितीय वीरता व प्रभाव के आगे बड़े-बड़े ताजवरों (मुकुटधारियों) में मुकुट भी झुके और रहती दुनिया तक उनके नाम का डंका बजता रहेगा। उनकी शहादत को कभी भुलाया नहीं जा सकेगा।"

अकाली फूला सिंघ जी के महान् एवं विराट व्यक्तित्व और परोपकारी, देश-प्रेम के कार्यों के बारे में जितना भी कहा-लिखा जाए, वह कम है। ऐसे सच्चे व निर्भीक आगू की आज भी सिक्ख कौम को बेहद ज़रूरत है। ताकि समय-समय हमारा मार्गदर्शन करता रहे। सभी को एकजुट होना चाहिए।

महान् सिक्ख जरनैल : सरदार बघेल सिंघ करोड़ासिंघिया

*-डॉ. राजेंद्र सिंघ**

अठारहवीं शताब्दी के सिक्ख अपने अनुपम वीरता, पवित्र आचरण और आदर्श विचारधारा के कारण सिक्ख इतिहास के सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों में गिने जाते हैं। अठाहरवीं शताब्दी के इन महान् और आदर्श योद्धाओं में एक बड़ा ही महत्त्वपूर्ण और उल्लेखनीय नाम सरदार बघेल सिंघ करोड़ासिंघिया का है। आप वे महान् सिक्ख जरनैल हैं जिन्होंने दिल्ली फ़तहि करके लाल किले पर 'निशान साहिब' फहराया और 'खालसा' को अपूर्व गौरव प्रदान किया। यही नहीं सरदार बघेल सिंघ का सिक्का रुहेलखंड की पूर्वी सीमाओं और आगरा-इटावा तक चलता था। वास्तव में सिक्खों के प्रभाव को यमुना-पार के क्षेत्रों तक ले जाने वाले सिपहसालारों में सरदार बघेल सिंघ सबसे प्रमुख रहे हैं।

सिक्ख इतिहास और परंपरा में सरदार बघेल सिंघ के जन्म/जन्म-स्थान आदि के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती। भाई कान्ह सिंघ नाभा कृत 'महान कोश' और अन्य विद्वानों तथा इतिहासकारों के द्वारा मात्र यही उल्लेख मिलता है कि आप श्री अमृतसर ज़िले के 'झबाल' कसबे के रहने वाले थे। सन् १७४८ में जब मिसलों की स्थापना हुई तो सरदार करोड़ा सिंघ ने अपना एक अलग जत्था बनाया जो सरदार साहिब के नाम पर 'करोड़ासिंघिया' मिसल के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सरदार करोड़ा सिंघ पहले करोड़ी मल सेठ थे। आपने नवाब कपूर सिंघ जी से 'अमृत छका' और सिंघ सज कर सरदार करोड़ा सिंघ कहलाए। इस मिसल का असली दबदबा जलंधर के दोआबा क्षेत्र में था परंतु धीरे-धीरे करोड़ासिंघिया मिसल के शूरवीरों ने सतलुज पार के इलाकों में भी अपना अधिकार जमा लिया था। इस मिसल ने कई बार अहमदशाह अब्दाली के दांत भी खट्टे किए। जत्थेदार मसतान सिंघ और सरदार कर्म सिंघ इस मिसल के श्रेष्ठ योद्धाओं में से थे। सरदार बघेल सिंघ करोड़ासिंघिया सन् १७४८ ई. में इस मिसल में शामिल हुए थे। इस समय यह मिसल 'तरुणा दल' (३५-४० से कम उम्र वाले सिंघों का दल) का अंग थी। अत: इस हिसाब से सरदार बघेल सिंघ का जन्म लगभग सन् १७२५-३० ई. के आसपास ही हुआ होगा।

सरदार बघेल सिंघ करोड़ासिंघिया अपनी मिसल के एक बेहद सक्रिय और नामवर योद्धा थे। इसीलिए सन् १७६१ में जब सरदार करोड़ा सिंघ अकाल चलाना कर गए तब सरदार बघेल सिंघ को मिसल का जत्थेदार नियुक्त किया गया।

सरदार बघेल सिंघ की विजयें : जत्थेदार बनते ही सरदार बघेल सिंघ ने अपनी मिसल की शक्ति बढ़ानी आरंभ कर दी। बढ़ते-बढ़ते इस जत्थे की गिनती लगभग ३०,००० सिंघों तक जा पहुंची। सरदार साहिब ने सतलुज पार के पूरबी इलाकों में अपनी शक्ति बढ़ानी शुरू की। एक के बाद एक मुहिमें आरंभ हो गईं। सन् १७६४ ई. में जब सिक्खों ने जैन ख़ान को मार कर

**१/३३८, 'स्वप्नलोक', दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना), पंजाब-१४११०१, फोन : ९४१७२-७६२७१*

सरहिंद फ़तहि किया तब करनाल के उत्तरी इलाके-- छलौदी, जमीतगढ़, खुरदीन और करोड़िया मिसल के कब्ज़े में आ गये। फरवरी, १७६४ ई. में सरदार जस्सा सिंघ आहलूवालिया और सरदार बघेल सिंघ के नेतृत्व में सिक्खों ने यमुना पार के इलाकों पर धावा बोला। इन्हीं दिनों रुहेले नवाब नज़ीबुद्दौला के विरुद्ध सिक्खों ने राजा जवाहर मल की मदद की। अहमदशाह अब्दाली भी सिक्खों के छापामार युद्ध से बेहद परेशान हुआ था। मई, १७६७ में जब सरदार बघेल सिंघ के नेतृत्व में सिक्खों ने यमुना पार करके नज़ीबुद्दौला पर हमला किया तो अब्दाली ने अपने एक सिपहसालार ज़हान खां को नज़ीब की मदद के लिए भेजा। शामली और कोराना में ज़हान खां और सिक्खों में घमासान युद्ध हुआ। सिक्ख दुश्मन के दांत खट्टे करते हुए निकल गए। सन् १७७३ ई में सिक्खों ने सरदार कर्म सिंघ और सरदार बघेल सिंघ के नेतृत्व में जलालाबाद को फ़तहि किया। सन् १७७५ ई में सिक्खों ने सरदार राय सिंघ भंगी, सरदार तारा सिंघ घेबा और सरदार बघेल सिंघ के नेतृत्व में यमुना पार की और लखनौती, गंगोह, देवबंद, ननौता और गौसगढ़ जैसे शहरों पर कब्ज़ा कर लिया। यहां के हाकिम ज़ाबता खां ने ५०,००० नज़राना देकर सिक्खों से सुलह कर ली। सरदार बघेल सिंघ ने ज़ाबता खां को अमृत छकाया और उसका नाम धर्म सिंघ रख दिया। यहां तक कि इसका बेटा गुलाम कादिर भी सिंघ सजा और प्यारा सिंघ बन गया। अब रुहेले सिंघों के मित्र बन गए थे। सन् १७७६ में रुहेलों द्वारा मदद की प्रार्थना करने पर सिक्खों ने सहारनपुर के फौजदार अबुल कासिम, जो मुगल बादशाह के वज़ीर अब्दुल आहिद का भाई था, पर धावा बोला और मुजफ्फरनगर के निकट अमीर नगर में उसे मौत के घाट उतार दिया। सन् १७७९ ई. में पटियाला के राजा अमर सिंघ ने सरदार बघेल सिंघ के कुछ इलाकों पर कब्ज़ा कर लिया। सरदार साहिब ने अमर सिंघ को सोधने के लिए पटियाला पर हमला कर दिया। स्थिति बिगड़ती देख राजा अमर सिंघ ने संधि कर ली और अपने पुत्र साहिब सिंघ को सरदार बघेल सिंघ से अमृत छकवाया। इस प्रकार सरदार बघैल सिंघ के नेतृत्व में सिक्खों ने गंगा-यमुना दो आब से लेकर रुहेलखंड में पीलीभीत तक और दक्षिण-पूर्व में अलीगढ़, खुर्जा, चंदौसी, आगरा, इटावा तक अपना कब्ज़ा जमाया। इन दिनों सरदार बघेल सिंघ का इतना दबदबा था कि पंजाब और दिल्ली के मध्य आवागमन के लिए सरदार साहिब की आज्ञा लेनी पड़ती थी।

दिल्ली फ़तहि की दास्तान : सरदार बघेल सिंघ करोड़ासिंघिया की सारी जीतों में सबसे महत्त्वपूर्ण 'दिल्ली-विजय' है। मार्च, १७८३ ई में सरदार साहिब ने अन्य सिक्ख जरनैलों और जत्थों को लेकर दिल्ली पर आक्रमण किया और उसे कुछ ही समय में फ़तहि करके लाल किले पर खालसे का 'निशान साहिब' फहरा दिया। मुगल बादशाह आलम द्वितीय ने अपने वज़ीर आज़म गौहर को संधि करने के लिए भेजा। संधि की शर्तें तय हुईं कि खालसे को तीन लाख जुर्माना अदा किया जाये, शहर के दीवानी हक सरदार बघेल सिंघ को दिए जायें और जब तक दिल्ली में सभी ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान की स्थापना न हो जाये तब तक सरदार साहिब ४००० सिक्खों के जत्थे के साथ दिल्ली में ही रहें।

दिल्ली में ऐतिहासिक गुरुद्वारों की स्थापना : सरदार बघेल सिंघ गुरु, गुरु-घर और गुरमति के प्रति किस कदर समर्पित थे, इसका एहसास

उनके द्वारा गुरुद्वारा साहिबान की स्थापना के लिए किए गए प्रयासों से होता है। संधि के तुरंत बाद सरदार साहिब ने दिल्ली में सिक्ख इतिहास से संबंधित महत्त्पूर्ण स्थानों की खोज शुरू कर दी। सबसे पहले माता सुंदरी जी और माता साहिब कौर जी के ठहरने के स्थान पर गुरुद्वारा साहिब का निर्माण आरंभ करवाया गया। इसके साथ अष्टम पातशाह साहिब श्री गुरु हरिक्रिशन साहिब जी के ज्योति-जोत समाने के स्थान पर गुरुद्वारा साहिब तामीर करवाया गया। आज यह गुरुधाम 'गुरुद्वारा बंगला साहिब' के नाम से प्रसिद्ध है। सरदार बघेल सिंघ ने दिल्ली में वह स्थान भी ढूंढ निकाला जहां शहीदी के बाद नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब जी के शीश रहित पावन शरीर का दाह-संस्कार किया गया था। दरअसल एक सिक्ख भाई लक्खी शाह ने गुरु जी की पावन देह को अपने घर में रखकर, घर को ही आग लगा दी थी। सरदार साहिब ने इस पवित्र स्थान पर गुरुद्वारा साहिब का निर्माण आरंभ करवाया। यह गुरुधाम 'गुरुद्वारा रकाब गंज साहिब' के नाम से विख्यात हुआ।

सबसे कठिन काम उस स्थान की तलाश थी जहां नवम् पातशाह को शहीद किया गया था। बड़ी कोशिशों के बाद उस मशक वाले की बेटी मिल गई जिस मशक वाले ने शहादत के समय गुरु जी के पावन शरीर को स्नान करवाया था। मशक वाले की बेटी अब बेहद बूढ़ी हो चुकी थी। उस वृद्धा ने गुरु जी की शहादत वाले स्थान की पहचान करके निशानदेही की। छोटी-सी सैनिक मुठभेड़ के बाद सरदार साहिब ने उस स्थान को अपने कब्ज़े में ले लिया और वहां एक चबूतरा बना कर गुरुद्वारा साहिब के निर्माण की प्रक्रिया शुरू कर दी। यह गुरुधाम आज 'गुरुद्वारा सीस गंज साहिब' के नाम से से विश्व विख्यात है। बाद में जींद रियासत के शासक राजा सरूप सिंघ ने सन् १८६० ई के आसपास गुरुद्वारा सीस गंज साहिब की वर्तमान इमारत तामीर करवाई।

अज़ब अणखीले और स्वाभिमानी योद्धा : सरदार बघेल सिंघ जब दिल्ली से वापस आने लगे तब बादशाह शाह आलम ने उनसे मिलने की इच्छा की। स्वाभिमानी सरदार साहिब ने बादशाह के हज़ूर में आने से इन्कार कर दिया तो बादशाह ने कहा कि वे जैसे आना चाहते हैं, वैसे आयें। सरदार बघेल सिंघ बड़ी शान के साथ हाथी-घोड़ों पर सवार जत्थे के साथ बादशाह से मिलने लाल किले में पहुंचे। सरदार साहिब ने दरबार में पहुंच कर गरज कर फ़तहि बुलाई और जैकारा छोड़ा। बादशाह ने अपने सभी लोगों को उसी प्रकार फ़तहि का जवाब फ़तहि से देने को कहा। सरदार साहिब को बादशाह के समक्ष ही आसन प्रदान किया गया। रुखसती के वक्त बादशाह ने सरदार बघेल सिंघ को एक हाथी, सोने की जंज़ीर, पांच घोड़े और बहुत सारे तोहफे देकर विदा किया। सरदार साहिब के विचार सुनकर बादशाह ने कहा कि यह ख़बर गलत उड़ाई है कि सिक्ख लुटेरे हैं। ये तो ऊंचे चरित्र वाले आदर्श लोग हैं।

आदर्श चरित्र वाले : सरदार बघेल सिंघ अत्यंत उच्च एवं आदर्श चरित्र वाले व्यक्ति थे। आप मज़लूम की रक्षा करने के लिए हमेशा तत्पर रहते। सन् १७७३ ई में सरदार साहिब को ये ख़बर मिली कि जलालाबाद के हाकिम मुहम्मद ख़ान ने एक ब्राह्मण की कन्या को जब्रदस्ती अगवा कर लिया है, तब आप ने एक हज़ार किलोमीटर की दूरी की परवाह न की और

(शेष पृष्ठ ४९ पर)

शहीद भाई सुबेग सिंघ-भाई शाहबाज़ सिंघ

*-स. सिमरजीत सिंघ**

भाई सुबेग सिंघ का जन्म पश्चिमी पंजाब के लाहौर ज़िले की चूहणीआं तहसील के जंबर गांव के निवासी राय भागा (संधू) के घर हुआ। आजकल जंबर गांव पाकिस्तान के पंजाब राज्य के ज़िला कसूर का गांव है, जो लाहौर-मुलतान सड़क पर फेरू से आगे छांगा मोड़ पर आबाद है। इस गांव को पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी के पावन चरणों का स्पर्श प्राप्त है। इस गांव में गुरु साहिब बहिड़वाल से चलकर पहुंचे थे। यहां गुरु साहिब ने भाई किदारा, भाई समद्धू, भाई मखंडा, भाई तुलसा, भाई लालू आदि सिक्खों को चरण-पाहुल देकर गुरसिक्खी बख़्शी थी। इस गांव में गुरु जी की आमद की याद में गुरुद्वारा थंम साहिब सुशोभित है। भाई सुबेग सिंघ का घराना सरकारी ठेकेदारी का काम करता था। ये अरबी-फारसी भाषा के उच्च विद्वानों में गिने जाते थे। सरकार में इनका अच्छा मान-सम्मान था। भाई सुबेग सिंघ को उनके पिता जी ने अच्छी तालीम हासिल करवाई। उन्होंने भी अपने पूर्वज़ों की तरह सरकार से ठेके लेकर अपना काम बड़ी ही मेहनत तथा ईमानदारी से करना शुरू किया। भाई सुबेग सिंघ भजन-बंदगी करने वाले तथा अच्छे आचरण वाले व्यक्ति थे। इनका सिक्खों के मन में बहुत सत्कार था। 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में ज़िक्र है :

तुरक उसे खालसो वल तोरैं,
खालसा भी तिस को भल लोरैं।
कोई तुरकन परै ज़रूरी काम,
तौ उस भेजैं कर कर सलाम।

भाई सुबेग सिंघ के घर भाई शाहबाज़ सिंघ ने जन्म लिया। जब भाई शाहबाज़ सिंघ की आयु पढ़ने योग्य हो गई तो उन्हें पढ़ने के लिए लाहौर की एक मसजिद में भेजा गया। भाई शाहबाज़ सिंघ बहुत ही सूझवान थे। उन्होंने सिक्ख धर्म एवं सिक्ख इतिहास के बारे में जानकारी अपने माता-पिता से प्राप्त की हुई थी।

बाबा बंदा सिंघ बहादुर की शहीदी के बाद सिक्ख बहुत कठिनाइयों में समय काट रहे थे। सिक्खों पर हकूमत का कहर टूट पड़ा था। हज़ारों ही निर्दोष सिक्खों को असहनीय यातनायें देकर शहीद किया जा रहा था। सिक्खों के सिरों के दाम लगाकर उनका नामो-निशान मिटाने के लिए ढिंढोरा पीटा जा रहा था। जब सिक्खों पर यह भयानक समय चल रहा था तो उस समय कुछ इसलामिक वर्ग भी राजनीतिक नीतियों से तंग-परेशान थे। फलस्वरूप कई रियासतों के सैयदों ने बगावत कर दी। बादशाह फरुख्सियर इस बगावत को दबाने में व्यस्त हो गया। यह सिक्खों के लिए सुनहरी मौका था। वे जंगलों-पहाड़ों से निकलकर मैदान में आकर अपने गुरु-घरों की सेवा-संभाल करने लग गए। सिक्खों ने १७८१ बिक्रमी (१७२४ ई.) की वैसाखी श्री अमृतसर में खुलकर मनाई, जिसमें भारी इकट्ठ हुआ। इस समय के दौरान सिंघों की भाई तारा सिंघ वां की जत्थेदारी तले शाही फौज के साथ झड़प हुई, जिसमें भाई तारा सिंघ शहीदी प्राप्त कर गए। इसके बाद सिंघों ने शाही फौज़ पर यकायक हमले करने शुरू कर दिए। सिंघों के यकायक हमलों से तंग आकर १७३३

**उप सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६; फोन : ९८१४८-९८२२३*

ई. में जकरिया ख़ान ने सिक्खों के प्रति सख़्ती करने के बारे में तथा अपनी मुश्किलों सम्बंधी लाहौर से दिल्ली के बादशाह को लिख भेजा। उसने भाई सुबेग सिंघ की सलाह से सुझाव लिखा कि सिक्खों को जागीर दे दी जाये तथा उनके किसी आदमी को नवाब चुनकर साथ मिला लिया जाये। बादशाह ने ज़करिया ख़ान की सलाह मान ली।

ज़करिया ख़ान ने सिक्खों के साथ संधि करने के लिए एक लाख रुपए की जागीर, नवाबी का खिताब, ख़िलअत, नज़राने आदि देने का फैसला किया। इस काम के लिए भाई सुबेग सिंघ को अपना अधिवक्ता बनाकर श्री अमृतसर खालसे की कचहरी में भेजा। श्री अकाल तख़्त साहिब के संरक्षण में इकट्ठे हुए खालसा पंथ ने पहले तो यह सब कुछ स्वीकार करने से इन्कार कर दिया, जैसे कि 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में ज़िक्र है :

हम को सतिगुर बचन पातिशाही,
हम को जापत ढिग सोऊ आही ॥३६॥
हम राखत पातिशाही दावा,
जां इतको जां अगलो पावा।
जो सतिगुर सिक्खन कही बात,
होगु साईं नहिं खाली जात ॥३७॥

किंतु भाई सुबेग सिंघ के बार-बार कहने तथा समझाने पर सिक्खों ने नवाबी लेनी कबूल कर ली। अधिकांश सिक्ख अपने नाम पर नवाबी लेने के लिए तैयार नहीं थे। अंत में सब सिक्खों ने प्रस्ताव पारित करके स. कपूर सिंघ फैजलपुरिये को नवाब की पदवी लेने के लिए कहा। स. कपूर सिंघ ने खालसे की आज्ञा से पांच सिंघों के चरणों को नवाबी की ख़िलअत स्पर्श कराकर नवाबी कबूल कर ली। इसके साथ ही खालसे को दीपालपुर, कंगणवाल, झबाल परगनों की जागीर दी गई। इसकी एक लाख रुपये वार्षिक आमदन थी। 'श्री गुर पंथ प्रकाश' के अनुसार :

सिंघ कपूर झलै पक्खो थोई।
क्रिपा नज़र पंथ उस वल होई। . . .
पंच भुजंगीअन चरनी छुहाइ।
धरो सीस मोहि पवित्र कराइ ॥४७॥

भाई सुबेग सिंघ के यत्नों का सदका कुछ समय के लिए पंजाब के माहौल में शांति आ गई। भाई सुबेग सिंघ को सूबेदार जकरिया ख़ान ने लाहौर के कोतवाल के पद पर नियुक्त कर दिया। भाई सुबेग सिंघ ने कोतवाल बनने पर लोगों को यातनाएं देकर मृत्यु के घाट उतारने की सज़ा बंद कर दी। मौत की सज़ा खास हालातों में केवल फांसी, कत्ल या तोप के आगे बांधकर उड़ा देने की ही जारी रखी। शहीद सिंघों के सिर, जो किले की दीवारों पर मीनारों की तरह चिने हुए थे या कुएं में फेंके हुए थे, सबको निकलवाकर उनका अंतिम संस्कार करवा दिया। बहुत-सी बुरी रीतियां बंद करवा दीं। उन्होंने वर्ष भर अपना काम बहुत मेहनत, ईमानदारी तथा न्यायपूर्ण ढंग से किया। इनके काम करने के ढंग से लाहौर के निवासी बहुत खुश थे। जब लाहौर में सिक्खों को कत्ल कर दिया जाता था तो इनका मन बहुत दुखी होता था। ये लोग सिक्खों की मृतक देहों को इकट्ठा करके उनका अंतिम संस्कार कर देते थे तथा उनकी यादगारों की निशानदेही कर देते थे। भाई सुबेग सिंघ ने लाहौर में ऐसी निशानदेहियों पर सिक्खों की कई यादगारें भी तामीर करवाईं।

१७४५ ई में ज़करिया ख़ान की मृत्यु के बाद लाहौर का सूबेदार यहीआ ख़ान को नियुक्त किया गया। यहीआ ख़ान ने भी सिक्खों पर अत्याचार करने शुरू कर दिए। वो शुरू से ही भाई सुबेग सिंघ के साथ नफ़रत करता था। उसने भाई सुबेग सिंघ के विरुद्ध शिकायतें सुननी शुरू कर दीं।

जिस मसजिद में भाई शाहबाज़ सिंघ विद्या हासिल करने के लिए जाते थे वहां एक दिन बहस के दौरान आप ने सिक्ख धर्म के बारे में

अपने विचार पेश करके सभी को अपनी योग्यता का लोहा मानने के लिए मज़बूर कर दिया। इस ज्ञान-चर्चा में बहुत सारे विद्वानों को मुंह की खानी पड़ी। इसकी ख़बर मौलवी तक भी पहुंची। मौलवी ने उन पर मुसलमान बनने के लिए ज़ोर डाला। कई तरह के लालच दिए गए, परंतु वे टस से मस न हुए। स. रत्न सिंह (भंगू) 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में लिखते हैं:

जैसे तुमै दीन है पयारा।
तैसे ही है धरम हमारा।

मौलवी ने सूबेदार यहीआ ख़ान के आगे शिकायत कर दी। यहीआ ख़ान ने तफतीश करने के लिए भाई सुबेग सिंघ तथा भाई शाहबाज़ सिंघ को कचहरी में पेश होने का हुक्म दिया। सूबेदार ने भी उनको इसलाम धर्म धारण करने के लिए मनाने के बहुत-से प्रयत्न किए, किंतु भाई शाहबाज़ सिंघ न माने। 'श्री गुर पंथ प्रकाश' के अनुसार :

सुबेग सिंघ फड़ जंबरों मंगाया।
तिसका बेटा साथ फड़ाया।

सिक्खों की मदद करने के दोष में भाई सुबेग सिंघ को भी कैद कर लिया गया तथा इसलाम धर्म धारण करने के लिए ज़ोर डाला गया। 'पंथ प्रकाश' के अनुसार :

कहयो न्वाब तुम आवो दीन,
लेवो दाम औ काम औ ज़मीन ॥७॥
नहीं तो मरनों कर मनजूर,
चढ़ो चरख गिर होवो चूर।

अंत में इन दोनों पिता-पुत्र को पकड़कर जेल में बंद कर दिया गया। इनको इसलाम धर्म कबूल करवाने के लिए हर कोशिश की गई, किंतु ये दोनों योद्धा अपने धर्म पर डटे रहे और हर तरह के कष्ट झेलने के लिए तैयार हो गए। भाई सुबेग सिंघ तथा भाई शाहबाज़ सिंघ ने हाकिमों को कहा कि "जिस तरह तुम्हें अपना धर्म प्रिय है, उसी तरह हमें भी अपना धर्म प्यारा है। मृत्यु का हमें कोई डर नहीं, मृत्यु ने तो आना ही आना है। यदि धर्म परिवर्तन करने से भी मृत्यु टल नहीं जाती, तो फिर अपने ज़मीर को मारकर जीना किस काम का?" ज्ञानी गिआन सिंघ 'पंथ प्रकाश' में लिखते हैं :

तुरक भए जे मरै न कबही तौ हम तुरक बनैहैं।
मौत रहे जे तहि भी सिर पर तो कयों धरम तजैहैं।

'तवारीख गुरू खालसा' के कर्ता ज्ञानी ज्ञान सिंघ लिखते हैं कि भाई सुबेग सिंघ तथा भाई शाहबाज़ सिंघ को चरखड़ियों पर चढ़ाने से पहले घोर यातनायें दी गईं। उनको नंगा करके उल्टा लटकाया गया; कोड़े मारे गए तथा अन्य कई प्रकार के कष्ट दिये गये।

यहीआ ख़ान ने इनको चरखड़ी पर चढ़ाकर शहीद करने का फरमान काज़ी द्वारा जारी करवा दिया। पहले भाई सुबेग सिंघ को चरखड़ी पर चढ़ाया गया। भाई सुबेग सिंघ पर कोई सख़्ती चलती न देखकर उनको चरखड़ी से उतारकर उनके नौजवान सपुत्र भाई शाहबाज़ सिंघ को चरखड़ी पर चढ़ाकर यातनाएं देने का हुक्म दिया। भाई रत्न सिंह (भंगू) के अनुसार:

तब नवाब ऐसे कहयो, या को लेहु उतार।
याके बेटे को टंगयो, याहू को जु दिखार ॥६॥

जल्लादों ने भाई सुबेग सिंघ की आंखों के सामने भाई शाहबाज़ सिंघ को चरखड़ी पर चढ़ाकर घुमाया। इन दोनों गुरसिक्खों ने अकाल पुरख के हुक्म अंदर सिमरन करते हुए सारी यातनाएं झेलीं। 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में ज़िक्र है :

उचे चाढ़ फिर बहुत घुमाया,
वाहिगुरू तिन नांहि भुलाया।
जयों जयों मुख ते गुरू उचारे,
अकाल अकाल कर ऊच पुकारे ॥४॥

चरखड़ी की दो बार की मार से उनका सारा शरीर जख्मी हो गया था। उनका मास

ज़ंबूरों से तोड़ा गया। ऐसी दर्दनाक यातनायों को देखकर हर एक ने मुंह में उंगली डाली हुई थी। जल्लाद यातनाएं दे-देकर थक चुके थे। आखिर, उन्होंने भाई शाहबाज़ सिंघ को बंदीखाने में भेज दिया।

एक नई चाल द्वारा दोनों पिता-पुत्र को एक दूसरे से अलग करके यह अफवाह फैला दी कि दोनों ने इसलाम धर्म कबूल कर लिया है। भाई शाहबाज़ सिंघ को कहा गया कि "तू अभी बच्चा है। तेरी उम्र दुनिया देखने की है। तेरे पिता ने तो अपनी उम्र भोग ली है। तू समझदार और फारसी पढ़ा हुआ है, इसलिए तुझे जिद छोड़कर इसलाम धर्म कबूल कर लेना चाहिए। 'पंथ प्रकाश' में ज़िक्र किया गया है :

दीन मुहंमदी कर कबूल तू सरदारी बड पाहैं।
तूंतो पढयो फारसी अरबी बुद्धीवान दिसैहैं।
अभि नवेस कालेस एहु हठ छोड कयोन सुख लैहैं।
खाइ पैन लिय पिदर तुमारे बूढा मरनों चैहैं।
खांण पीण दी उमर तुमारी तूं कयों जिंदड़ी दैहैं।
मजब धरम पर मूरख मरहैं चत्रन मरते कोहैं।

भाई सुबेग सिंघ पर ज़ोर भी डाला गया कि वो इसलाम कबूल करके दुनिया में अपनी जड़ बनाए रखे। इकलौते पुत्र के शहीद हो जाने के बाद दुनिया में उनके बाद कोई उनका नाम लेने वाला भी नहीं बचेगा। भाई सुबेग सिंघ ने धर्म गंवाकर, मर-मर कर ज़िंदा रहने की बजाय गर्व से धर्म पर दृढ़ रहते हुए मरने को प्राथमिकता दी। 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में बताया गया है :

सिक्खन काज सु गुरू हमारे,
सीस दीओ निज सन परवारै ॥२७॥
चारे पुतर जान कुहाए,
सो चंडी की भेंट कराए।
हम कारन गुर कुलहि गवाई,
हम कुल राखैं कौण बडाई ॥२८॥

अर्थात् गुरु साहिबान ने हमारे लिए चारों पुत्र कुर्बान कर दिए, सरवंश वार दिया। मैं अपनी कुल रखूं, यह कौन-सी कुल का यश है?

भाई सुबेग सिंघ का उत्तर सुनकर यातनाओं का दौर फिर शुरू हो गया। बुरी तरह से मार-पीट की गई। पिता-पुत्र दोनों को इकट्ठा बांधकर, चरखड़ी पर चढ़ाकर घुमाया गया। दोनों को आखिरी दम तक चरखड़ी पर घुमाते हुए इसलाम कबूल करने के लिए कहा जाता रहा, परंतु ये दोनों आखिरी दम तक यही बोलते रहे :

सुबेग सिंघ तब कुरनश करी,
धंन चरखड़ी धंन यह घरी ॥८॥
चाढ़ चरखड़ी हमैं गिरावो,
सो अब हम को ढील ना लावो।
हम तो गुर के सिक्ख सदावैं,
गुर के हेत प्राण भल जावैं ॥९॥

(श्री गुर पंथ प्रकाश)

यह घटना १७४५ ई की है जब पिता-पुत्र दोनों को लाहौर में चरखड़ी पर चढ़ाकर शहीद कर दिया गया। भाई शाहबाज़ सिंघ की आयु उस समय मात्र १८ वर्ष की थी। स. रत्न सिंघ भंगू 'श्री गुर पंथ प्रकाश' में लिखते हैं :

सुबेग सिंघ जंबर सुत नाल ।
चढ़दै चरख जिन जपयो अकाल।
धन धन वै जिन सिदक न हारा।
दीआ सीस मुख गुरू उचारा।

स्रोत सूचना :

१) स: रत्न सिंघ (जग्गी), सिक्ख पंथ कोश
२) भाषा विभाग पंजाब, पंजाब कोश
३) ज्ञानी ज्ञान सिंघ, तवारीख गुरू खालसा
४) प्रिं सतिबीर सिंघ, अठारहवीं सदी दी बीर परंपरा दा विकास
५) प्रिं तेजा सिंघ-- डॉ गंडा सिंघ, सिक्ख इतिहास
६) स. रत्न सिंघ (भंगू), श्री गुर पंथ प्रकाश
७) ज्ञानी ज्ञान सिंघ, पंथ प्रकाश
८) भाई कान्ह सिंघ नाभा, महान कोश

नशा नाश की जड़ है

*-स. सुरजीत सिंघ**

तंबाकू ने हमारी संस्कृति और सभ्यता की जड़ों को झकझोर कर रख दिया है। युवाओं को अपनी कापियों-किताबों के लिए भले ही कुछ दूर जाना पड़े, परंतु पान, गुटखा, तंबाकू हर सड़क, गली, नुक्कड़ पर सहज ही उपलब्ध हो जाएगा। यह निश्चित है कि नशे के दुष्परिणाम दूरगामी और विस्तृत होते हैं, किंतु मनुष्य उन्माद में इन्हें भुला कर निरंतर गलती करता चला जाता है जिससे अंत में निराशा ही हाथ लगती है। १० साल के बच्चे से लेकर बड़ी उम्र के बुजुर्ग व्यक्ति तक के मुख से गुटखे, तंबाकू के पीक निकलते और बीड़ी, सिगरेट से कोयले के रेल इंजन की भांति धुआं निकलते हर स्थान पर, हर पल, हर घड़ी देखा जा सकता है। आश्चर्य है कि देश के जिन बच्चों तथा युवकों ने अभी 'समाज' शब्द का अर्थ तक नहीं जाना है आज उन्होंने ही बड़ी आसानी से 'समाज' में व्याप्त नशे की बुराई को ग्रहण कर लिया है।

जब एक अभिभावक परिवार में बैठकर स्वयं गुटखा-पान चबाकर पीक इधर-उधर थूकता फिरता है, धूम्रपान कर ज़हरीला धुआं उगलता है तो क्या उसके लाड़ले बेटे अपने पिता का अनुसरण करते हुए ऐसा करने को उत्सुक नहीं होंगे? जरा सोचो! जब एक परिवार का मुखिया ही, अपने बच्चों के हाथों से बाहर से ऐसी अपत्तिजनक ज़हरीली सामग्री मंगवाता है, तो वह इन्सान परिवार के बच्चों के आदर्श के बीज कैसे बो सकता है? इससे भी अधिक चिंता की बात यह है कि कुछ महिलाएं भी इसमें भागीदार हैं। आवश्यकता है उन तमाम अभिभावकों को सोचने, विचारने और मनन करने की जो जाने-अनजाने में स्वयं तो इस भयंकर महामारी के शिकार हो चुके हैं, किंतु अपने बच्चों को भी अनायास ही इस गर्त में धकेल कर उनके हंसने, खेलने व स्वस्थ जीवन पर कुठाराघात कर, देश व समाज को भविष्य में मज़बूत आधार प्रदान करने के अपने अधिकार से वंचित किया जा रहा है, जो देश-द्रोह से कम नहीं है। बीड़ी, सिगरेट, तम्बाकू, गुटखा से भयानक रोग कैंसर के साथ-साथ उच्च रक्तचाप, हृदयघात, दमा, रक्तधमनियों में रक्त का जमाव, पेट दर्द, बदहजमी व अनेक चिंताओं को निमंत्रण मिल जाता है। अत: हमें अपनी संस्कृति व सभ्यता तथा पर्यावरण को शुद्ध, साफ, सुथरा और जीवन को स्वस्थ बनाए रखने के लिए इस महामारी को जानलेवा दुश्मन मानकर इससे निरंतर बचते रहना होगा। सरकार को समस्या की जड़ पर प्रहार कर तंबाकू की खेती पर ही रोक लगा देनी चाहिए, जिससे 'न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी' की कहावत के अनुसार न तम्बाकू होगा और न ही महामारी रहेगी, सब तरफ सुख-शांति और खुशहाली ही दिखेगी। तंबाकू का सेवन न करने वाले व्यक्ति को यह पूर्ण अधिकार प्राप्त है कि यदि

**५७-बी, न्यू कालोनी, गुमानपुरा, कोटा।*

कोई निर्लज्ज होकर उसके आस-पास धूमपान करता है तो वह बचाव के लिए तंबाकू सेवन करने वाले को ऐसा करने से रोक सकता है। सरकार ने इस संबंध में कानून बना रखा है और हर वर्ष ३१ मई को विश्व तंबाकू विरोधी दिवस भी मनाया जाता है। सरकारी कानून तो फाइलों में ही धूल चाटते रहते हैं और क्रियाविंत बिल्कुल भी नहीं हो पाते। सरकारी कार्यालय और सार्वजनिक स्थानों पर मात्र 'धूम्रपान निषेध' की लिखी तख्तियां ही टंगी रहती हैं। ऐसे दिवस इसलिए मनाए जाते हैं कि इन्हें प्रतीक मानकर साल भर चलने वाले प्रयासों की जांच की जाये, कमियों को पहचान कर सुधार लाया जाये ओर जोश से मुहिम चलाई जाए।

सार्वजनिक स्थानों पर बीड़ी, सिगरेट इत्यादि के विज्ञापन छापना तथा विज्ञापन प्रसारण करना अथवा लगाना, १८ वर्ष से कम आयु के व्यक्ति को बीड़ी, सिगरेट, सिगार इत्यादि बेचना, शिक्षण संस्थानों एवं विद्यालयों-महाविद्यालयों से एक सौ मीटर की परिधि में बीड़ी, सिगरेट, गुटखा एवं अन्य तंबाकू-युक्त सामग्री का किसी भी रूप में विक्रय, भंडारण एवं वितरण करना दंडनीय अपराध की प्रक्रिया में आता है। शिक्षण संस्थानों के आस-पास स्मैक आदि बेचने वाले तत्वों पर कड़ी नज़र रखी जाए। ऐसे अपराधों की पुनरावृत्ति होने पर न्यूनतम पांच सौ रुपए से लेकर अधिकतम एक हज़ार रुपए तक के आर्थिक दंड अथवा तीन माह तक के कारावास की सज़ा का प्रावधान है। अधिनियम की धारा १० के अंतर्गत ऐसे स्थानों के प्रभारी व्यक्तियों का यह दायित्व बनता है कि उस क्षेत्र में चेतावनी के रूप में 'धूम्रपान निषेध क्षेत्र, धूम्रपान वर्जित है, धूम्रपान दंडनीय अपराध है' इत्यादि लिखकर प्रदर्शित करें। राज्य सरकार को अधिनियम की धारा ३ के अंतर्गत यह अधिकार प्राप्त है कि वह किसी भी सार्वजनिक क्षेत्र को अधिसूचना जारी कर 'धूम्रपान वर्जित क्षेत्र' घोषित कर सकती है। अधिनियम की धारा १२ के अनुसार प्राधिकृत अधिकारी या उपनिरीक्षक पद के किसी भी पुलिस अधिकारी द्वारा अधिनियम का उल्लंघन करने वाले व्यक्ति को ऐसे प्रतिबंधित क्षेत्र में तुरंत बाहर खदेड़ा जा सकता है अथवा लिखित रिपोर्ट दर्ज करायी जा सकती है या उसे कानूनी प्रक्रिया में डाला जा सकता है। इसी प्रकार अधिनियम के अंतर्गत किसी भी व्यक्ति को यह अधिकार भी प्राप्त है कि वह धूम्रपान का विरोध कर धूम्रपान करने के दोषी व्यक्ति के विरुद्ध दंड-प्रक्रिया के लिए लिखित रिपोर्ट दर्ज करा सकता है अथवा कानूनी वाद प्रस्तुत कर सकता है। स्मरण रहे कि धूम्रपान एक विषैला ज़हर है, सामाजिक बुराई है जो मनुष्य के तन, मन, धन पर एक साथ डाका डालते हुए, उसके परिवार को तहस-नहस करके भी उसका पीछा नहीं छोड़ता।

यह कटु सत्य है कि युद्ध, अकाल अथवा महामारी ने भी शायद मानव जाति का इतना नुकसान नहीं किया जितना कि नशों ने। तभी तो बारंबार चेतावनी दी जाती है कि नशों का सेवन करना अपनी अकाल मृत्यु को आमंत्रित करना है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार तंबाकू का सेवन लगभग ३० घातक जानलेवा बीमारियों को निमंत्रण देता है। यह सही है कि सरकार को तंबाकू से ६ हज़ार करोड़ रुपए प्रतिदिन आमदनी होती है, किंतु

इसके विपरीत तंबाकू-जनित बीमारियों के उपचार पर भी २७ हज़ार करोड़ रुपए प्रतिवर्ष अर्थात् ७४ करोड़ रुपए प्रतिदिन खर्चा भी हो रहा है। आश्चर्य है कि सरकार आमदनी से चार गुना से भी अधिक खर्चा तंबाकू के दुष्परिणामों का मुकाबला करने पर व्यय कर रही है, फिर भी इसे खुली छूट प्राप्त है। इस महामारी से सिर्फ भारतवर्ष में ही औसतन लगभग २२०० मौतें प्रतिदिन हो रही हैं। टोकियो, जापान के शोधकर्ताओं की विस्तृत जांच-अध्ययन की रिपोर्ट के अनुसार धूम्रपान करने वालों की संगत-मात्र से ही धूम्रपान नहीं करने वालों में हृदय रोग तथा मृत्यु का खतरा ३० प्रतिशत तक बढ़ जाता है। बस इतना ही नहीं, धूम्रपान के धूएं के सम्पर्क में मात्र आधा घंटे ही रहने से धूम्रपान न करने वालों के हृदय का रक्त संचार बुरी तरह से प्रभावित हो जाता है। यह बात अन्य अध्ययनों से भी प्रमाणित हो जाती है। नशे से व्यक्ति की सोचने-समझने की शक्ति क्षीण होती चली जाती है, जिससे आंतरिक चेतना प्रभावित होती है और वह विवेकहीन होने लगता है तथा निरंतर पतन की ओर जाने के साथ-साथ उसे विभिन्न जानलेवा बीमारियां भी आ घेरती हैं। इसलिए बारंबार स्मरण कराया जाता है-- 'पान, गुटका, चरस, तंबाकू, तन, मन, धन सबके हैं डाकू।' अतः तंबाकू पर लगनी चाहिए पूरी तरह पाबंदी।

नशा मनुष्य का खून चूस-चूसकर उसे निर्बल, कमज़ोर कर देता है। साथ ही साथ उसके धन पर डाका डालकर उसे कंगाल और निर्धन भी बना देता है। नतीजतन स्वास्थ्य, धन और परिवार तीनों की एक साथ बर्बादी अर्थात् नुकसान ही नुकसान। आत्म-ज्ञान, आत्म-संयम और आत्म-विश्वास से जो जीवन को सबलता प्राप्त होती है वह नशे के सेवन से निरंतर क्षीण होती चली जाती है, इसी लिए तो सिक्ख धर्म ने इसको पूर्ण रूप से निषेध किया हुआ है।

कनाडा में सिगरेट के हर पैकिट पर इसके सेवन से होने वाली बीमारियों और उनके बारे में ग्राफिक देना सरकारी स्तर पर अनिवार्य है। यही कारण है कि यहां के हर सिगरेट पैकिट पर दिल और दांत के अलावा फेफड़ों की बीमारियों के ग्राफिक भी दिए जाते हैं। सर्वेक्षण में पाया गया है कि इस तरह की चेतावनी लिखे पैकिट हाथ में आने पर धूम्रपान करने वाले व्यक्ति पर कुछ न कुछ प्रभाव पड़ता है और वह सोचने पर मज़बूर हो जाता है कि वह धूम्रपान करे अथवा नहीं, क्योंकि इसके दुष्परिणाम उसके सामने होते हैं। ब्रिटेन कैंसर रिसर्च ने भी पूरे यूरोपीय देशों में सिगरेट के हर पैकिट पर, 'आइए सिगरेट पीजिए और अपने फेफड़े एवं मुंह के लिए कैंसर मुफ्त ले जाइये' की चेतावनी लिखना अनिवार्य कर दिया है, जो धूम्रपान निषेध हेतु प्रभावी कदम है। यह परीक्षणों से प्रमाणित हो चुका है कि मात्र एक सिगरेट का सेवन करने से जीवन के छः मिनट तक कम हो जाते है, किंतु आश्चर्य है कि फिर भी तंबाकू का चलन दिन-प्रतिदिन प्रफुल्लित ही होता चला जा रहा है। फैसला आपके हाथों में है, ज़िंदगी चाहिए अथवा मौत?

अल्कोहल एक ऐसा पेय प्रतिष्ठित हो रहा है जिसका प्रचलन कम होने के स्थान पर दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। कोई उत्सव हो अथवा मेहमान-मित्र-पार्टी, अल्कोहल का प्रयोग तो तथाकथित स्टेट्स सिंबल समझा

जाने लगा है जबकि इससे होने वाली बीमारियों एवं हानियों की ओर बिल्कुल ही ध्यान नहीं दिया जाता। शराब पीना सामान्यता नशे का क्षणिक हिलोरा लेने के लिए, तनाव-मुक्ति के लिए अथवा मित्र-बंधुओं के साथ समय व्यतीत करने के लिए प्रारंभ होता है, जो कि आगे चलकर आदत बन पारिवारिक प्रतिरोधों के उपरांत, मनुष्य के न चाहने पर भी आजीवन उसका पीछा नहीं छोड़ती। मद्यपान से स्वास्थ्य पर कुप्रभाव के कारण सामाजिक व पारिवारिक क्षति, धन की बर्बादी, मानसिक तनाव एवं शारीरिक दुर्बलता होने लगती है। अन्य औषधियों का सेवन करने वाले व्यक्तियों को अल्कोहल से रिएक्शन हो सकता है इसलिए अल्कोहल के सेवन से बचे रहना ही उचित है।

मद्यपान से होने वाली विभिन्न बीमारियां मुख्यतया निम्नलिखित हैं :

१. लीवर में खराबी होने लगती है जो पाचन क्रिया को प्रभावित कर लीवर सिरोसिस एवं हेपेटाईटिस जैसे रोगों को आमंत्रित करती है।
२. अत्यधिक मद्यपान से लकवा या फालिस होने की सदैव आशंका बनी रहती है और रक्त में ट्राई ग्लिसराइड का स्तर बढ़ने लगता है।
३. शरीर में मोटापा होने लग जाता है।
४. उच्च रक्तचाप एवं हाइपरटेंशन बढ़ने में भी अल्कोहल का अधिकाधिक योगदान है।
५. हार्टअटैक या एन्जाइना की संभावना मद्यपान करने वालों को, मद्यपान न करने वालों की अपेक्षा अधिक रहती है क्योंकि मद्यपान से कॉरानरी हार्टडिसीज हृदय की मांसपेशियों को क्षति पहुंचती है जिससे हृदय की अनियमितता होने गल जाती है।
६. महिलाओं में अल्कोहल-सेवन से उपरोक्त बीमरियों के अतिरिक्त संतानोत्पत्ति की क्षमता में कमी तथा गर्भपात की संभावना बनी रहती है तथा ऐसी माताओं से जन्मे हुए बच्चे शारीरिक एवं मानसिक विकार से ग्रसित होते हैं।

यह वर्णनयोग्य है कि घटिया एवं अवैध रूप से निर्मित अल्कोहल अधिक घातक साबित हो सकती है, जैसा कि अक्सर देखने, सुनने एवं पढ़ने में आता रहता है। कच्ची शराब का तो कोई मापदंड अथवा पैमाना ही नहीं होता और न ही प्रयुक्त होने वाले पदार्थों की गुणवत्ता पर ध्यान दिया जाता है।

गुटखा, पान-मसाला, तंबाकू, सिगरेट, बीड़ी, अल्कोहल आदि सेवन वालों के तो यही पुरस्कार मिल सकते हैं :

प्रथम पुरस्कार	मौत
द्वितीय पुरस्कार	कैंसर
तृतीय पुरस्कार	टी. बी.

लाखों सांत्वना पुरस्कार घातक बीमारियां मिलने का स्थान बीड़ी-पान की दुकान और दारू के अड्डे

प्रतियोगिता-आयोजक	यमराज
पुरस्कार-वितरक	यमदूत

प्रतियोगिता-स्थल चिकित्सालय/शमशान घाट

गुरमति के अनुसार सिक्ख महिला

*-डॉ. जगजीत कौर**

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर आठ मार्च यू. एन. ओ. द्वारा ऐसा दिन निश्चित कर दिया गया है जब विश्व स्तर पर महिला वर्ग का सम्मान करने, नारी वर्ग के प्रति कल्याणार्थ योजनाएं बनाने और सरकारी व निजी स्तर पर विशेष योग्यता प्राप्त स्त्रियों के सम्मान की कुछ योजनाओं के लम्बे-चौड़े भाषण दिए जाते हैं, योजनाओं पर फाईल तैयार किए जाते हैं, जिन पर साल भर धूल पड़ी रहती है और पुन: आगामी वर्ष आठ मार्च के दिन झाड़-पोंछकर उन्हें क्रियान्वित करने की चर्चा चलती रहती है। भारतीय समाज में स्त्री जाति की क्या अवस्था है, वह कितना सम्मानपूर्ण जीवन जी रही है, यह हम सब जानते ही हैं।

यह विश्वव्यापी रिवायत सन् १९७३ से प्रारंभ हुई और वह भी अमेरिका जैसे प्रगतिशील देश की महिलाओं के विरोध, आंदोलनों और अनेक प्रकार के प्रदर्शनों के फलस्वरूप। एक सिक्ख जगत है जहां १५वीं शताब्दी में ही श्री गुरु नानक देव जी ने स्त्री जाति पर हो रहे जुल्मों का डटकर विरोध किया, मध्ययुगीन संकीर्ण मानसिकता का खंडन कर *'सभ परवारै माहि सरेषठ', 'बतीह सुलखणी', 'सोभावंती नार', 'जितु जंमहि राजान'* आदि विशेषणों से नारी जाति को सुसज्जित कर उसे समाज में स्वच्छंद और स्वतंत्र विचरण का अवसर दिया; पुरुष के समान हकों की अधिकारिणी बना उसे सम्मान, आदर व प्रतिष्ठा का केंद्र बनाया। नारी को आध्यात्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में पुरुष की सही अर्थों में सहभागिनी घोषित किया। स्त्री भी गुरु-शिक्षा पर चलकर, गुरमति धारण कर, शबद व संगत से जुड़कर अपना आत्मिक कल्याण कर सकती है। उसे परमपिता परमेश्वर की आराधना कर परम पद की अधिकारिणी बनने का अधिकार गुरदेव जी ने दिया।

स्त्री जाति ने भी गुरु की बख़्शिश से प्राप्त इस आज़ादी का पूरा सदुपयोग किया। सिक्ख इतिहास इस बात का साक्षी है कि गुरु-काल से लेकर गुरुद्वारा सुधार लहर, अकाली लहर के मोर्चों तक सिक्ख स्त्री ने गुरसिक्खों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर पंथक सेवा के प्रत्येक कार्य में पूरा योगदान दिया है, गौरवशाली स्वर्णिम इतिहास का सृजन किया है, जिसे हम प्रतिदिन अरदास में याद करते हैं-- "*जिंनां सिंघां सिंघणीआं ने धरम हेत सीस दित्ते।*" सिंघ शूरवीरों के साथ ही साथ वीरांगनाओं, जिन्होंने धर्म-आदर्श की पहरेदारी करते हुए जीवन कुर्बान किए, की भी वाहिगुरु अकाल पुरख से गुरु-दरगाह पर चिरकाल तक परवान चढ़े रहने की अरदास करते हैं।

ज़रा आज की परिस्थितियों पर निगाह डालें और देखें कि क्या आज भी ऐसी पूर्ण गुरमति-धारिणी सिक्ख स्त्रियां हमारे बीच हैं जो सिक्ख जगत के लिए रोल मॉडल बन सकती हैं? क्या कोई ऐसा स्त्री वर्ग है जो देश-विदेशव्यापी मानव समाज के सामने आदर्श बनकर खड़ा हो और सिक्ख समाज फख्र के साथ सिर ऊंचा कर उसका यशोगान कर सके? शायद इन सबका उत्तर 'न' में है। ऐसा क्यों हुआ? ऐसा

1801-C, Mission Compound, Near St. Mary's Academy, Saharanpur-247001 (U.P.) Mob. 94124-80266

इसलिए हुआ कि हम अपने आदर्शों से बहुत दूर चली गई हैं। हम भूल गई हैं कि हम उस निर्मल पंथ की सेवादार हैं जिनकी सेवा यह लगाई गई थी कि दिशा-भ्रमित हो चुके, भटक चुके पुरुषों, युवा बालक-बालिकाओं, बच्चों को गुरमति की दिशा देकर उन्हें 'गुरमति गाडी राह' के पथिक बनाना है। हम तो स्वयं भूल गई हैं कि हम उस बेबे नानकी जी की वारिस हैं जो सिक्ख धर्म की प्रथम सिक्ख बन, श्री गुरु नानक देव जी के पारब्रह्म स्वरूप का परिचय अपने चौगिरदे को दे स्वयं उस पर पहरा देती रहीं। उस माता खीवी '*नेक जन*' को हम भूल गए, जो दातू और दासू को सही मार्ग दिखाती रहीं। माता मनसा देवी जी, त्याग की मूर्ति बीबी भानी जी एवं सेवा-सत्कार की प्रारूप, '*बड जोधा*' की जननी माता गंगा जी के सेवा-परोपकार कार्यों को हमने भुला दिया; माता किशन कौर जी, माता गुजरी जी, दशमेश पिता की जननी, बलिदानी पति गुरु तेग बहादर साहिब की सहयोगी गुरु-महिल, 'तप तेज' पर पहरा देने वाली, नन्हे-नन्हे पोतों को बलिदान-त्याग का पाठ पढ़ाने वाली को हम कैसे भूल गईं? यही नहीं, माता साहिब कौर, पंथ की माता के आदर्शों, गुरु-मंजियों की प्रचारक सेवारत महिलाओं, जंगे-मैदान में शौर्य-प्रदर्शन करने वाली बीबी शरण कौर, बीबी रूप कौर, माता भाग कौर जी के एक लम्बे इतिहास को हम भूल गई हैं, जो हमें अपनी धरोहर संभालने का उपदेश दे गई थीं। हम इन महान स्त्रियों से मार्गदर्शन पाने योग्य साबित नहीं हो पाईं।

हमने क्या किया? हम तो खुद बीसवीं सदी की तड़क-भड़क, ग्लैमर आदि में भटक गई हैं। आधुनिकता के नाम पर हमने अपना पहरावा ऐसा बना लिया है जो सिक्ख बच्ची के योग्य नहीं है। बाहरी दिखावे के क्षेत्र में गुरसिक्ख परिवार की बच्चियां आधुनिकता के मोह में ब्यूटी कंटैस्टों में भाग लेती हैं; शहर की बात छोड़ो, गांवों तक में भी 'ब्यूटी क्वीन' बनने की होड़ लगी हुई है। सिक्ख शिक्षण-संस्थाओं में भी बाहरी रूप को लेकर सुंदर बनने की होड़-सी लगी हुई है। फैशन ने सिक्ख स्त्री की बुद्धि को भ्रमित कर दिया है। आज की स्त्री बुढ़ापे के नाम से डर रही है। वो भूल रही है गुरु साहिब के उपदेश को-- "*बाल जुआनी अरु बिरधि फुनि तीनि अवसथा जानि ॥*" क्यों नहीं हम सहज के साथ जी रहीं? गुरसिक्ख को तो कुदरत के अनुसार जीने का उपदेश है; कुदरत के रंगों के साथ जीवन को आनंदमयी बनाने का, गुरु-हुक्म में चलने का उपदेश है, फिर हम कुदरत को चैलेंज क्यों कर रही हैं? कितना भी प्रयास क्यों न कर लें, आखिर तो हमें कुदरत के नियमों के सामने, गुरु-हुक्म के सामने नतमस्तक होना ही पड़ेगा। हम स्त्रियां क्यों आम प्रवाह के साथ बहती जा रही हैं? हम क्यों '*बिपरन की रीति*' अपना रही हैं? हम भूल रही हैं कि हमारा नाता पंथ से जुड़ा हुआ है। सिक्ख होने के नाते हमारा यह दायित्व बन जाता है कि हम अपना जीवन गुरमति अनुसारी व्यतीत करें। सिक्ख परिवार में जन्म लेकर नाम के साथ 'कौर' लगाना हमारा सिक्खी दायित्व है। जो रहित मर्यादा सिक्ख पुरुष के लिए है वही मर्यादा सिक्ख स्त्री के लिए भी है। स्त्रियों के लिए कोई अलग रहित मर्यादा (**Code of Conduct**) नहीं है। रहित मर्यादा के अनुसार, "*जो स्त्री या पुरुष, एक अकाल पुरख, दस गुरु साहिबान (श्री गुरु नानक देव जी से लेकर श्री गुरु गोबिंद सिंघ साहिब तक), श्री गुरु ग्रंथ साहिब तथा दस गुरु साहिबान की बाणी एवं शिक्षा और दशमेश जी के अमृत पर निश्चय रखता है तथा किसी अन्य धर्म को नहीं मानता, वह सिक्ख है।*" इस प्रकार यदि हम सिक्ख कहलाते हैं तो हमारा फर्ज़ बन जाता है कि एक तो हम श्री गुरु ग्रंथ

साहिब जी की पावन बाणी पर अटूट विश्वास रखें, गुरबाणी के उपदेश के अनुसार जीवन-यापन करें; दूसरा, खंडे-बाटे का अमृत-पान कर पूर्ण रहित मर्यादा का पालन करें। केश, कंघा, कड़ा, कृपाण, कछहिरा हमारी रहित के अंग हैं। केशों का सम्मान करें, उनका अपमान न करें। ज़रूरी नहीं है कि हम नंगे सिर और अर्धनग्न परिधान में ही सुंदर दिखते हैं, सिर ढककर, साफ-सुथरे, स्वच्छ, सुंदर वस्त्रों में भी गुरु की सिक्ख स्त्री का व्यक्तित्व निखरा प्रतीत होता है। उसकी अपनी एक रहिणी-बहिणी है। वह उस वेश में ही डिगनीफाईड और ग्रेसफुल लगती है। मीडिया के विज्ञापन व्यवसायिक (कामर्शियल) दृष्टि से कामयाब हैं, परंतु नकली सुंदरता को बढ़ाने वाले कास्मैटिक्स का अंतिम परिणाम दुखद ही होता है। ये मानव के लिए घातक हैं। ये कई प्रकार के एलर्जी-जनित रोगों को जन्म देते हैं। गुरसिक्ख स्त्री का असली शृंगार नाम-सिमरन है, सतिसंगत करना है और प्रभु-परमेश्वर के हुक्म में चलना है; तन को नहीं मन को प्रभु-प्रेम के रंग में रंगकर सुंदर बनाना है :

इहु मनु सुंदरि आपणा हरि नामि मजीठै रंगि री ॥
तिआगि सिआणप चातुरी तूं जाणु गुपालहि संगि री ॥१॥रहाउ॥
भरता कहै सु मानीऐ एहु सीगारु बणाइ री ॥
दूजा भाउ विसारीऐ एहु तंबोला खाइ री ॥
(पन्ना ४००)
कामणि तउ सीगारु करि जा पहिलां कंतु मनाइ ॥
(पन्ना ७८८)

नाम-सिमरन और प्रभु-भक्ति से प्राप्त किया गया आत्मिक सौंदर्य ही चिरस्थायी होता है और जीव स्त्री को सही अर्थों में सुंदर घोषित करता है :

सेई सुंदर सोहणे ॥ साधसंगि जिन बैहणे ॥
हरि धनु जिनी संजिआ सेई गंभीर आपार जीउ ॥ (पन्ना १३२)

ऐसी सुंदरता कभी फीकी नहीं पड़ती। नाम-सिमरन की लाली मुख को सदैव शोभनीय बनाए रखती है :

राम रंगु कदे उतरि न जाइ ॥
गुरु पूरा जिसु देइ बुझाइ ॥१॥
हरि रंगि राता सो मनु साचा ॥
लाल रंग पूरन पुरखु बिधाता ॥१॥रहाउ॥
संतह संगि बैसि गुन गाइ ॥
ता का रंगु न उतरै जाइ ॥ (पन्ना १९४)

गुरबाणी स्त्री को गुण-संचय का आदेश देती है और उसके गुणों-लक्षणों के आधार पर ही उसे सुलक्षणी-कुलक्षणी, सुहागण-दुहागण के रूप में वर्णित करती है। **'सुलक्षणी'** उत्तम गुणों से भरपूर स्त्री है जिसके बत्तीस गुणों की बात गुरबाणी में कही गई है। इन बत्तीस गुणों में 'महान कोश' (भाई कान्ह सिंघ) के अनुसार सेवा-भक्ति, पति-भक्ति, दया, सत्य, संतोष, धैर्य आदि गुणों के साथ घर-गृहस्थी संभालने के गुणों का भी वर्णन किया गया है। ऐसी योग्य गुणवान स्त्री ही योग्य संतान को जन्म दे, उसका सदाचारपूर्ण गुणों द्वारा पालन-पोषण कर, समाज के लिए, पंथक उत्थान के लिए योगदान दे सकती है :

बतीह सुलखणी सचु संतति पूत ॥
आगिआकारी सुघड़ सरूप ॥
इछ पूरे मन कंत सुआमी ॥
सगल संतोखी देर जेठानी ॥३॥
सभ परवारै माहि सरेसट ॥
मती देवी देवर जेसट ॥
धंनु सु ग्रिहु जितु प्रगटी आइ ॥
जन नानक सुखे सुखि विहाइ ॥ (पन्ना ३७१)

दूसरी ओर **'कुलखणी'** उसे बताया गया है जो अपने मन के मुताबिक चलती है, कुटिल, कपटी, दुराचारिणी, प्रभु-भक्ति व भय से हीन,

धन-द्रव्यों से मोह रखती है :
मनमुख मैली कामणी कुलखणी कुनारि ॥
पिरु छोडिआ घरि आपणा पर पुरखै नालि पिआरु ॥
त्रिसना कदे न चुकई जलदी करे पूकार ॥
नानक बिनु नावै कुरूपि कुसोहणी परहरि छोडी भतारि ॥ (पन्ना ८९)

ऐसी कुलखणी जब तक 'शबद' से नहीं जुड़ती तब तक उसका हृदय शुद्ध नहीं हो सकता, वह भटकती ही रहती है, भले ही बाहरी रूप से वह कितना ही श्रृंगार क्यों न कर ले :
बिनु सबदै सुधु न होवई जे अनेक करै सीगार ॥
पिर की सार न जाणई दूजै भाइ पिआरु ॥
सा कुसुध सा कुलखणी नानक नारी विचि कुनारि ॥ (पन्ना ६५१)

इधर सुहागण (सुहागिन) स्त्री का श्रृंगार क्या है? गुरु-शबद से जुड़कर उसके अंतर की हउमै का विनाश हो जाता है; गुणों से भरपूर वह प्रिय पति और अन्य परिवार के लिए सुख, सहज, शांति का स्रोत बनती है :
सबदि रते हउमै गई सोभावंती नारि ॥
पिर कै भाणै सदा चलै ता बनिआ सीगारु ॥ . . .
ना हरि मरै न कदे दुखु लागै सदा सुहागणि नारि ॥ (पन्ना ६५१)

सुहागण तो पति-प्रभु से प्रेम कर, उसकी आज्ञा में चलकर घर-परिवार को संवार लेती है, परंतु कटु बोल बोलने वाली नारी बाहरी श्रृंगार करके भी सच्चा सुख प्राप्त नहीं कर सकती :
दोहागणी महलु ना पाइन्ही न जाणनि पिर का सुआउ ॥
फिका बोलहि ना निवहि दूजा भाउ सुआउ ॥ . . .
सोहागणी आपि सवारीओनु लाइ प्रेम पिआरु ॥
सतिगुर कै भाणै चलदीआ नामे सहजि सीगारु ॥ (पन्ना ४२६)

इस प्रकार गुरु-शबद से जुड़ी "*पिर कै भाणै*" में चलने वाली ही सच्चे अर्थों में सिक्ख स्त्री है। वही खुशहाल सिक्ख परिवार का संचालन कर सकती है, संतान को आज के माहौल में "*भख अभख सब खाइ*" के लोभ से दूर रख संतुलित व पौष्टिक भोजन की योजना बना सकती है। पदार्थवादी प्रतिस्पर्धापूर्ण माहौल में स्वयं उच्च शिक्षा प्राप्त कर "*विदिआ वीचारी तां परउपकारी*" के महत्त्व को समझकर, स्वयं भी शिक्षा के असल मकसद को समझकर बच्चों को भी उसी दिशा की प्रेरणा दे सकती है। गुरु साहिब का फरमान है : "*पाधा गुरमुखि आखीऐ चाटड़िआ मति देइ ॥*" शिक्षा का वास्तविक अर्थ सामाजिक, नैतिक व आत्मिक उत्थान है। ऐसा शबद में जुड़ी सुरति ही सोच सकती है। ऐसी गुरसिक्ख स्त्री ही समझ सकती है कि आज के लोलुप-लालची भ्रष्ट समाज में जहां पग-पग पर भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है, सिक्ख स्त्री को सबल भूमिका निभानी है। गुरु-उपदेश के अनुसार स्त्री सुच्ची किरत की प्रेरणा अपने जीवन-साथी को दे सकती है; आय से अधिक (काले) धन का प्रवेश घर-परिवार में निषिद्ध कर सकती है। उच्च शिक्षा प्राप्त गुरु की सिंघणी जिस भी प्रोफेशन में है, डॉक्टर, इंजीनियर, अध्यापक, वकील, कारव्यवसाय में, कारपोरेट सर्विसेज में, जहां भी, जिस हैसियत में भी कार्यरत है, उसकी कार्य-विधि गुरमति के अनुसार ही होनी चाहिए। अकाल पुरख की कृपा से अगर उसे उत्तम शिक्षा प्राप्त कर उच्च पद पर कार्य करने का अवसर मिला है तो वो अपने अंतरमन को सदा उच्च दिव्य गुणों से जोड़े रखे, क्योंकि इसका अनुचित लाभ तो मनमुखता है :
मनमुखु बिदिआ बिक्रदा बिखु खटे बिखु खाइ ॥ (पन्ना ९३८)

आज की शिक्षित गुरसिक्ख स्त्री को ही परिवार को एक सबल इकाई के रूप में बांध कर रखना है। यह आज की ज्वलंत समस्या

है। परिवारों में विघटन हो रहा है। एक तो पति-पत्नी के आपसी सम्बंध ही सुखदायी नहीं हैं, कलह-क्लेश से बात तलाक और बंधन-टूटन तक पहुंच रही है। सिक्ख-स्त्री भूल रही है कि सिक्ख का 'अनंद कारज' का समन्वय आनंद में होता है। *"एक जोति दुइ मूरती धन पिरु कहीऐ सोई"* के आदर्श पर टिका यह रिश्ता सहज मार्ग का बंधन है जो टूट नहीं सकता। अपने-अपने दायित्व का शांतिपूर्ण ढंग से निर्वाह करते हुए पंथक उत्थान में हमें योगदान देना है; घर में अन्य बड़े बुजुर्गों का सम्मान करना है। गुरु-उपदेश है :

काहे पूत झगरत हउ संगि बाप ॥
जिन के जणे बडीरे तुम हउ तिन सिउ झगरत पाप ॥ *(पन्ना १२००)*

जन्म देने वाले माता-पिता को वृद्धावस्था में सहारे की ज़रूरत होती है, उन्हें वृद्ध आश्रमों में भटकने को नहीं छोड़ना है।

गुरु की सिक्ख कहलाने वाली स्त्री को गुरु-मर्यादा अनुसार जीवन चलाना है; समाज में प्रचलित पतितपुना, नशाखोरी से बच्चों को बचाकर उच्च पावन विरसे के साथ जोड़ना है। शानदार विरसे का निर्माण और उस विरसे की संभाल करना गुरसिक्ख स्त्री का प्रथम कर्त्तव्य है। यह न हो कि गुरु साहिबान ने जो उत्तम विशेषण हमें दिए हैं उसके विपरीत हमारे लिए यही कहना पड़े :

रंना होईआ बोधीआ पुरस होए सईआद ॥
सीलु संजमु सुच भंनी खाणा खाजु अहाजु ॥
सरमु गइआ घरि आपणै पति उठि चली नालि ॥
(पन्ना १२४३)

महान् सिक्ख जरनैल : सरदार बघेल सिंह करोड़ासिंघिया *(पृष्ठ ३६ का शेष)*

जत्था लेकर जलालाबाद जा पहुंचे और हाकिम को दंडित किया। कन्या को सम्मान सहित उसके घर पहुंचाया।

अंतिम समय तक सिंघों का नेतृत्व : इसके बाद भी अगले २० वर्षों तक सरदार बघेल सिंह सिक्खों का कुशलतापूर्वक नेतृत्व करते रहे। जिसे भी आपकी सहायता की आवश्यकता पड़ी, आप तुरंत मदद के लिए पहुंचे। सन् १७८० ई. में जब दिल्ली के वज़ीर अब्दुल्ला ख़ान ने शहज़ादे फरजंद को पटियाला के राजा अमर सिंघ के विरुद्ध भेजा तो सरदार साहिब ने उसी समय जत्थे के साथ पटियाला पहुंच कर राजा अमर सिंघ की मदद की और शहज़ादे से ईन मनवाई।

इसी तरह जब सन् १७८८ ई. में मनराव मराठे ने पंजाब की ओर नज़र उठाई तब भी सरदार बघेल सिंह ने उसके लश्कर को घेर कर हार स्वीकार करने पर मज़बूर कर दिया। सन् १७९८ ई. में जब अंग्रेज जनरल जार्ज थामस ने जींद पर हमला किया तो तुरंत सरदार साहिब उसकी मदद के लिए जींद पहुंचे।

इस प्रकार सिक्खों को अपना श्रेष्ठ और आदर्श नेतृत्व देते हुए महान् सिक्ख जरनैल सरदार बघेल सिंह करोड़ासिंघिया सन् १८०२ ई. में अकाल चलाना कर गए। सरदार साहिब द्वारा ११ मार्च, १७८३ ई. वाले दिन 'दिल्ली फ़तहि' करने की घटना सिक्ख इतिहास में सुनहरे अक्षरों में दर्ज है।

गुरमति में स्त्री का संकल्प

-बीबी मनिन्द्र कौर*

पुरातन काल से ही स्त्री को निम्न दर्जा दिया जाता रहा है। उसे किसी भी प्रकार को आज़ादी नहीं थी। उसे सदैव मर्द से नीचा और तिरस्कार की पात्र बनना पड़ा है। यहां तक कि आदि काल में अगर किसी स्त्री के पति की मृत्यु हो जाती थी तो उस स्त्री को भी अपने पति की चिखा में बैठकर सती होना पड़ता था जोकि अत्यंत कष्टदायक और करुणामय था। यहां तक कि प्राचीन काल में स्थापित अलग-अलग धर्मों ने भी स्त्री के सम्मान की रक्षा नहीं की बल्कि इन धर्मों के अनुआईयों ने स्त्री की इस दशा को और भी नीचा गिराया। यह भी एक सच्चाई थी कि उस समय समाज की राजनीतिक, धार्मिक अगुआई करने वाले आगु खुद इन बुराईयों को जन्म दे रहे थे।

इन हालातों में सिर्फ और सिर्फ गुरमति विचारधारा ने स्त्री की इस दयनीय दशा के खिलाफ़ आवाज़ बुलंद की। श्री गुरु नानक देव जी ने अपनी बाणी में स्त्री को बहुत ही आदरणीय स्थान दिया है। उन्होंने समाज में फैली प्रत्येक उस विचाराधारा का खंडन किया जो स्त्री के खिलाफ़ थी। श्री गुरु नानक देव जी ने समाज में फैले इस गलत नज़रिए को नकारते हुए बाणी में यह समझाया कि जिस स्त्री को लोग बुरा मानते हैं, नीचा समझते हैं वास्तव में वह (स्त्री) तो जगत की जननी है। क्योंकि एक स्त्री से ही तो मनुष्य पैदा होता है। वही स्त्री पैदा हुए उस बच्चे का पालण-पोशण करके उसे बड़ा करती है। फिर जब वह बालक बड़ा हो जाता है तो एक स्त्री के साथ ही फिर उसकी शादी होती है अर्थात् उसके जीवन के प्रत्येक कार्य में स्त्री का अहम योगदान है। उसके बिना समाज की कलपना भी नहीं की जा सकती। फिर उसी स्त्री को हम बुरा क्यों कहते हैं? प्रथम पातशाह श्री गुरु नानक देव जी 'आसा की वार' में पावन फरमान करते हैं :

भंडि जंमीऐ भंडि निंमीऐ भंडि मंगणु वीआहु ॥
भंडहु होवै दोसती भंडहु चलै राहु ॥
भंडु मुआ भंडु भालीऐ भंडि होवै बंधानु ॥
सो किउ मंदा आखीऐ जितु जंमहि राजान ॥
भंडहु ही भंडु ऊपजै भंडै बाझु न कोइ ॥
नानक भंडै बाहरा एको सचा सोइ ॥

(पन्ना ४७३)

गुरमति में स्त्री को ऊंचा एवं समानता का दर्जा प्रदान किया गया है। गुरु-काल में अनेक ही ऐसी स्त्रियां है जिन्होंने गुरु-घर में अपना बहुत अहम योगदान डाला है। जिनमें प्रमुख रूप से माता खीवी जी, बीबी भानी जी, माता गुजरी जी, माता सुंदरी जी, माता साहिब कौर जी माता भाग कौर जी आदि के नाम विशेष रूप से वर्णनीय हैं।

श्री गुरु अमरदास जी ने समाज में फैली सती की रस्म का बहुत ही ज़ोरदार शब्दों में खंडन किया है। उन्होंने 'सती प्रथा' के विरुद्ध समाज को आध्यात्मिक पक्ष से समझाते हुए

**२९४६/७, बाज़ार लुहारां, चौंक लछमणसर, श्री अमृतसर-१४३००१*

बाणी में फरमान किया :

सतीआ एहि न आखीअनि जो मड़िआ लगि जलंन्हि ॥
नानक सतीआ जाणीअन्हि जि बिरहे चोट मरंन्हि ॥ *(पन्ना ७८७)*

गुरमति में जहां स्त्री को बराबरी और उच्चत्म दर्जा दिया गया है, वहीं पर उस पर बुरी नज़र और गलत भावना के साथ पेश आने से भी रोका है। भाई गुरदास जी की वारों को गुरबाणी की कुंजी होने का स्थान हासिल है। भाई साहिब वार में फरमान करते हैं :

देख पराईआं चंगीआं मावां भैणां धीआं जाणै ॥

भावार्थ पराई स्त्रियों में से अपने से बड़ी को मां, बराबर उर्म वाली को बहन और छोटी को अपनी बेटी सम्मान समझना चाहिए।

छठम् पातशाह श्री गुरु हरिगोबिंद साहिब फरमान करते हैं कि प्रत्येक माता के पास एक बेटी अवश्य होनी चाहिए। गुर बिलास पातशाही ६वीं के अनुसार :

सील खान कन्या इक होवै।
नही तो मां ग्रहिसत विगोवै ॥

सिक्ख रहित मर्यादा में भी बेटी के सत्कार को प्रमुख रखते हुए निर्देश है कि 'कुड़ीमार' अर्थात् लड़की को मार देने वालों से सिक्ख ने किसी भी प्रकार का सम्बंध नहीं रखना।

रहितनामों के अनुसार भी लड़की मारने वालों का पूर्ण रूप से खंडन किया गया है :

--कुड़ी मार आदिक है जेते।
मन ते दूर तिआगो तेते। *(भाई देसा सिंघ)*
--कुड़ी मार के साथ रोटी बेटी का नाता नहीं रखना। *(भाई नंद लाल जी)*

कुल मिलाकर गुरमति विचारधारा के अनुसार स्त्रियों को पूर्ण सत्कार देते हुए उनकी समाज में एक सम्मानीय जगह निर्धारित की गई है। भ्रूण हत्या जैसे महापाप का विरोध किया गया है। स्त्री के इस संसार में जन्म लेने के अधिकार को सुरक्षित किया गया है क्योंकि स्त्री से ही यह संसार चलता है, रिश्ते-नाते बनते हैं। स्त्री के बिना समाज की कलपना करना भी संभव नहीं।

कविता

गुरमुख

*-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ**

गुरमूख होते हैं अकाल नदर निहाल ॥
उनकी है होती निराली ही चाल ॥
जप जपान आराधन करते नितय जीवन भी निभाते ॥
मीठा बोल मन भावन साच से मुंह न फिराते ॥
किरती विरती जीवन जीते दिल किसी का नहीं दुखाते ॥
मानवता की सेवा करते सेवा के लिए समय बचाते ॥
एहसान नहीं करते सेवा गुर का हुक्म मानते मनाते ॥
गुर का शबद मन धारक गुरदेव के बलिहारे जाते ॥

**पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर-१४३५२१, फोन : ९४१७१-७५८४६*

गुरबाणी चिंतनधारा : ११०

आसा की वार : विचार व्याख्या

*-डॉ मनजीत कौर**

सलोकु मः १ ॥
सिंमल रुखु सराइरा अति दीरघ अति मुचु ॥
ओइ जि आवहि आस करि जाहि निरासे कितु ॥
फल फिके फुल बकबके कंमि न आवहि पत ॥
मिठतु नीवी नानका गुण चंगिआईआ ततु ॥
सभु को निवै आप कउ पर कउ निवै न कोइ ॥
धरि ताराजू तोलीऐ निवै सु गउरा होइ ॥
अपराधी दूणा निवै जो हंता मिरगाहि ॥
सीसि निवाइऐ किआ थीऐ जा रिदै कुसुधे जाहि ॥१॥
(पन्ना ४७०)

इस सलोक में गुरु नानक पातशाह जी एक अति सुंदर उदाहरण से जीव को समझा रहे हैं कि बाहरी बड़प्पन से जीवन का मनोरथ सिद्ध होने वाला नहीं है, अगर मनुष्य में परोपकार की भावना नहीं है। साथ ही गुरु साहिब ने विनम्रता के महत्त्व को समझाते हुए मधुर वचन एवं विनम्रता को समस्त गुणों का सार बताया है लेकिन एक गहन रहस्य का भी उद्‌घाटन किया है; यह विनम्रता केवल स्वार्थ हेतु ही धारण की हुई न हो अपितु दूसरों के हित साधने में भी हो, तभी सफल है। अंत में हिरणों के शिकारी का उदाहरण देकर मुख्य भाव को स्पष्ट किया गया है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जैते सिमल (सेमल) का वृक्ष तीर की तरह सीधा, बड़ा तथा मोटा होता है। लेकिन जो पक्षी इस आशा से आता है (कि वहां बहुत खाने को मिलेगा) उन्हें निराश क्यों लौटना पड़ता है? (इसका मुख्य कारण यही है कि) उस वृक्ष की बाहरी विशालता के बावजूद उसके फल फीके (नीरस), फूल बे-स्वाद (स्वाद रहित) होते हैं और इसके पत्ते भी किसी काम नहीं आते। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि विनम्रता में मिठास है; अतः विनय शीलता समस्त गुणों का सार तत्व है अर्थात् विनम्रता में समस्त गुणों का तत्व विद्यमान है। (संसार में) सब अपने स्वार्थ के लिए झुकते हैं, परोपकार के लिए (परार्थ की भावना से) कोई नहीं झुकता। लेकिन यह हकीकत है कि तराजू पर अगर किसी वस्तु को तोला जाए तो जो पलड़ा झुकता है वही भारी होता है। अंतिम पंक्ति में गुरु पातशाह ने कमाल की हिदायत दी है मात्र झुक जाने से भी क्या होता है? अपराधी व्यक्ति दुगुना झुकता है (विनम्रता का ढोंग करता है) जैसे हिरण का शिकार करने वाला अर्थात् उसे मृत्यु के घाट उतारने वाला शिकारी (शिकार करते वक्त झुक कर दौहरा हो जाता है मानो अष्टांग प्रणाम कर रहा हो लेकिन उसका मनोरथ जीव हत्या करना है ठीक वैसे ही शीश झुकाने मात्र से क्या होगा अगर हृदय छल-कपट से भरा हो। ऐसी विनम्रता से झुकने का तनिक भी लाभ नहीं।

कलयुगी जीवों का मार्गदर्शन करने हेतु गुरु पातशाह जी का सिमल वृक्ष का उदाहरण देकर और फिर तराजू एवं शिकारी के

**२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, फोन : ९९२९७-६२५२३*

दृष्टांत से जीव को अंदर तक झकझोरने का यह विलक्षण उदाहरण है। साथ ही नैतिक गुणों का सार तत्व विनम्रता को बताते हुए करनी एवं कथनी की समानता पर भी बल दिया है।

सिमल पेड़ बेशक सीधा, लंबा तथा घना है उस पर फूल और फल नहीं हैं लेकिन उसकी विशालता फल-फूल उस पर आकर बैठने वाले पक्षियों को सकून एवं तृप्ति न देकर निराश ही करते हैं क्योंकि उसके फल रसहीन (फीके) हैं फूल रूई सदृश्य बकबके बे-स्वाद हैं और तो और अकसर पेड़ों के पत्ते काम आते हैं लेकिन इसके तो पत्ते भी किसी काम के नहीं ठीक उसी प्रकार जैसे कोई बहुत धनवान रुतबे वाला व्यक्ति हो और कोई ज़रूरतमंद उससे किसी मदद के लिए बड़ी आशा और विश्वास से आए और आगे से वह इतनी धन संपदा का मालिक उसकी किसी प्रकार की सहायता न करे तो वह अमीरी, धन-संपदा किस आशय अर्थात् किस काम की?

आगे गुरु पातशाह ने विनम्रता को समस्त गुणों का सार बताया है और स्पष्ट किया कि संसार में लगभग सभी अपने स्वार्थ के लिए झुकते हैं, परोपकार के लिए नहीं। यहां एक छोटे-से उदाहरण से हम स्वयं को सहजता से परख सकते हैं हम जहां भी हैं अपने से ऊंचे दर्जे पर जो लोग हैं उनकी जी हजूरी तो हर कोई करता है लेकिन अपने अधीन कार्य करने वालों के प्रति हमारा व्यवहार कैसा है यह हमारे अंत:करण की विनम्रता को परखने की कसौटी है। जैसे फलों वाले वृक्ष कुदरती तौर पर झुक जाते हैं।

अत: बाहरी विनम्रता का कोई औचित्य नहीं जैसे हिरण का शिकारी, दूर से देखने वाले को तो उसमें विनम्रता भरी दिखाई दे रही है लेकिन शीश झुकाने मात्र से क्या होगा? ईश्वर तो अंतर्यामी है वह तो हमारे अंत:करण में क्या चल रहा है उसको भी जानता है जैसे कि चौपई साहिब में गुरु कलगीधर पातशाह का पावन संदेश है :

घट घट के अंतरि की जानत ॥
भले बुरे की पीर पछानत ॥

गुरु नानक पातशाह जी ने अन्यत्र भी इसी भाव को दृढ़ करवाया है कि अगर दुनिया में आकर कोई बड़ा नाम रखवा ले, धनवान भी हो, दौलत से सुख भी भोग ले लेकिन अगर उसमें परोपकार की भावना और सच्चे अर्थों में विनम्रता नहीं तो उसका जीवन बर्बाद ही समझो यथा गुरबाणी प्रमाण है :

जे को नाउ धराए वडा साद करे मनि भाणे ॥
खसमै नदरी कीड़ा आवै जेते चुगै दाणे ॥
मरि मरि जीवै ता किछु पाए नानक नामु वखाणे ॥ *(पन्ना ३६०)*

श्री गुरु नानक देव जी ने हृदय की विनम्रता से कर्मकांडों एवं दिखावे के भ्रमों में सीधे-साधे लोगों को गुमराह करने एवं सताने वालों जैसे सज्जन ठग, वली कंधारी, काजी मुल्ला, पंडित, सिद्ध, नाथ, योगी सबको सच्ची विनम्रता का पाठ पढ़ा कर करनी एवं कथनी में समानता का पावन संदेश देकर उस अकाल पुरख वाहिगुरु से जोड़ा। भाई गुरदास जी ने इस संदर्भ में बड़ा सुंदर लिखा है :

गड़ बगदादु निवाइ कै मका मदीना सभे निवाइआ।
(वार १:३७)

विनम्रता से भरपूर हृदय में ही परम-पिता परमेश्वर एवं उसकी सुंदर सृजन समूची मानवता से प्रेम एवं सौहार्द भरा होता है, यही पावन बाणी का संदेश है :

सो जनु साचा जि हउमै मारै ॥

गुर कै सबदि पंच संघारै ॥
आपि तरै सगले कुल तारै ॥ (पन्ना २३०)

सचमुच हृदय से विनम्रता धारण करने वाले परमेश्वर का ही रूप हो जाते हैं। वो स्वयं तो भवसागर से पार होते ही हैं अपनी सारी कुलों का भी उद्धार कर लेते हैं।

अकाल पुरख रहमत करें और हम भी हृदय से विनम्रता जैसे सर्वोत्तम गुण के धारणी बनें।

मः १ ॥
पड़ि पुसतक संधिआ बादं ॥
सिल पूजसि बगुल समाधं ॥
मुखि झूठ बिभूखण सारं ॥
त्रैपाल तिहाल बिचारं ॥
गलि माला तिलकु लिलाटं ॥
दुइ धोती बसत्र कपाटं ॥
जे जाणसि ब्रहमं करमं ॥
सभि फोकट निसचउ करमं ॥
कहु नानक निहचउ धिआवै ॥
विणु सतिगुर वाट न पावै ॥२॥

उपरोक्त सलोक में श्री गुरु नानक देव जी ने श्रद्धा विहीन समस्त कर्मों को व्यर्थ बताया है जिससे जीव का कुछ भी संवरने वाला नहीं है। अतः गुरु पातशाह श्रद्धा भाव से प्रभु का सिमरन करने हेतु प्रेरित करते हैं साथ ही यह तथ्य भी उजागर करते हैं कि प्रभु की बंदगी गुरु के बिना संभव नहीं है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि (पंडित) वेद आदि धर्म ग्रंथ पढ़कर संध्या करते हैं और परस्पर (आपस में) वाद-विवाद (तर्क) भी करते हैं। पत्थर की मूर्तियों की पूजा भी करते हैं तथा बगुले की तरह (दिखावटी) समाधि भी लगाते हैं। मुख से असत्य (झूठे वचन) बोलते हैं लेकिन इस झूठ को सच होने का ढोंग (दिखावा) करते हैं (ठीक वैसे ही) जैसे-जैसे स्वर्ण (सोने) के मुलम्में वाले लोहे से बने आभूषण वास्तविक प्रतीत होते हैं अर्थात् ऐसे गहने जो होते तो सस्ती-सी लोहे की धातू से बने हुए हैं लेकिन उन पर सोने की पालिश कर दी जाती है और वह देखने में असली सोने के गहने दिखाई पड़ते हैं। ठीक उनका झूठ भी इतनी लाग-लपेट वाला होता है कि सुनने वाले को सच ही लगता है।

वे तीन पदों वाला गायत्री मंत्र तीन समय पढ़ते और विचारते हैं। मस्तक पर तिलक लगाते हैं, दो धोतियां पास रखते हैं। संध्या के समय एक वस्त्र सिर पर धारण कर लेते हैं। लेकिन अगर वास्तव में ईश्वर की कीर्ति (यश) को जान लिया जाए तो उपरोक्त सभी कर्म व्यर्थ हैं। गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि जो श्रद्धापूर्वक प्रभु का सिमरन करता है वही सार पूर्ण है अन्यथा समस्त कर्म व्यर्थ हैं। अतः श्रद्धा भावना से प्रभु की बंदगी करो लेकिन यह गुरु के बिना संभव नहीं अर्थात् गुरु के बिना प्रभु की भक्ति नहीं हो सकती।

गुरबाणी में सर्वत्र दिखावे के कर्मों को फोकट एवं व्यर्थ माना गया है और उसकी तुलना बंजर भूमि से की गई है, जैसे बंजर भूमि में बोए हुए बीज और उस पर की गई सारी मेहनत-मशक्कत व्यर्थ चली जाती है; इस संदर्भ में गुरबाणी में गुरु नानक पातशाह जी ने अन्यत्र भी बहुत सुंदर शबद में समझाया है, यथा :

काहे कलरा सिंचहु जनमु गवावहु ॥
काची ढहगि दिवाल काहे गचु लावहु ॥१॥
(पन्ना ११७१)

अर्थात् तुम बंजर भूमि एवं क्षारीय मिट्टी वाली धरती को व्यर्थ ही कर्मकांडों द्वारा सींच

रहे हो तथा अपने (बेशकीमती) जीवन को गंवा रहे हो। क्योंकि कर्मकांडों (आचरण) वाली दीवार तो अंदर से बिल्कुल कच्ची और खोखली है अत: इस पर धार्मिक दिखावों का चूना लगाना व्यर्थ है तुम ऐसा क्यों कर रहे हो? अत: स्पष्ट है यह प्रश्न प्रत्येक इन्सान को अपनी अंतर्रात्मा से पूछना चाहिए ताकि हमें समझ आए कि इस अनमोल जीवन का मनोरथ कुछ विशेष ही है मात्र दिखावे के लिए किए गए प्रपंच नहीं।

इसी भाव को दृढ़ करवाने हेतु आगे गुरु साहिब ने लोहे की धातू का उदाहरण देकर समझाया है कि किस प्रकार उस पर जब सोने का मुलम्मा चढ़ा दिया जाता है तो कुछ समय के लिए उस आभूषण की चमक हमें भ्रमित कर सकती है लेकिन जब कर्मकांडों रूपी परत हटती है तो वास्तविकता नज़र आ ही जाती है। चिंतकों के चिंतनानुसार भी झूठ के पांव नहीं होते अंत: झूठ ज्यादा आगे तक नहीं जा सकता और सच को कभी आंच नहीं। आखिर जीत सच्चाई की ही होनी है। गुरबाणी प्रमाण है :

कूड़ निखुटे नानका ओड़कि सचि रही ॥
(पन्ना ९५३)

अत: स्पष्ट है सच्चे गुरु की शरण में आकर उस सच्चे पारब्रह्म परमेश्वर की सिफत-सलाह, कीर्ति, यश, महिमा एवं गुणों का ही गान करना चाहिए, इसी की बरकतों से लोक-परलोक सफल होता है। जर्रे-जर्रे में रमे हुए परमेश्वर की बंदगी ही जीवन का सार है यथा :

हरि का सभु सरीरु है हरि रवि रहिआ सभु आपै ॥
हरि की कीमति न पवै किछु कहणु न जापै ॥
गुर परसादी सालाहीऐ हरि भगती रापै ॥
सभु मनु तनु हरिआ होइआ अहंकारु गवापै ॥
(पन्ना ९५३)

गुरबाणी आशयानुसार प्रभु-नाम में लीन व्यक्ति शबद-गुरु के मार्ग दर्शन से परिश्रम करके सहज रूप से ही उस परमेश्वर में समा जाता है यथा गुरबाणी प्रमाण है :

नानक नामि रते सहजे मिले सबदि गुरू कै घाल ॥ *(पन्ना १२८३)*

अत: मात्र दिखावे हेतु किए गए जप-तप पूजा ज्ञान अर्जन बाहरी तौर पर तिलक माला एवं विशेष प्रकार के वस्त्र धारण करना आदि ईश्वरीय दरगाह पर प्रवान नहीं या यूं कहें कि श्रद्धा विहीन किसी भी प्रकार का कोई भी क्रिया कलाप, तप साधना ईश्वर को मंजूर नहीं तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी।

पउड़ी ॥
कपड़ु रूपु सुहावणा छडि दुनीआ अंदरि जावणा ॥
मंदा चंगा आपणा आपे ही कीता पावणा ॥
हुकम कीए मनि भावदे राहि भीड़ै अगै जावणा ॥
नंगा दोजकि चालिआ ता दिसै खरा डरावणा ॥
करि अउगण पछोतावणा ॥१४॥

प्रस्तुत पउड़ी में श्री गुरु नानक देव जी ने जीव को उसके द्वारा किए गए कर्म और कर्म-फल की प्राप्ति की ओर ध्यान आकर्षित किया है कि किस प्रकार जीव इस दुनिया के झूठे रंग तमाशों में गलतान होकर न करने योग्य कर्मों को करता है और अंतत: पछताता है।

गुरु पातशाह पावन फरमान करते हैं कि यह सुंदर शरीर रूपी कपड़ा मनुष्य ने इसी संसार में ही छोड़ जाना है। प्रत्येक जीव ने अपने शुभ-अशुभ (अच्छे तथा बुरे) कर्मों का फल खुद ही भोगना है। जिस इन्सान ने इस संसार में मनमानियां की अर्थात् अपने मन के पीछे लगकर दूसरों पर

ज़ब्रदस्ती अपने हुक्म चलाता रहा; लेकिन आगे इसे तंग (संकुचित) रास्तों से गुज़रना ही पड़ेगा अर्थात् वहां कष्ट भोगने ही पड़ेंगे। वहां जीव का ऐसा पर्दाफाश किया जाता है और उसे नर्क में धकेल दिया जाता है और तब उसे अपना सुंदर रूप (रूप-सौन्दर्य) अति डरावना लगता है। (क्योंकि) बुरे कर्म करके अंत में पछताना ही पड़ता है।

वास्तव में चौरासी लाख योनियों में सर्वश्रेष्ठ योनि पाकर भी जीव अगर नेक कर्म नहीं करता तो इसके पास पछताना ही शेष रह जाता है। गुरबाणी आशयानुसार एक मनुष्य ही है जिसके पास कर्म भूमि है बाकी समस्त योनियां के पास भोग भूमि है। अत: जीव (मनुष्य) को सर्वोत्तम कर्म भूमि पाकर यहां नेक कर्मों के बीज बोने चाहिए ताकि वह अच्छी फसल (फल) प्राप्त कर सके। लेकिन अपने जीवन के प्रमुख उद्देश्य को भुला कर अपनी प्राप्तियों का गुमान (अहंकार) करता हुआ दूसरों पर अपनी मन की चंचलता के कारण हकूमत चलाता रहता है, दूसरों पर ज़ोर-जुल्म करते हुए भी संकोच नहीं करता। एक दुनियावी कहावत के अनुसार--"एह जग मिट्ठा अगला किन डिट्ठा" इस भ्रांति में कि यहां अपनी मनमानियां कर लो आगे किसने देखा है स्वर्ग मिलेगा या नर्क। लेकिन गुरबाणी हर पल हमारा मार्गदर्शन करती है कि किस प्रकार जीव को अपने प्रत्येक कर्म का फल अवश्यमेव भोगना ही पड़ता है वहां ईश्वर की दरगाह में इसकी कोई मनमानी नहीं चलती। 'जपु जी' साहिब में गुरु नानक पातशाह जी ने इस गूढ़ रहस्य को समझाया है कि पुण्य और पाप कर्म केवल कहने मात्र के लिए नहीं है उन्हें संस्कार रूप में मनुष्य अपने साथ उकेर कर ले जाता है यद्यपि जीव न भी चाहे तब भी यह कर्मों का लेखा-जोखा जीव के साथ ही जाता है बेशक इस संसार की अन्य कोई भी वस्तु और यहां तक कि हमारा शरीर भी साथ नहीं जाता लेकिन जीव द्वारा इस दुनिया में किए गए शुभ अथवा अशुभ कर्म संस्कार रूप में जीव के साथ अवश्य जाते हैं यथा गुरबाणी प्रमाण है :

पुंनी पापी आखणु नाहि ॥
करि करि करणा लिखि लै जाहु ॥
आपे बीजि आपे ही खाहु ॥
नानक हुकमी आवहु जाहु ॥ (पन्ना ४)

अत: गुरबाणी हमें बार-बार प्रेरित करती है जब अपने कर्मों का फल स्वयं अवश्यमेव भोगना ही पड़ता है तो कर्म बुरे क्यों किए जाए गुरु पातशाह का ही संदेश है :

जितु कीता पाईऐ आपणा सा घाल बुरी किउ घालीऐ ॥ (पन्ना ४७४)

वस्तुत: यह मनुष्य जीवन जिसकी अभिलाषा देवते भी करते हैं इस अमूल्य जीवन को सेवा और सिमरन द्वारा सार्थक करें जैसे कि गुरबाणी में समझाया गया है :

भई परापति मानुख देहुरीआ ॥
गोबिंद मिलण की इह तेरी बरीआ ॥
अवरि काज तेरै कितै न काम ॥
मिलु साधसंगति भजु केवल नाम ॥ (पन्ना १२)

ख़बरनामा

अमृतधारी नौजवान नवदीप सिंघ का आस्ट्रेलिया फौज में आई. टी. अफसर भर्ती होना सिक्ख कौम के लिए गौरव की बात : प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर

श्री अमृतसर : ३१ जनवरी : प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर ने कहा कि अमृतधारी सिक्ख नौजवान स. नवदीप सिंघ का आस्ट्रेलिया फौज में बतौर 'इन्फारमेशन एण्ड टेकनॉलोजी' अफसर भर्ती होना सिक्ख कौम के लिए गौरव की बात है। जिसके सदका आस्ट्रेलिया में बसते अन्य साबत सूरत सिक्ख नौजवानों के मनों में आस्ट्रेलिया फौज में भर्ती होने का उत्साह बढ़ेगा। उन्होंने अपनी खुशी का प्रकटावा करते हुए कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की सरप्रस्ती में चल रहे शैक्षणिक संस्था बाबा बंदा सिंघ बहादुर इंजीनियरिंग कॉलेज, श्री फ़तहिगढ़ साहिब से बी. टैक. की विद्या हासिल करके आस्ट्रेलियन फौज में बतौर आई. टी. अफसर भर्ती हुए नवदीप सिंघ ने हमारी शैक्षणिक संस्था का नाम विश्व भर में रौशन किया है। प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर ने कहा कि गत दिनों अमेरिकी फौज द्वारा धार्मिक चिन्हों को मान्यता देने वाले नये नियमों को भर्ती किए गए पांच साबत सूरत सिक्ख नौजवानों व आस्ट्रेलियन सेना में अमृतधारी नौजवान नवदीप सिंघ का बतौर आई. टी. अफसर भर्ती होना समूची सिक्ख नौजवान पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा का स्रोत बनेगा।

उन्होंने कहा कि सिक्ख जिस भी देश में जाकर बसे हैं उन्होंने सख़्त मेहनत करके जहां अपना नाम रौशन किया है वहां इस देश की तरक्की में भी अपना अहम योगदान डाला है। जिनके सदका बहुत-से देशों की सरकारों से सिक्खों ने अपनी पहचान बनाते हुए कई अहम ओहदे हासिल किए हैं। प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर ने कहा कि आस्ट्रेलियन फौज में आई. टी. अफसर भर्ती हुआ अमृतधारी नौजवान नवदीप सिंघ आस्ट्रेलिया की सुरक्षा में जहां अपना अहम योगदान डालेगा वहां अस्ट्रेलिया जैसे देश में बसते सिक्खों पर होते नसली हमलों की रोकथाम के लिए भी अपनी अहम भूमिका अदा करेगा।

मुख्य सचिव स. हरचरन सिंघ ने सिक्खों के बारे में चुटकलों पर रोक लगाने सम्बंधी सुप्रीम कोर्ट को पुन: नज़रसानी करने की अपील की।

श्री अमृतसर : ८ फरवरी : देश की सर्वोच्च अदालत सुप्रीम कोर्ट को सिक्खों के बारे में बनते चुटकलों पर पाबंधी लगाने से इन्कार करने के फैसले पर पुन: नज़रसानी करनी चाहिए क्योंकि ऐसे चुटकले सिक्खों के अक्स को ठेस पहुंचाने में जिम्मेवार बनते हैं। यह प्रकटावा शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्य सचिव स. हरचरन सिंघ ने कार्यालय प्रेस विज्ञप्त में कहा है। उन्होंने कहा कि सिक्ख कौम का इतिहास बेहद गौरवमयी है और सिक्ख कौम मानवता के हमदर्द के रूप में मान्यता रखती है। गुरुद्वारा साहिबान में बिना किसी भेदभाव के लोगों को

लंगर छकाने व प्राकृतिक आपदाओं के समय देश भर में बिना किसी जात-पात, रंग-भेद के मानवता की मदद हेतु तत्पर रहने वाली सिक्ख कौम की पहचान को गलत ढंग से पेश करते हुए चुटकलों में सिक्खों को मज़ाक का पात्र बनाया जाता है। इसलिए इन चुटकलों पर रोक लगना बेहद आवश्यक है। सम्मानीय सर्वोच्च अदालत ने इन पर रोक लगाने में असमर्था प्रकटाई है।

स. हरचरन सिंघ, मुख्य सचिव ने कहा कि यह बात तो बिलकुल वाज़िब नहीं विशेषत: सुप्रीम कोर्ट ही ऐसी असमर्था प्रकटाए तो फिर फरियादी कहां जाएं? अदालत द्वारा सिक्खों के बारे चुटकलों पर रोक लगाने से विश्व भर में बसते सिक्खों के मनों को भारी ठेस पहुंची है। उन्होंने देश की सर्वोच्च अदालत को इस अति संज़ीदा मामले को गहनता से लेने की अपील करते हुए कहा कि इसमें सिक्खों की भावनाओं के अनुसार ही फैसला करने हेतु पुन: नज़रसानी करनी चाहिए।

शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने भक्त रविदास जी का जन्म दिवस श्रद्धा-भावना से मनाया

श्री अमृतसर : १० फरवरी : भक्त रविदास जी ने सामाजिक बुराईयों के विरुद्ध डटकर आवाज़ बुलंद करते हुए मानवीय समानता वाले समाज की सृजना का नारा बुलंद किया। इन विचारों का प्रकटावा सचखंड श्री दरबार के ग्रंथी सिंघ साहिब ज्ञानी बलविंदर सिंघ ने गुरुद्वारा श्री मंजी साहिब दीवान हाल में शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर द्वारा भक्त रविदास जी के जन्म दिवस को समर्पित समागम के समय संगत को सम्बोधन करते हुए किया।

उन्होंने कहा कि प्रो. किरपाल सिंघ बडूंगर, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के आदेशों के अनुसार शिरोमणि कमेटी द्वारा संगत के सहयोग से जहां गुरु साहिबान के प्रकाश पर्व, शहीदी पर्व मनाए जाते हैं, वहां जिन भक्त साहिबान की बाणी धन्य-धन्य श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज है, उनके दिवस भी गुरुद्वारा श्री मंजी साहिब, दीवान हाल में बड़ी श्रद्धा-भावना से मनाए जाते हैं। उन्होंने कहा कि भक्त रविदास जी ने सतिगुरु की कृपा के पात्र बनने की बात बाणी में की है। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी की संपादना के समय, धर्म, जात, बिरादरी के भेदभाव से ऊपर उठकर भक्त रविदास जी की बाणी के १६ रागों में ४० शबदों को धन्य-धन्य श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज करके उचित सम्मान दिया है। उन्होंने कहा कि प्रभु-भक्ति में अपना सारा जीवन व्यतीत करने वाले भक्त रविदास जी के जीवन से सबको प्रेरणा लेनी चाहिए।

इससे पूर्व गुरुद्वारा श्री मंजी साहिब दीवान हाल में श्री अखंड पाठ साहिब के भोग डाले गए तथा सचखंड श्री दरबार साहिब के हजूरी रागी भाई दविंदर सिंघ के जत्थे द्वारा इलाही बाणी के कीर्तन द्वारा संगत को निहाल किया और अरदास भाई सुलक्खण सिंघ ने की। इस मौके भाई सविंदर सिंघ के पंथक ढाडी जत्थे ने वीर रसी वारों द्वारा संगत को भक्त रविदास जी के जीवन से अवगत करवाया।

इस मौके पर शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, धर्म प्रचार कमेटी, सचखंड श्री दरबार साहिब का समूचा स्टॉफ व भारी मात्रा में संगत हाज़िर थी।